0२८ श्री पन्नवणा सूत्र के थोकडों के

प्रथम भाग की

विषयानुक्रमणिका

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	६	४२४५०	५२४५०
१५	६	७ अस्पाबोध	७ बोलों की अस्पाबोध
१७	२०	०	१
१७	२२	१	११
१७	२४	२	१२
१९	१३	(४)	+
१९	१४	१	४
१९	१७	२	५
१९	२१	३	६
१९	२३	४	७
२०	१	५	८
२०	३	६	९
२	५	७	१०
२३	२०	जोग १४-१४	जोग १५-१५
२५	५	जीव रा भेद २-२	जीव रा भेद २
२६	११	मति अज्ञानी	समुच्चय अज्ञानी मति अज्ञानी,
२६	१४	अस्पाबोध (अल्पबहुत्व)	ज्ञान अज्ञान दोनों री भेळी अस्पाबोध (अल्पबहुत्व)
३५	१२	आतो	अपजतो
३५	१३	आता	अपजता
४५	२	अपर्जापता	पर्जापता
४९	११	से ३-६	लेस्या ३-३
६३	८	द्रव्य थकी तुल्या,	द्रव्य थकी तुल्या भेरा थकी तुल्या,

श्री सेठिया जैन ग्रन्थमाला पुष्प नं० १२१

श्रीमान फतेलालजी श्रीचन्दजी गेलेड़ा
जयपुर वालों की ओर से भेंट ॥

श्री पन्नवणा सूत्र के थोकड़ों

का

प्रथम भाग

(पहले पद से दसवें पद तक)

प्रकाशक—
श्री अगरचन्द भैरोंदान सेठिया
जैन पारमार्थिक संस्था
बीकानेर (राजस्थान)

वीर संवत् २४७७
विक्रम संवत् २००८
ज्ञान पञ्चमी

मूल्य ॥)

प्रथमावृत्ति
१०००

श्री पन्नवणा सूत्र के थोकड़ों के

प्रथम भाग की

विषयानुक्रमणिका

संख्या नाम पृष्ठ

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	३	१२४५०	५२४५०
१५	६	७ अल्पाबोध	७ बोलों की अल्पाबोध
१७	२०	०	१०
१७	२२	१	११
१७	२४	२	१२
१६	१३	(४)	+
१६	१४	१	४
१६	१७	२	५
१६	२१	३	६
१६	२३	४	७
२०	१	५	८
२०	३	६	९
२०	५	७	१०
२१	२०	जोग १४-१६	जोग १५-१५
२५	५	जीव रा भेद २-२	जीव रा भेद २
२६	११	मति अज्ञानी	समुच्चय अज्ञानी, मति अज्ञानी,
२६	१४	अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)	ज्ञान अज्ञान दोनों री भेळी अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)
३५	१२	जातां	उपजतां
३५	१३	जातां	उपजतां
४५	२	अपर्याप्ता	पर्याप्ता
५२	११	से ६-६	लेश्या ३-३
६३	८	द्रव्य थकी तुल्या	द्रव्य थकी तुल्या, प्रदेश थकी तुल्या,

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६५	२४	श्रुत अज्ञान	श्रुत अज्ञान और अचक्षु दर्शन
७२	१८	२११८	२११८ अबाधा
८३	१७	चौठाण वडीया	दुल्ला
८५	५	चार ही गति रो	चार ही गति मे एक एक गति रो
८	२	आगत २ री	आगत ४ री
८८	२	(ऊपर ३ बड़ी लिखे में उरपुर ठस्यो)	(जलचर, संख्यात काल रो मनुष्य की वेद, पुरुष वेद नपुंसक वेद री)
८८	४	आगत २ री	आगत ३ री
९४	२	तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय,	सन्नी तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय,
९४	१०	मनुष्य,	सन्नी मनुष्य
९५	८	संख्यात	असंख्यात
९८	५	एक अचरम	एक एक अचरम
९८	१३	एक	एक एक
९८	२१	असमत्थगुणा	असमत्थगुणी

दो शब्द

जैनागमों में श्री भगवती सूत्र और पन्नवणा सूत्र का एक विशेष स्थान है। ये शास्त्र बड़े गहन हैं। इसलिए पूर्वाचार्यों ने इनको थोकड़े का रूप देकर भव्य जीवों पर महान् उपकार किया है। थोकड़े शास्त्रों की कुञ्जियाँ कहलाते हैं। थोकड़े सीख लेने पर शास्त्रों का गहन से गहन आशय भी सरलता से समझ में आ सकता है और थोड़ी बुद्धि वाला व्यक्ति भी इससे लाभ उठा सकते हैं। इसी भावना से प्रेरित होकर हमने पन्नवणा सूत्र के ३६ ही पदों के थोकड़े छपाने का विचार किया, किन्तु सभी पदों के थोकड़े उपलब्ध नहीं थे। अतः सेठ जीव जेठमल सेठिया ने इन थोकड़ों का संग्रह करना शुरू किया। हमारे अहोभाग्य से प्रातः स्मरणीय परम प्रतापी पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज साहब की सम्प्रदाय के सप्तम पट्टधर वर्तमान जैनाचार्य पण्डित रत्न पूज्य श्री गणेशीलालजी महाराज साहब के आज्ञानुवर्ती शास्त्रमर्मज्ञ पण्डित मुनि श्री पन्नालालजी म० सा० यहाँ विराजते हैं। आपको सैकड़ों थोकड़े आते हैं। इसी प्रकार बीकानेर श्रावक समाज में श्रीमान् हीराचन्दजी सा० सुखलेचा थोकड़ों के बड़े अच्छे ज्ञाता हैं। आपको भी सैकड़ों थोकड़े आते हैं। इन दोनों महानुभावों के कण्ठस्थ थोकड़ों में से पन्नवणा सूत्र के कई पदों के थोकड़े लिखे गये। इस प्रकार इस सूत्र के ३६ ही पदों के थोकड़े लिख कर लिपिबद्ध कर लिये गये। फिर उस कापी के आधार पर प्रेस कापी तय्यार करवाई गई। प्रेस कापी तय्यार हो जाने पर वह कापी फिर उपरोक्त मुनिश्री की नजर से निकलवाई गई। मुनिश्री ने बड़े ध्यानपूर्वक कापियों का अवलोकन किया और संशोधन करने योग्य स्थलों की सूचना की। तदनुसार उनका संशोधन कर दिया गया।

इस विषय में पण्डित मुनिश्री पन्नालालजी म० सा० ने जो परिश्रम उठाया है उसके लिए हम मुनिश्री के अत्यन्त आभारी हैं। इसी प्रकार श्रावकवर्य श्रीमान् हीरालालजी सा० मुकीम ने कई पाठों का मिलान की कृपा की है एतदर्थ हम उनका भी आभार मानते हैं।

चिरंजीव जेठमल सेठिया ने बड़ी लगन और रुचि के साथ परिश्रम पूर्वक इन थोकड़ों का संग्रह किया है। आशा है धार्मिक ज्ञान के प्रति उनकी जो लगन और रुचि है वह उत्तरोत्तर वृद्धिगत होगी जिससे समाज को ज्ञान का अधिकाधिक लाभ मिलता रहे।

आज कल थोकड़े सीखने की रुचि कम होती जा रही है और पन्नवणा सूत्र के सब थोकड़े एक पुस्तक में छपे हुए नहीं मिलते हैं। इसलिए हमने इस सूत्र के सब पदों के थोकड़ों को छपवाने का निश्चय किया है जिसका यह प्रथम भाग प्रकाशित हो रहा है। आगे क्रमशः इसके और भाग भी प्रकाशित होते जायेंगे। आशा है जैन समाज इन थोकड़ों से लाभ उठायेगी।

प्रूफ संशोधन आदि की पूर्ण सावधानी रखते हुए भी दृष्टिदोष से कुछ अशुद्धियां रह गई हैं जिनके लिये इसमें शुद्धिपत्र दे दिया गया है। इनके अतिरिक्त और कोई अशुद्धि नजर आवे तो हमें सूचित करने की कृपा करें ताकि आगामी आवृत्ति में उचित संशोधन कर दिया जाय।

निवेदक
भैरोदान सेठिया

श्रीमान कनैयालालजी भीखमजी गेमेलिया
जयपुर वालों की ओर से भेंट ॥

श्री पन्नवणा सूत्र के थोकड़ों का संग्रह

सूत्र श्री पन्नवणाजी के पहले पद में आरज रो थोकड़ो चाले सो कहे छै —

१— अहो भगवान् ! आरज किता प्रकार रा ?
हे गौतम ! आरज २ प्रकार रा ऋद्धिपत्ता आरज अऋद्धिपत्ता आरज ।

२— अहो भगवान् ! ऋद्धिपत्ता आरज किता प्रकार रा ?
हे गौतम ! ६ प्रकार रा — १ तीर्थंकर २ चक्रवर्ती ३ बलदेव ४ वासुदेव ५ जंघाचारण ६ विद्याचारण ।

३— अहो भगवान् ! अऋद्धिपत्ता आरज किता प्रकार रा ?
हे गौतम ! ९ प्रकार रा — १ क्षेत्र आरज २ जाति आरज ३ कुल आरज ४ कर्म आरज ५ शिल्प आरज ६ भाषा आरज ७ ज्ञान आरज ८ दर्शन आरज ९ चारित्र आरज ।

४— अहो भगवान् ! क्षेत्र आरज किता प्रकार रा ?
हे गौतम ! भरत क्षेत्र में ३२००० देश है जिण में २५॥ देश आरज, ३१९७४॥ देश अनारज ।

५— अहो भगवान् ! २५॥ आरज देश रा नाम तथा देश री संख्या कितनी ?

६८०५०० गांव । २१ शूरसेन देश मथुरा नगरी, ८००० गांव २२ भग देश अपापापुरी नगरी ३६००० गांव । २३ पुरावत देश, मासापुरी नगरी २२४५० गाव । २४ कुणाल देश, सावत्था नगरी ६३००० गांव । २५ ल्हाट देश, काटघर्या नगरी ७१३००० गांव । २५॥ आधो कैकय देश श्वेतांबिका नगरी १२५००० गांव आरज १२५००० गांव अनारज । सब मिला कर २५८०००० गांव जिया में सुं ७००० गांव खालसे ।

६— अहो भगवान् ! जाति आरज किता प्रकार रा ?
हे गौतम ! ६ प्रकार रा— १ अंबष्ठ २ कलिंदा ३ विदेह ४ वेदगाइया ५ हरिया ६ चुंचुणा ।

७— अहो भगवान् ! कुल आरज किता प्रकार रा ?
हे गौतम ! ६ प्रकार रा— १ उग्रकुल २ भोगकुल ३ राजकुल ४ क्षत्रियकुल, ५ इक्षागकुल, ६ कौरवकुल ।

८— अहो भगवान् ! कर्म आरज किता प्रकार रा ?
हे गौतम ! अनेक प्रकार रा— कपड़े रो व्यापार सूत रो व्यापार सोना चांदी रो व्यापार हीरा माणक, मोती जवाहरात रो व्यापार आददेई अनेक भेद जाणवा ।

९— अहो भगवान् ! शिल्प आरज किता प्रकार रा ?
हे गौतम ! अनेक प्रकार रा — कपड़ा वुणने रा विज्ञान, पाथी लिखवा रा विज्ञान चित्राम चितरवा रा विज्ञान आदि अनेक भेद जाणवा ।

१०— अहो भगवान् ! भाषा आरज कने कहीजे ?
हे गौतम ! १८ लिपि सहित अर्द्धमागधी भाषा बोले लिखे ने भाष्य आरज कहीजे ।

११— अहो भगवान् ! ज्ञान आरज किता प्रकार रा ?

हे गौतम ! ५ प्रकार रा— १ मतिज्ञान आरज २ श्रुतज्ञान आरज ३ अवधिज्ञान आरज ४ मनःपर्यव ज्ञान आरज, ५ केवलज्ञान आरज ।

- अहो भगवान् ! दर्शन आरज किता प्रकार रा ?
हे गौतम ! २ प्रकार रा— १ सरागदर्शन आरज २ वीतराग दर्शन आरज । अहो भगवान् ! सराग दर्शन आरज किता प्रकार रा ? हे गौतम ! १८ प्रकार रा— १० रुचि ८ आचार । १० रुचि रा नाम— १ निसग्ग रुचि (निसर्ग रुचि)— जाति स्मरण आदि ज्ञान उपजण सूं समकित री रुचि उपजे । २ उपदेश रुचि— उपदेश सुणतां सुणतां समकित री रुचि उपजे । ३ आज्ञारुचि— तीर्थंकर महाराज, गुरु महाराज री आज्ञापालन करतां थकां समकित री रुचि उपजे । ४ सूत्ररुचि—सूत्र सुणतां सुणतां समकित री रुचि उपजे । ५ बीजरुचि— थोड़ा सीख्यां धर्म परगमे पाणी में तेल बिन्दु रे न्याय । ६ अभिगमरुचि— ग्यारह अंग बारह उपांग भणतां भणतां समकित री रुचि उपजे । ७ विस्तार रुचि— सात नय, चार निक्षेप इत्यादि विस्तार सहित सीखतां सीखतां समकित री रुचि उपजे । ८ क्रियारुचि क्रिया करतां करतां समकित री रुचि उपजे । ९ संक्षेप रुचि— कदाग्रह कोई नहीं सरल परिणाम हुवां समकित री रुचि उपजे । १० धर्मरुचि— सूत्र चारित्र धर्म करतां करतां धर्म री रुचि उपजे । आचार आठ— १ निःशंकित— कहतां श्री जिन मार्ग में शंका राखे नहीं । २ निःकांक्षित— कहतां परमत री वांछा करे नहीं । ३ निर्विचिकित्सा- कहतां फलप्राप्ति में सन्देह लावे नहीं । ४ अमूढ दृष्टि— कहतां परपाखण्डी री प्रशंसा सुणी न मुरझावे नहीं अज्ञ तपस्वी रा अतिशय देखी ने मूढ़पणा करे नहीं । ५ उववूह- कहतां समकितरो पालन तथा ब्रह्मचर्य दीपावे । ६ स्थिरीकरण— कहतां उन्मार्ग में डिगतां प्राणी ने स्थिर करे । ७ वात्सल्यता—

कहतां जैनमाग में यथावत्ता गम्य । ८ प्रभावना— कहतां जैनमग री प्रभावना कर ।

अहो भगवान् ! वीतराग दर्शन आराध किता प्रकार रा ?

हे गौतम ! २ प्रकार रा— उपशान्त कषाय वीतराग दर्शन आराध क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आराध ।

अहो भगवान् ! उपशान्त कषाय वीतराग दर्शन आराध किता प्रकार रा ? हे गौतम ! ४ प्रकार रा—

प्रथम समय रा	उपशान्त	कषाय	वीतराग	दर्शन	आराध
अप्रथम समय रा	"	"	"	"	"
चरम समय रा	"	"	"		"
अचरम समय रा	"	"		"	

अहो भगवान् ! क्षीण कषाय वीतराग दर्शन आराध किता प्रकार रा ? हे गौतम ! ४ प्रकार रा—

प्रथम समय रा	क्षीण	कषाय	वीतराग दर्शन आराध	
अप्रथम समय रा	"		"	
चरम समय रा	"	"	"	"
अचरम समय रा	"	"	"	

१३- अहो भगवान् ! चारित्र आराध किता प्रकार रा ?

हे गौतम ! ५ प्रकार रा— १ सामायिक चारित्र आराध २ छेदोप स्थापनीय चारित्र आराध ३ परिहार विशुद्ध चारित्र आराध ४ सूक्ष्म सम्पराय चारित्र आराध ५ यथाख्यात चारित्र आराध ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

— बादर पृथ्वीकाय और अप्काय रा पर्याप्ता ताया ? १ बायर
रा पर्याप्ता और अपर्याप्ता उत्पात समुद्घात स्वस्थान लोक र
असंख्यातवे भाग मर्थ मनुष्य केवली समुद्घात आसरी सर्व
लोक।   सर्व भव ! सर्व भव ॥

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद तीजे म देमाणुवाइ रा

थोकड़ा चाले सा कहे है —

१८ द्रव्य दिशा— पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण ईशान कूण
नैऋत्य कूण अग्नि कूण वायु कूण, इण ८ रा आंतरा और विमला
(ऊर्ध्व दिशा) तमा (नीची दिशा)। १८ भाव दिशा— पृथ्वीकाय,
अप्काय, तेउकाय वायुकाय वनस्पतिकाय रा ४ भेद (अग्रबीया मूल
बीया पोरबीया स्कंधबीया)। बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय
कर्मभूमि, अकर्मभूमि अन्तरद्वीपा सम्मूर्च्छिम मनुष्य, नारकी देवता।

अहो भगवान ! ७ बोलों रा जीव (समुच्चय जीव वनस्पतिकाय,
अप्काय बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय) किस दिशा में
घणा और किस दिशा म थोड़ा ? हे गौतम ! सब सु थोड़ा पश्चिम
दिशा में। ते किम् भगवान ! हे गौतम ! पश्चिम दिशा म लवण समुद्र
में १००० योजन रा गौतम द्वीपा है जिण सु अप्काय थोड़ा सात
बोलों रा जीव थोड़ा। ते थकी पूर्व दिशा विसेसाहिया। ते किम्
भगवान् ! पूर्व दिशा में गौतम द्वीपा नहीं जिण सु विसेसाहिया। ते
थकी दक्षिण दिशा विसेसाहिया। ते किम् भगवान् ? चन्द्रमा सूर्य रा
द्वीपा नहीं। ते थकी उत्तर दिशा विसेसाहिया। ते किम् भगवान ?
असंख्यात द्वीप समुद्र आगे जाय जद अरुणावर नाम रो द्वीप आवे ए
उस द्वीप र अन्दर मानसरोवर नाम रो सरोवर आय संख्याता क्रोड़ान
क्रोड़ योजन रा लम्बा चौड़ा है जिण सु अप्काय घणी ७ बोलों रा जीव
घणा।

ते किम् भगवान् ? पूर्व दिशा में पूर्व महाविदेह क्षेत्र बड़ो जिके सूं मनुष्य घणा, मनुष्य रा वासा घणा बादर तेउकाय घणी, सिद्ध भगवानजी सीमे घणा ते भणी संख्यातगुणा। ते थकी पश्चिम दिशा विसेसाहिया। ते किम् भगवान् ? पश्चिम दिशा में सलिलावती विजय १००० योजन री ऊंडी तिरछी है जठे मनुष्य घणा, मनुष्यों रा वासा घणा, बादर तेउकाय घणी, सिद्ध भगवान्जी सीमे घणा।

५– अहो भगवान्! भवनपति देवता, भवनपतियों री देवी किसी दिशा घणा, किसी दिशा थोड़ा ? हे गौतम! सब सूं थोड़ा पूर्व ने पश्चिम। ते किम् भगवान् ? पूर्व ने पश्चिम में भवनपतियों रा भवन नथी। आणा जाणो है जिके सूं थोड़ा। ते थकी उत्तर दिशा असंख्यात गुणा। ते किम् भगवान् ? उत्तर दिशा में भवनपतियों रा ३६६० ०० भवन है जिके सूं असंख्यातगुणा। ते थकी दक्षिण दिशा असंख्यातगुणा। ते किम् भगवान् ? दक्षिण दिशा में भवनपतियों रा ४०६००००० भवन है तथा कृष्ण पक्षी उपजे घणा जिके सूं असंख्यातगुणा।

६– अहो भगवान्! ज्योतिषी देवता किसी दिशा घणा, किसी दिशा थोड़ा ? हे गौतम! सब सूं थोड़ा पूर्व पश्चिम। ते किम् भगवान् ? चन्द्रमा सूर्य रा द्वीपा है जिके सूं ज्योतिषी देवता थोड़ा है। ते थकी दक्षिण दिशा विसेसाहिया। ते किम् भगवान् ? चन्द्रमा सूर्य रा द्वीपा नथी। जीव उपजे घणा जिके सू ज्योतिषी देवता अधिका। ते थकी उत्तर दिशा विसेसाहिया। ते किम् भगवान् ? असंख्याता द्वीप समुद्र आगे जाय जद अरुणवर द्वीप आवे तिके में मानसरोवर नाम रो सरवर संख्याता कोड़ाकोड़ योजन रो लम्बो चौड़ो है जिके रे रत्नों री पाल है उठ घणा ज्योतिषी देवता स्नान मंजन क्रीड़ा कौतूहल करण ने आवे जिको ने देख रा तिर्यंच दकी न जातिसमरण ज्ञान उत्पन्न हाणे सूं करणी कर। न नियाणो कर जिके सूं ज्योतिषी देवता में उपजे ते भणी विसेसाहिया।

७– अहो भगवान्! पहले दूजे, तीजे, चौथे देवलोक रा देवता

किसी दिशा घणा किसी दिशा थोड़ा ? हे गौतम ! सब सूं थोड़ा पूर्व पश्चिम दिशा। ते किम् भगवान् ? पंक्तिबन्ध विमान तो तुल्य, पुष्पावकरणी विमान थोड़ा। ते थकी उत्तर दिशा असंख्यातगुणा। ते किम् भगवान् ? पंक्तिबन्ध विमान तुल्य पुष्पावकरणी घणा। ते थकी दक्षिण दिशा विशेषाहिया। ते किम् भगवान् ? पंक्तिबन्ध विमान तो तुल्य पुष्पावकरणी विमान घणा तथा कृष्णपक्षी उपजे घणा।

८– अहो भगवान् ! पांचवें छठे सातवें और आठवें देवलोक रा देवता किसी दिशा घणा, किसी दिशा थोड़ा ? हे गौतम ! सब सूं थोड़ा पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा। ते किम् भगवान् ? पंक्तिबन्ध विमान तो तुल्य पुष्पावकरणी विमान थोड़ा। ते थकी दक्षिण दिशा असंख्यातगुणा। ते किम् भगवान् ? हे गौतम ! पंक्तिबन्ध विमान तुल्य पुष्पावकरणी विमान घणा तथा कृष्ण पक्षी उपजे घणा।

९– अहो भगवान् ! नवमे सूं लेकर सर्वार्थसिद्ध विमान तक किसी दिशा घणा, किसी दिशा थोड़ा ? हे गौतम ! चारों दिशा तुल्य।

१०– अहो भगवान् ! पहली नारकी सूं सातवीं नारकी रा नेरिया किसी दिशा घणा किसी दिशा थोड़ा ? हे गौतम ! पहली नारकी रा नेरीया सब सूं थोड़ा पूर्व पश्चिम उत्तर। ते थकी दक्षिण दिशा असंख्यातगुणा। इसी तरह दूजी सूं जाव सातवीं नारकी तक कह देणा।

११– अहो भगवान् ! पहली नारकी सूं सातवीं नारकी रा नेरीया किसी दिशा घणा, किसी दिशा थोड़ा ? हे गौतम ! सब सूं थोड़ा सातवीं नारकी रा नेरीया पूर्व पश्चिम, उत्तर। ते थकी दक्षिण दिशा असंख्यात गुणा। सातवीं नारकी रे दक्षिण दिशा सूं छठी नारकी रा पूर्व, पश्चिम, उत्तर दिशा रा असंख्यातगुणा। ते थकी दक्षिण दिशा असंख्यातगुणा। इसी तरह जाव पहली नारकी तक कह देणा।

१२– अहो भगवान् ! पहली नारकी जाव सातवीं नारकी रा नेरीया

केरा घणा केरा थोड़ा ? हे गौतम ! सब सूं थोड़ा सातवीं नारकी रा नेरीया। ते थकी छठी नारकी रा नेरीया असंख्यातगुणा। आव पहली नारकी तक असंख्यात गुणा कह देणा।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद ३ में गइ इंदिय काया री ५८ अल्पाबोघ (अल्प बहुत्व) चाले सो कहे छे—

गति री २, इन्द्रिय री १० और काया री ४६, कुल ५८।

गति री २ अल्पाबोघ—

१— सब सूं थोड़ा मनुष्य गतिया। २ ते थकी नरक गतिया असंख्यात गुणा। ३ ते थकी देव गतिया असंख्यातगुणा। ४ ते थकी सिद्ध गतिया अनन्तगुणा। ५ ते थकी तिर्यञ्च गतिया अनन्तगुणा।

२— १ सब सूं थोड़ी मनुष्यणी। २ ते थकी मनुष्य असंख्यातगुणा। ३ ते थकी नारकी रा नेरीया असंख्यातगुणा। ४ ते थकी तिर्यञ्चणी असंख्यातगुणी। ५ ते थकी देवता असंख्यातगुणा। ~~ते थकी सिद्ध भगवान् अनन्तगुणा।~~ ६ ते थकी देवांगना संख्यातगुणी। ७ ते थकी सिद्ध भगवान् अनन्तगुणा। ८ ते थकी तिर्यञ्च अनन्तगुणा।

इन्द्रिय री १० अल्पाबोघ (अल्प बहुत्व)—

१— ७ बोलों री समुच्चय अल्पाबोघ (अल्पबहुत्व)— १ सब सूं थोड़ा पंचेन्द्रिय। २ ते थकी चौइन्द्रिय विसेसाहिया। ३ ते थकी तेइन्द्रिय विसेसाहिया। ४ ते थकी बेइन्द्रिय विसेसाहिया। ५ ते थकी अनिन्द्रिय अनन्तगुणा। ६ ते थकी एकेन्द्रिय अनन्तगुणा। ७ ते थकी सइन्द्रिय विसेसाहिया।

२— ६ बोलों री अपजापता री अल्पाबोघ— १ सब सूं थोड़ा पंचेन्द्रिय रा अपजापता। २ ते थकी चौइन्द्रिय रा अपजापता विसेसाहिया।

३ ते थकी तेइन्द्रिय रा अपर्जापता विसेसाहिया । ४ ते थकी बेइन्द्रिय रा अपर्जापता विसेसाहिया । ५ तें थकी एकेन्द्रिय रा अपर्जापता अनन्तगुणा । ६ ते थकी सइन्द्रिय रा अपजापता विसेसाहिया ।

३— ६ वालां री पर्जापतां री अल्पाबोध— १ सब सुं थोड़ा चौइन्द्रिय रा पर्जापता । २ ते थकी पंचेन्द्रिय रा पर्जापता विसेसाहिया । ३ ते थकी बेइन्द्रिय रा पर्जापता विसेसाहिया । ४ त थकी तेइन्द्रिय रा पजापता विसेसाहिया । ५ त थकी एकेन्द्रिय रा पर्जापता अनन्त-गुणा । ६ ते थकी सइन्द्रिय रा पजापता विसेसाहिया ।

४— १– सब सु थोड़ा सइन्द्रिय रा अपर्जापता । २ ते थकी सइन्द्रिय रा पर्जापता सख्यातगुणा ।

५— १– सब सु थोड़ा एकेन्द्रिय रा अपर्जापता । २ ते थकी एकेन्द्रिय रा पर्जापता संख्यात गुणा ।

६— १– सब सु थोड़ा बेइन्द्रिय रा पर्जापता । २ ते थकी बेइन्द्रिय रा अपर्जापता असंख्यात गुणा ।

७— १– सब सु थोड़ा तेइन्द्रिय रा पर्जापता । २ त थकी तेइन्द्रिय रा अपर्जापता असंख्यात गुणा ।

८— १– सब सुं थोड़ा चौइन्द्रिय रा पर्जापता । २ त थकी चौइन्द्रिय रा अपर्जापता असख्यात गुणा ।

९— १– सब सु थोड़ा पंचेन्द्रिय रा पर्जापता । २ त थको पंचेन्द्रिय रा अपर्जापता असख्यात गुणा ।

१०— सब सु थोड़ा चौइन्द्रिय रा पजापता । २ त थकी पंचेन्द्रिय रा पर्जापता विसेसाहिया । ३ त थकी बेइन्द्रिय रा पर्जापता विससाहिया । ४ त थकी तइन्द्रिय रा पर्जापता विससाहिया । ५ ते थकी पचन्द्रिय रा अपर्जापता असख्यात गुणा । ६ त थकी चौइन्द्रिय रा अपर्जापता विससाहिया । ७ त थकी तइन्द्रिय रा अपर्जापता

विसेसाहिया। ८ ते थकी सइन्द्रिय रा अपर्जापता विसेसाहिया। ९ ते थकी एकेन्द्रिय रा अपर्जापता अनन्तगुणा। १० ते थकी सइन्द्रिय रा अपर्जापता विसेसाहिया। ११ ते थकी एकेन्द्रिय रा पर्जापता संख्यातगुणा। १२ ते थकी सइन्द्रिय रा पजापता विसेसाहिया।

काया री ४६ अल्पाबोध —

त्रस थावर री ११ सूक्ष्म री ११ बादर री १३ और सूक्ष्म व दर री भेली ११ कुल ४६।

त्रस थावर री ११ अल्पाबोध। पहली अल्पाबोध ८ बालों री—

१— १– सब सु थोड़ा त्रसकाइया। २ ते थकी तेउकाइया असंख्यात गुणा। ३ ते थकी पृथ्वीकाइया विसेसाहिया। ४ ते थकी अपकाइया विसेसाहिया। ५ ते थकी वायुकाइया विसेसाहिया। ६ ते थकी अकाइया अनन्तगुणा। ७ ते थकी वनस्पति काइया अनन्त गुणा। ८ ते थकी सकाइया विसेसाहिया।

— ७ बोल अपर्जापतों री अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)— १ सब सु थोड़ा त्रसकाय रा अपर्जापता। २ ते थकी तेउकाय रा अपर्जापता असंख्यातगुणा। ३ ते थकी पृथ्वीकाय रा अपर्जापता विसेसाहिया। ४ ते थकी अपकाय रा अपर्जापता विसेसाहिया। ५ ते थकी वायु काय रा अपर्जापता विसेसाहिया। ६ ते थकी वनस्पतिकाय रा अपर्जापता अनन्तगुणा। ७ ते थकी सकाइया रा अपर्जापता विसेसाहिया।

३— ७ बोल पर्जापतों री अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)— पर्जापतों रा ७ बोल अपर्जापतों री माफिक कह देणा।

४— दो दो बोलों री अल्पाबोध (अल्पबहुत्व) १– सब सु थोड़ा त्रसकाय रा पर्जापता। २ ते थकी त्रसकाय रा अपर्जापता असंख्यात गुणा।

५— १- सब सु थोड़ा तेउकाय रा अपर्जापता । २ ते थकी तेउकाय रा पर्जापता संख्यातगुणा ।

६— १ सब सु थोड़ा पृथ्वीकाय रा अपर्जापता । २ ते थकी पृथ्वीकाय रा पर्जापता संख्यात गुणा ।

७— १ सब सु थोड़ा अप्काय रा अपर्जापता । २ ते थकी अप्काय रा पर्जापता सख्यात गुणा ।

८— १- सब सु थोड़ा वाउकाय रा अपर्जापता । २ ते थकी वाउकाय रा पर्जापता संख्यात गुणा ।

९— १- सब सु थोड़ा वनस्पति काय रा अपर्जापता । २ ते थकी वनस्पति काय रा पर्जापता संख्यात गुणा ।

१०— १- सब सु थोड़ा सकाइया रा अपर्जापता । २ ते थकी सकाइया रा पर्जापता संख्यात गुणा ।

११- समुच्चय अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)—– १४ बोलों री—– १- सब सु थोड़ा त्रस काय रा पर्जापता । २ ते थकी त्रस काय रा अपर्जापता असंख्यात गुणा । ३ ते थकी तेउकाय रा अपर्जापता असंख्यात गुणा । ४ ते थकी पृथ्वीकाय रा अपर्जापता विसेसाहिया । ५ ते थकी अप्काय रा अपर्जापता विसेसाहिया । ६ ते थकी वाउकाय रा अपर्जापता विसेसाहिया । ७ ते थकी तेउकाय रा पर्जापता सख्यातगुणा । ८ ते थकी पृथ्वीकाय रा पर्जापता विसेसाहिया । ९ ते थकी अप्काय रा पर्जापता विसेसाहिया । १० ते थकी वाउकाय रा पर्जापता विसेसाहिया । ११ ते थकी वनस्पतिकाय रा अपर्जापता अनन्तगुणा । १२ ते थकी सकाय रा अपर्जापता विसेसाहिया । १३ ते थकी वनस्पतिकाय रा पर्जापता संख्यात गुणा । १४ ते थकी सकाय रा पर्जापता विसेसाहिया ।

सूक्ष्म री ११ अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)—

१— पहली अल्पाबोध ७ बोलों री—

१- सब सु थोड़ा सूक्ष्म तेउकाइया । २ ते थकी सूक्ष्म पृथ्वी काइया विसेसाहिया । ३ ते थकी सूक्ष्म अप्पकाइया विसेसाहिया । ४ ते थकी सूक्ष्म वायुकाइया विसेसाहिया । ५ ते थकी सूक्ष्म निगोद असंख्यात गुणा । ६ ते थकी सूक्ष्म वनस्पतिकाइया अनन्त गुणा । ७ ते थकी समुच्चय सूक्ष्म विसेसाहिया ।

२— अपर्जापतों री ७ बोलों री अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)— सूक्ष्म रा अपर्जापतों री ७ अल्पाबोध समुच्चय री पहला बोल में कही उसी तरह सु कह देणी मगर अपर्जापता शब्द बोल देणो ।

३— तीजे बोल ७ पर्जापतों री अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)— सूक्ष्म रे पर्जापतों री ७ अल्पाबोध समुच्चय (१ बोल में) री कही जसी तरह बोल देणी मगर पर्जापता शब्द बोल देणो ।

४— दो दो बोलों री ७ अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)—१ सब सु थोड़ा सूक्ष्म तेउकाय रा अपर्जापता । २ ते थकी पर्जापता संख्यात गुणा ।

५— १- सब सुं थोड़ा सूक्ष्म पृथ्वीकाय रा अपर्जापता । २ ते थकी पर्जापता संख्यातगुणा ।

६— १- सब सु थोड़ा सूक्ष्म अप्पकाय रा अपर्जापता । २ ते थकी पर्जापता संख्यातगुणा ।

७— १- सब सु थोड़ा सूक्ष्म वायुकाय रा अपर्जापता । २ ते थकी पर्जापता संख्यातगुणा ।

८— १- सब सु थोड़ा सूक्ष्म निगोद रा अपर्जापता । २ ते थकी पर्जापता संख्यात गुणा ।

९— १— सब सु थोड़ा सूक्ष्म वनस्पतिकाय रा अपर्याप्ता । २ ते थकी पर्याप्ता संख्यातगुणा ।

१०— सब सुं थोड़ा समुच्चय सूक्ष्म रा अपर्याप्ता । २ ते थकी पर्याप्ता संख्यात गुणा ।

११— समुच्चय अल्पाबोध (अल्पबहुत्व) १४ बोलों री—

१— सब सु थोड़ा सूक्ष्म तेउकाय रा अपर्याप्ता । २ ते थकी सूक्ष्म पृथ्वीकाय रा अपर्याप्ता विसेसाहिया । ३ ते थकी सूक्ष्म अप्काय रा अपर्याप्ता विसेसाहिया । ४ ते थकी सूक्ष्म वायुकाय रा अपर्याप्ता विसेसाहिया । ५ ते थकी सूक्ष्म तेउकाय रा पर्याप्ता संख्यात गुणा । ६ ते थकी सूक्ष्म पृथ्वीकाय रा पर्याप्ता विसेसाहिया । ७ ते थकी सूक्ष्म अप्काय रा पर्याप्ता विसेसाहिया । ८ ते थकी सूक्ष्म वायुकाय रा पर्याप्ता विसेसाहिया । ९ ते थकी सूक्ष्म निगोद रा अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । १० ते थकी सूक्ष्म निगोद रा पर्याप्ता संख्यातगुणा । ११ ते थकी सूक्ष्म वनस्पतिकाय रा अपर्याप्ता अनन्तगुणा । १२ ते थकी समुच्चय सूक्ष्म रा अपर्याप्ता विसेसाहिया । १३ ते थकी सूक्ष्म वनस्पतिकाय रा पर्याप्ता संख्यातगुणा । १४ ते थकी समुच्चय सूक्ष्म रा पर्याप्ता विसेसाहिया ।

बादर री १३ अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)—

१— पहली ८ बोलों री अल्पाबोध— १ सब सू थोड़ा बादर त्रसकाइया । २ ते थकी बादर तेउकाइया असंख्यातगुणा । ३ ते थकी प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाइया असंख्यातगुणा । ४ ते थकी बादर निगोद असंख्यातगुणा । ५ ते थकी बादर पृथ्वीकाइया असंख्यातगुणा । ६ ते थकी बादर अप्काय असंख्यातगुणा । ७ ते थकी बादर वायुकाइया असंख्यातगुणा । ८ ते थकी बादर वनस्पति

काइम अनन्त गुणा। ६ ते थकी समुच्चय बादर विशेषाहिया।

२— दूजी ६ बोलों री अपर्जापतों री अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)—
बादर र अपर्जापता बोल ६ री समुच्चय बादर माफक कह दणी।

३— तीजी ६ बोलों री पर्जापतां री अल्पाबोध— १ सब सूं थोड़ा बादर तेउकाय रा पर्जापता। २ ते थकी त्रसकाय रा पर्जापता असंख्यात गुणा। बाकी ३ से ६ बोल तक समुच्चय बादर माफक कह दणा।

दो दो बोलों री ६ अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

४— १ सब सूं थोड़ा समुच्चय बादर रा पर्जापता। २ ते थकी अपर्जापता असंख्यात गुणा।

५— १ सब सूं थोड़ा बादर पृथ्वीकाय रा पर्जापता। २ ते थकी अपर्जापता असंख्यात गुणा।

६— १ सब सूं थोड़ा बादर अप्काय रा पर्जापता। २ ते थकी अपर्जापता असंख्यात गुणा।

७— १ सब सूं थोड़ा बादर तेउकाय रा पर्जापता। २ ते थकी अपर्जापता असंख्यात गुणा।

८— १ सब सूं थोड़ा बादर वायुकाय रा पर्जापता। २ ते थकी अपर्जापता असंख्यात गुणा।

९— १ सब सूं थोड़ा बादर वनस्पतिकाय रा पर्जापता। ते थकी अपर्जापता असंख्यात गुणा।

१०— १ सब सूं थोड़ा प्रत्यक शरीरी वनस्पतिकाय रा पर्जापता। २ ते थकी अपर्जापता असंख्यात गुणा।

११— १ सब सूं थोड़ा प्रत्यक निगोद रा पर्जापता। २ ते थकी अपर्जापता असंख्यात गुणा।

१२— १ सब सूं थोड़ा त्रसकाय रा पर्जापता। २ ते थकी अपर्जापता असंख्यात गुणा।

१३—समुच्चय अल्पाबोध १६ बोलां री—

१ सब सूं थोड़ा बादर तेउकाय रा पर्याप्ता। २ ते थकी बादर त्रसकाय रा पर्याप्ता असंख्यात गुणा। ३ ते थकी बादर त्रसकाय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। ४ ते थकी प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय रा पर्याप्ता असंख्यात गुणा। ५ ते थकी बादर निगोद रा पर्याप्ता असंख्यात गुणा। ६ ते थकी बादर पृथ्वीकाय रा पर्याप्ता असंख्यात गुणा। ७ ते थकी बादर अप्काय रा पर्याप्ता असंख्यात गुणा। ८ ते थकी बादर वायुकाय रा पर्याप्ता असंख्यात गुणा। ९ ते थकी बादर तेउकाय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। १० ते थकी प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। ११ ते थकी बादर निगोद रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। १२ ते थकी बादर पृथ्वीकाय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। १३ ते थकी बादर अप्काय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। १४ ते थकी बादर वायुकाय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। १५ ते थकी बादर वनस्पतिकाय रा पर्याप्ता अनन्त गुणा। १६ ते थकी बादर रा पर्याप्ता विसेसाहिया। १७ ते थकी बादर वनस्पतिकाय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। १८ ते थकी बादर रा अपर्याप्ता विसेसाहिया। १९ ते थकी समुच्चय बादर विसेसाहिया।

सूक्ष्म बादर री भेली ११ अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)—

१—१ सब सूं थोड़ा बादर त्रसकाय। २ ते थकी बादर तेउकाय असंख्यात गुणा। ३ ते थकी प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय असंख्यात गुणा। ४ ते थकी बादर निगोद असंख्यात गुणा। ५ ते थकी बादर पृथ्वीकाय असंख्यात गुणा। ६ ते थकी बादर अप्काय असंख्यात गुणा। ७ ते थकी बादर वायुकाय असंख्यात गुणा। ८ ते थकी सूक्ष्म तेउकाय असंख्यात गुणा। ९ ते थकी सूक्ष्म पृथ्वीकाय

विसेसाहिया। १० ते थकी सूक्ष्म अप्काय विसेसाहिया। ११ ते थकी सूक्ष्म वायुकाय विसेसाहिया। १२ ते थकी सूक्ष्म निगोद असंख्यात गुणा। १३ ते थकी बादर वनस्पति अनन्त गुणा। १४ ते थकी समुच्चय बादर विसेसाहिया। १५ ते थकी सूक्ष्म वनस्पति असंख्यात गुणा। १६ ते थकी समुच्चय सूक्ष्म विसेसाहिया।

(२) दूजो १६ बोलों री अपजापतों री अल्पाबोध —

सूक्ष्म बादर री भेली अपजापतों री समुच्चय सूक्ष्म बादर माफक कह देणी।

(३) तीजो १६ बोलों री पजापतों री अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

सूक्ष्म बादर री भेली पर्जापतों री समुच्चय सूक्ष्म बादर माफक कह देणी। मगर इतलो विशेष बादर तेऊकाय रा पर्जापता पहिला कहणा। ते थकी बादर त्रसकाय रा पर्जापता असंख्यात गुणा पीछे कहणा।

(४) चार चार बोलों री ७ अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१— सब सूं थोड़ा बादर रा पजापता। २ ते थकी बादर रा अपजापता असंख्यात गुणा। ३ ते थकी सूक्ष्म रा अपजापता असंख्यात गुणा। ४ ते थकी सूक्ष्म रा पजापता संख्यात गुणा।

२— १ सब सूं थोड़ा बादर पृथ्वीकाय रा पजापता। २ ते थकी बादर पृथ्वीकाय रा अपजापता असंख्यात गुणा। ३ ते थकी सूक्ष्म पृथ्वी काय रा अपजापता असंख्यात गुणा। ४ ते थकी सूक्ष्म पृथ्वीकाय रा पजापता संख्यात गुणा।

३— पृथ्वीकाय कही इसी तरह सूं ४ बोलों री अल्पाबोध अप्काय री कह देणी।

४— पृथ्वीकाय कही इसी तरह सूं ४ बोलों री अल्पाबोध तेऊकाय री कह देणी।

५— पृथ्वीकाय कही उसी तरह सूं ४ बोलों री अल्पाबहुत्व वायुकाय री कह देणी।

६— पृथ्वीकाय कही उसी तरह सूं ४ बोलों री अल्पाबहुत्व वनस्पतिकाय री कह देणी।

७— पृथ्वीकाय कही उसी तरह सूं ४ बोलों री अल्पाबहुत्व निगोद री कह देणी।

(११) समुच्चय अल्पाबोध (अल्प बहुत्व) ३४ बोलों री—

१— सब सूं थोड़ा बादर तेउकाय रा पर्यापता।
२— ते थकी बादर त्रसकाय रा पर्यापता असंख्यात गुणा।
३— ते थकी बादर त्रसकाय रा अपर्यापता असंख्यात गुणा।
४— ते थकी प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय रा पर्यापता असंख्यात गुणा।
५— ते थकी बादर निगोद रा पर्यापता असंख्यात गुणा।
६— ते थकी बादर पृथ्वीकाय रा पर्यापता असंख्यात गुणा।
७— ते थकी बादर अप्काय रा पर्यापता असंख्यात गुणा।
८— ते थकी बादर वायुकाय रा पर्यापता असंख्यात गुणा।
९— ते थकी बादर तेउकाय रा अपर्यापता असंख्यात गुणा।
१०— ते थकी प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय रा अपर्यापता असंख्यात गुणा।
११— ते थकी बादर निगोद रा अपर्यापता असंख्यात गुणा।
१२— ते थकी बादर पृथ्वीकाय रा अपर्यापता असंख्यात गुणा।
१३— ते थकी बादर अप्काय रा अपर्यापता असंख्यात गुणा।
१४— ते थकी बादर वायुकाय रा अपर्यापता असंख्यात गुणा।
१५— ते थकी सूक्ष्म तेउकाय रा अपर्यापता असंख्यात गुणा।
१६— ते थकी सूक्ष्म पृथ्वीकाय रा अपर्यापता विशेषाहिया।

१७- ते थकी सूक्ष्म अप्काय रा अपर्जापता विसेसाहिया ।
१८- ते थकी सूक्ष्म वायुकाय रा अपर्जापता विसेसाहिया ।
१९- ते थकी सूक्ष्म तेउकाय रा पर्जापता संख्यात गुणा ।
२०- ते थकी सूक्ष्म पृथ्वीकाय रा पर्जापता विसेसाहिया ।
२१- ते थकी सूक्ष्म अप्काय रा पर्जापता विसेसाहिया ।
२२- ते थकी सूक्ष्म वायुकाय रा पर्जापता विसेसाहिया ।
२३- ते थकी सूक्ष्म निगोद रा अपर्जापता असंख्यात गुणा ।
४- ते थकी सूक्ष्म निगोद रा पर्जापता सख्यात गुणा ।
२५- ते थकी बादर वनस्पतिकाय रा पर्जापता अनन्त गुणा ।
६- ते थकी समुच्चय बादर रा पर्जापता विसेसाहिया ।
२७- ते थकी बादर वनस्पतिकाय रा अपर्जापता असंख्यात गुणा ।
२८- ते थकी समुच्चय बादर रा अपर्जापता विसेसाहिया ।
२९- ते थकी समुच्चय बादर विसेसाहिया ।
३०- ते थकी सूक्ष्म वनस्पतिकाय रा अपर्जापता असंख्यात गुणा ।
३१- ते थकी समुच्चय सूक्ष्म रा अपर्जापता विसेसाहिया ।
३२- ते थकी सूक्ष्म वनस्पतिकाय रा पर्जापता संख्यात गुणा ।
३३- ते थकी समुच्चय सूक्ष्म रा पर्जापता विसेसाहिया ।
३४- ते थकी समुच्चय सूक्ष्म विसेसाहिया ।

सेवं भंते । सेवं भंते ॥

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद ३ में १०२ बोल रो थामठियो चाले सो कहे छै

जीव गइ इंदिय काए, जोए वेए य कसाय लेसा ।
सम्मत्त नाण दंसण, संजए उवओग आहार ॥ १ ॥
भासग परित्त पजत्त, सुहुम सण्णी भवथिए चरम ।

१ जीव द्वार—

समुच्चय जीव में जीव रा भेद १४, गुणठाणा १४, जोग १५, उपयोग १२ लेश्या ६।

२ गति द्वार—

नारकी देवता में जीव रा भेद ३–३, देवी में २, गुणठाणा ४–४, जोग ११–११ उपयोग ९–९ लेश्या नारकी में ३, देवता में ६ देवी में ४। तिर्यंच में जीव रा भेद १४ तिर्यंचणी में ? गुणठाणा ५–५ जोग १३–११ उपयोग ९–९ लेश्या ६–६। मनुष्य में जीव रा भेद ३ मनुष्यणी में २ गुणठाणा १४–१४, जोग मनुष्य में १५ मनुष्यणी में १३, उपयोग १२–१२ लेश्या ६–६। सिद्धों में जीव रा भेद– नहीं गुणठाणा– नहीं जोग– नहीं उपयोग २, लेश्या– नहीं।

अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१ सब सूं थोड़ी मनुष्यणी २ त थकी मनुष्य असंख्यात गुणा ३ त थकी नारकी रा नेरिया असंख्यात गुणा, ४ त थकी तिर्यंचणी असंख्यात गुणी ५ त थकी देवता असंख्यात गुणा ६ त थकी देवांगणा संख्यात गुणी ७ त थकी सिद्ध भगवान अनन्त गुणा ८ त थकी तिर्यंच अनन्त गुणा ९ त थकी समुच्चय जीव विसेसाहिया।

३ इन्द्रिय द्वार—

सइन्द्रियों में जीव रा भेद १४ पञ्चेन्द्रियों में ४ गुणठाणा १२–१२, जोग १५–१५ उपयोग १०–१ लेश्या ६–६। एकेन्द्रियों में जीव रा भेद ४ गुणठाणो १, जोग ५, उपयोग ३, लेश्या ४। बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौइन्द्रियों में जीव रा भेद २–२, गुणठाणा २–२, जोग ४–४, बेइन्द्रिय तेइन्द्रियों में उपयोग ५–५ चौइन्द्रियों में ६ लेश्या ३–३। अनिन्द्रियों में जीव रो भेद १ गुणठाणा ० जोग ५ तथा ० उपयोग २, लेश्या १ शुक्ल।

अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१ सब सु थोड़ा पञ्चेन्द्रिय २ त थकी चौइन्द्रिय विसेसाहिया, ३ त थकी तेइन्द्रिय विसेसाहिया, ४ त थकी बेइन्द्रिय विसेसाहिया, ५ त थकी अनिन्द्रिय अनन्त गुणा। ६ ते थकी एकेन्द्रिय अनन्त गुणा, ७ त थकी सइन्द्रिय विसेसाहिया।

४ काया द्वार —

सकाइया में जीव रा भेद १४, त्रसकाइया में १०, गुणठाणा १४-१४ जोग १५-१५ उपयोग १२-१२ लेश्या ६-६। पृथ्वीकाय आदि पांच काय में जीव रा भेद ४-४ गुणठाणो १-१ चार काय में जोग ३-३ और वायुकाय में ५, उपयोग ३-३ पृथ्वी पाणी वनस्पति में लेश्या ४-४ और तेउ वायु में ३-३। अकाइया में जीव रा भेद- नहीं जोग-नहीं, उपयोग २, लेश्या- नहीं।

अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)—

१ सब सु थोड़ा त्रसकाइया २ त थकी तेउकाइया असंख्यात गुणा ३ त थकी पृथ्वीकाइया विसेसाहिया ४ त थकी अप्पकाइया विसेसाहिया ५ त थकी वायुकाइया विसेसाहिया, ६ त थकी अकाइया अनन्त गुणा, ७ त थकी वनस्पतिकाइया अनन्त गुणा ८ त थकी सकाइया विसेसाहिया।

५ जोग द्वार —

सजोगी कायजोगी म जीव रा भेद १४-१४, गुणठाणा १३-१३ जोग १५ १५ उपयोग १०-१०, लेश्या ६-६। मनजोगी में जीव रा भेद १, वचन जोगी में जीव रा भेद ५ गुणठाणा १३-१३, जोग १५-१५ उपयोग १०-१० लेश्या ६-६। अजोगी म जीव रो भेद १ गुणठाणो १, जोग- नहीं, उपयोग २, लेश्या- नहीं।

अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)—

सब सु थोड़ा मनजोगी, २ त थकी वचन जोगी असंख्यात गुणा

३ त थकी मनजोगी अनन्त गुणा, ४ त थकी काय जोगी अनन्त गुणा ५ त थकी सजोगी विसेसाहिया।

६ वेद द्वार—

सवेदी, नपुंसक वेदी में जीव रा भेद १४-१४ गुणठाणा ६-६ जोग १५-१५ उपयोग १०-१ , लेश्या ६-६। स्त्रीवेदी पुरुषवेदी म जीव रा भेद ५-२, गुणठाणा ६-६, जोग पुरुषवेदी में १५, स्त्री वेदी म १३, उपयोग १ -१ , लेश्या ६-६। अवेदी में जीव रो भेद १, गुणठाणा ५ तथा ६, जोग ११ उपयोग ६, लेश्या १ शुक्ल।

अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)—

१ सब सु थोड़ा पुरुषवेदी २ त थकी स्त्रीवेदी संख्यात गुणी ३ त थकी अवेदी अनन्त गुणा, ४ त थकी नपुंसकवेदी अनन्त गुणा, ५ त थकी सवेदी विसेसाहिया।

७ कषाय द्वार—

सकषाई, लोभ कषाई में जीव रा भेद १४-१४ गुणठाणा १०-१ जोग १५-१५ उपयोग १ -१ लेश्या ६-६। क्रोध कषाई मानकषाई मायाकषाई म जीव रा भेद १४-१४ गुणठाणा ६-६ जोग १५-१५, उपयोग १ -१ लेश्या ६-६। अकषाई म जीव रा भेद १ गुणठाणा ४ जोग ११ उपयोग ६ लेश्या १ शुक्ल।

अल्पाबोध (अल्पबहुत्व)

१ सब सु थोड़ा अकषाई, २ त थकी मानकषाई अनन्त गुणा ३ त थकी क्रोधकषाई विसेसाहिया, ४ ते थकी मायाकषाई विसेसाहिया ५ त थकी लोभकषाई विसेसाहिया ६ त थकी सकषाई विसेसाहिया।

८ लेश्या द्वार—

सलेशी शुक्ल लेशी सलेशी म जीव रा भेद १४ शुक्ल लेशी म

२, गुणठाणा १३-१३, जोग १५-१५, उपयोग १२-१२, मलशी में लेश्या ६, शुक्ल लेशी म लेश्या १ शुक्ल। कृष्ण लशी नीललेशी कापोत लशी में जीव रा भेद १४ १४, गुणठाणा ६-६ जोग १५-१५ उपयोग १०-१०, लेश्या आप आप री। तेजोलेशी म जीव रा भेद ३, पद्मलेशी में जीव रा भेद २-२ गुणठाणा ७-७, जोग १५-१५ उपयोग १०-१० लेश्या आप आप री। अलेशी म जीव रो भेद १, गुणठाणो १ जोग-नहीं, उपयोग २, लेश्या-नहीं।

अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१ सब सु थोड़ा शुक्ल लेशी त थकी पद्मलेशी संख्यात गुणा ३ त थकी तेजोलेशी असख्यात गुणा ४ त थकी अलेशी अनन्त गुणा, ५ त थकी कापोतलेशी अनन्त गुणा ६ त थकी नीललेशी विसेसाहिया, ७ त थकी कृष्णलेशी विसेसाहिया ८ त थकी सलेशी विसेसाहिया।

६ समकित द्वार—

समुच्चय समकित म जीव रा भेद ६ गुणठाणा १२, जोग १५ उपयोग ९, लेश्या ६। सास्वादन समकित में जीव रा भेद ६ गुणठाणो १ दूजो जोग १३ उपयोग ६ लेश्या ६। उपशम समकित में जीव रा भेद २ गुणठाणा ८ जोग १५ उपयोग ७, लेश्या ६। क्षयोपशम वेदक समकित म जीव रा भेद २ गुणठाणा ४ जोग १५ उपयोग ७, लेश्या ६। क्षायिक समकित में जीव रा भेद २ गुणठाणा ११, जोग १५ उपयोग ९ लेश्या ६। मिथ्यात्व म जीव रा भेद १४ गुणठाणो १ जोग १३ उपयोग ६ लेश्या ६। मिश्रदृष्टि म जीव रा भेद १ गुणठाणो १ तीजो, जोग १ उपयोग ६ लेश्या ६।

अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१ सब सु थोड़ा सास्वादन रा त थकी उपशम रा संख्यात गुणा ३ त थकी मिश्रदृष्टि असंख्यात गुणा ४ त थकी क्षयोपशम रा

असंख्यात गुणा ४ ते थकी वेदक रा संख्यात गुणा ६ ते थकी क्षायिक रा अनन्त गुणा ७ ते थकी समुच्चय सम्यग्दृष्टि (समकिती) विसेसाहिया ८ ते थकी मिथ्यादृष्टि अनन्त गुणा।

१० ज्ञान द्वार—

समुच्चय नाणी (ज्ञानी) में जीव रा भेद ६ गुणठाणा १२, (१, ३ वर्ज्यो) जोग १५, उपयोग ६, लेस्या ६। मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी में जीव रा भेद ६, अवधि ज्ञानी में जीव रा भेद , गुणठाणा १० (१ ३ ११, १४ वर्ज्या), जोग १५, उपयोग ७ (४ ज्ञान ३ दर्शन) लेस्या ६। मन पर्यव ज्ञानी में जीव रा भेद १ गुणठाणा ७ (६ से १२ तक) जोग १४ उपयोग ७, लेस्या ६। केवलज्ञानी मे जीव रो भेद १, गुणठाणा २, जोग ७ तथा ७, उपयोग २ लेस्या १ परम शुक्ल। मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी मे जीव रा भेद १४ विभंग ज्ञानी में जीव रा भेद २ गुणठाणा २, जोग १३ उपयोग ६ (३ अज्ञान, ३ दर्शन) लेस्या ६।

अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१ सब सु थोड़ा मन पर्यव ज्ञानी, २ ते थकी अवधिज्ञानी असं ख्यात गुणा ३ ते थकी मति ज्ञानी, श्रुत ज्ञानी विसेसाहिया आपस में तुल्ला ४ ते थकी विभग ज्ञानी असंख्यात गुणा ६ ते थकी केवलज्ञानी अनन्त गुणा ७ ते थकी समुच्चय ज्ञानी विसेसाहिया ८ ते थकी मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी अनन्त गुणा आपस में तुल्ला। ९ ते थकी समुच्चय अज्ञानी विसेसाहिया।

११ दर्शन द्वार—

चक्षुदर्शन मे जीव रा भेद ३ (पर्याप्ता) तथा ६ गुणठाणा १२ जोग १४ (कार्मण वर्ज्यो) उपयोग १ लेस्या ६। अचक्षुदर्शन में जीव रा भेद १४ अवधि दर्शन में जीव रा भेद २ गुणठाणा १०-१२ जोग १५ १५

उपयोग १०-१०, लेश्या ६ ६ । केवल दर्शन में जीव रो भेद १ गुण ठाणा २, जोग ५ तथा ७, उपयोग २, लेश्या १ ।

अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१ सब सुं थोड़ा अवधि दर्शन रा धणी, २ ते थकी चक्षुदर्शन रा धणी असंख्यात गुणा, ३ ते थकी केवल दर्शन रा धणी अनन्त गुणा, ४ ते थकी अचक्षु दर्शन रा धणी अनन्त गुणा ।

१२ संयत द्वार —

समुच्चय संयता में जीव रो भेद १ गुणठाणा ९ (६ से १४) जोग १५, उपयोग ९, लेश्या ६ । सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र में जीव रो भेद १, गुणठाणा ४ (६ से ९), जोग १४, उपयोग ७, लेश्या ६ । परिहारविशुद्धि चारित्र में जीव रो भेद १, गुणठाणा २ (छठा, सातवां) जोग ९ (४ मन रा, ४ वचन रा, १ औदारिक), उपयोग ७, लेश्या ३ विशुद्ध । सूक्ष्म सम्पराय चारित्र में जीव रो भेद १ गुणठाणो १ (दसवों) जोग ९

असंख्यात गुणा, ५ ते थकी वेदक रा संख्यात गुणा ६ ते थकी क्षायिक रा अनन्त गुणा ७ ते थकी समुच्चय सम्यग्दृष्टि (समकिती) विसेसाहिया ८ ते थकी मिथ्यादृष्टि अनन्त गुणा।

१० ज्ञान द्वार—

समुच्चय नाणी (ज्ञानी) में जीव रा भेद ६ गुणठाणा १२ (१, ३ वर्ज्यो) जोग १५ उपयोग ९ लेश्या ६। मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी में जीव रा भेद ६ अवधि ज्ञानी में जीव रा भेद २ गुणठाणा १ (१ ३ १३ १४, वर्ज्या), जोग १५, उपयोग ७ (४ ज्ञान ३ दर्शन) लेश्या ६। मन पर्यव ज्ञानी में जीव रा भेद १ गुणठाणा ७ (६ से १२ तक), जोग १४ उपयोग ७ लेश्या ६। केवलज्ञानी में जीव रो भेद १, गुणठाणा २, जोग ५ तथा ७ उपयोग २ लेश्या १ परम शुक्ल। मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी में जीव रा भेद १४ विभंग ज्ञानी में जीव रा भेद २ गुणठाणा २, जोग १३ उपयोग ६ (३ अज्ञान, ३ दर्शन), लेश्या ६।

पृष्ठ २६ में लाइन १३ के बाद छूटा हुआ विषय

ज्ञान री अल्पाबोध—

१ सब सु थोड़ा मनःपर्यवज्ञानी २ ते थकी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणा ३ ते थकी मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी आपस में तुल्य विसेसाहिया ४ ते थकी केवलज्ञानी अनन्तगुणा ५ समुच्चय ज्ञानी विसेसाहिया।

अज्ञान री अल्पाबोध—

१ सब सु थोड़ा विभंगज्ञानी २ ते थकी मति अज्ञानी, श्रुत अज्ञानी आपस में तुल्य अनन्तगुणा ३ ते थकी समुच्चय अज्ञानी विसेसाहिया।

उपयोग १०-१०, लेस्या ६-६ । केवल दर्शन में जीव रो भेद १ गुण ठाणा २, जोग ५ मन रा ७, उपयोग २, लेस्या १ ।

अल्पाबहुत्व (अल्प बहुत्व)—

१ सब सूं थोड़ा अवधि दर्शन रा धणी, २ ते थकी चक्षुदर्शन रा धणा असंख्यात गुणा, ३ ते थकी केवल दर्शन रा धणी अनन्त गुणा, ४ ते थकी अचक्षु दर्शन रा धणी अनन्त गुणा ।

१२ संयत द्वार —

समुच्चय संयती में जीव रा भेद १ गुणठाणा ६ (६ से १४) जोग १५, उपयोग ६, लेस्या ६ । सामायिक चारित्र, छेदोपस्थापनीय चारित्र में जीव रो भेद १, गुणठाणा ४ (६ से ६), जोग १४, उपयोग ७, लेस्या ६ । परिहारविशुद्धि चारित्र में जीव रो भेद १, गुणठाणा २ (छठा, सातवां) जोग ६ (४ मन रा ४ वचन रा, १ औदारिक), उपयोग ७, लेस्या ३ विशुद्ध । सूक्ष्म सम्पराय चारित्र में जीव रो भेद १, गुणठाणो १ (दसवों), जोग ६ उपयोग ४ (४ ज्ञान) तथा कोई आचार्य ७ कहे (४ ज्ञान, ३ दर्शन), लेस्या १ शुक्ल । यथाख्यात चारित्र में जीव रो भेद १, गुणठाणा ४ (११ से १४) जोग ११ उपयोग ६ लेस्या १ शुक्ल । संयतासंयती में जीव रा भेद १ गुणठाणा १ (पांचवों) जोग १२ (२ आहारक रा और १ कार्मण वर्ज्यो), उपयोग ६ (३ ज्ञान ३ दर्शन), लेस्या ६ । असंयती में जीव रा भेद १४ गुणठाणा ४ जोग १३ उपयोग ६, लेस्या ६ । नोसंयती नोअसंयती नोसंयतासंयती में जीव रा भेद- नहीं गुणठाणा- नहीं, जोग- नहीं, उपयोग २ लेस्या- नहीं ।

अल्पाबहुत्व (अल्प बहुत्व)—

१ सब सूं थोड़ा सूक्ष्म सम्पराय चारित्र रा धणी, २ ते थकी परिहारविशुद्धि रा धणी संख्यात गुणा ३ ते थकी यथाख्यात चारित्र रा धणी संख्यात गुणा, ४ ते थकी छेदोपस्थापनीय चारित्र रा धणा संख्यात गुणा

अल्पाबहुत्व (अल्प बहुत्व)—

१ सब सूं थोड़ा भाषक, २ ते थकी अभाषक अनन्त गुणा।

१६ परित द्वार—

परित में जीव रा भेद १४, गुणठाणा १४, जोग १५ उपयोग १ लेश्या ६। अपरित में जीव रा भेद १४ गुणठाणा १ (पहला) जोग १३ उपयोग ६, लेश्या ६। नोपरित नोअपरित में जीव रा भेद- नहीं। गुणठाणा- नहीं। जोग- नहीं। उपयोग लेश्या- नहीं।

अल्पाबहुत्व (अल्प बहुत्व)—

१ सब सूं थोड़ा परित २ ते थकी नोपरित नोअपरित अनन्त गुणा ३ ते थकी अपरित अनन्त गुणा।

१७ पर्याप्ता द्वार —

पर्याप्ता में जीव रा भेद ७ गुणठाणा १४ जोग १५, उपयोग १२ लेश्या ६। अपर्याप्ता में जीव रा भेद ७, गुणठाणा ३ (१, २, ४) जोग ५, उपयोग ८ तथा ९ लेश्या ६। नोपर्याप्ता नोअपर्याप्ता में जीव रा भेद- नहीं। गुणठाणा- नहीं। जोग- नहीं। उपयोग २, लेश्या- नहीं।

अल्पाबहुत्व (अल्प बहुत्व)—

१ सब सूं थोड़ा नोपर्याप्ता नोअपर्याप्ता, २ ते थकी अपर्याप्ता अनन्त गुणा ३ ते थकी पर्याप्ता संख्यात गुणा।

१८ सूक्ष्म द्वार—

सूक्ष्म में जीव रा भेद २, गुणठाणा १, जोग ३, उपयोग ३ लेश्या ३। बादर में जीव रा भेद १२, गुणठाणा १४ जोग १५, उपयोग १२, लेश्या ६। नोसूक्ष्म नोबादर में जीव रा भेद- नहीं, गुणठाणा- नहीं। जोग- नहीं। उपयोग २। लेश्या- नहीं।

अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१ सब सू थोड़ा नोसूक्ष्म नोबादर, २ ते थकी बादर अनन्त गुणा ३ ते थकी सूक्ष्म असंख्यात गुणा।

१९ सन्नी द्वार—

सन्नी में जीव रा भेद २, गुणठाणा १२, जोग १५, उपयोग १०, लेस्या ६। असन्नी में जीव रा भेद १२, गुणठाणा २ जोग ६, उपयोग ६, लेस्या ४। नोसन्नी नोअसन्नी मे जीव रो भेद १, गुणठाणा २, जोग ५ तथा ७ उपयोग २ लेस्या १ शुक्ल।

अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१ सब सू थोड़ा सन्नी २ ते थकी नोसन्नी नोअसन्नी अनन्त गुणा ३ ते थकी असन्नी अनन्त गुणा।

२० भव्य द्वार—

भवी में जीव रा भेद १४, गुणठाणा १४, जोग १५, उपयोग १२, लेस्या ६। अभवी मे जीव रा भेद १४ गुणठाणो १, जोग १३, उपयोग ६ लेस्या ६। नोभवी नोअभवी मे जीव रा भेद– नहीं। गुणठाणा– नहीं। जोग– नहीं। उपयोग २, लेस्या– नहीं।

अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१ सब सु थोड़ा अभवी, २ ते थकी नोभवी नोअभवी अनन्त गुणा। ३ ते थकी भवी अनन्त गुणा।

२१ चरिम द्वार —

प्रदेसठियों री अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१ सब सु थोड़ा धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय रा प्रदेसठिया आपस में तुल्ला। २ ते थकी जीव रा प्रदेसठिया अनन्त

गुणा । ३ ते थकी पुद्‌गल रा द्रवेसठिया अनन्त गुणा । ४ ते थकी काल रा द्रवेसठिया अनन्त गुणा ।

प्रदेसठियों री अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१ सब सु थोड़ा धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय रा प्रदेसठिया । २ ते थकी जीव रा प्रदेसठिया अनन्त गुणा । ३ ते थकी पुद्‌गल रा प्रदेसठिया अनन्त गुणा । ४ ते थकी काल रा अप्रदेसठिया अनन्त गुणा । ५ ते थकी आकाश रा प्रदेसठिया अनन्त गुणा ।

द्रवेसठिया प्रदेसठियों री दो दो बोलों री अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१ सब सु थोड़ा एग धर्मास्तिकाय रा द्रवेसठिया, २ ते चेव प्रदेसठिया असंख्यात गुणा ।

१ सब सु थोड़ा एग अधर्मास्तिकाय रा द्रवेसठिया, २ ते चेव प्रदेसठिया असंख्यात गुणा ।

१ सब सु थोड़ा एगे आकाशास्तिकाय रा द्रवेसठिया २ ते चेव प्रदेसठिया अनन्त गुणा ।

१ सब सु थोड़ा जीवास्तिकाय रा द्रवेसठिया २ ते चेव प्रदेसठिया असंख्यात गुणा ।

१ सब सु थोड़ा पुद्‌गलास्तिकाय रा द्रवेसठिया २ ते चेव प्रदेसठिया असंख्यात गुणा ।

भेली अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१ सब सु थोड़ा धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय रा द्रवेसठिया आपस में तुल्ला, २ ते थकी धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय रा प्रदेसठिया असंख्यात गुणा ३ ते थकी जीव द्रवेसठिया अनन्त गुणा, ४ ते चेव प्रदेसठिया असंख्यात गुणा ५ ते थकी पुद्‌गल रा द्रवेसठिया अनन्त गुणा, ते चेव प्रदेसठिया असंख्यात गुणा ६ ते थकी काल रा द्रवेसठिया

अप्रदेसठिया अनन्त गुणा ७ ते थकी आकाशास्तिकाय रा अप्रदेसठिया अनन्त गुणा।

१ सब सु थोड़ा जीव, २ ते थकी पुद्गल अनन्त गुणा ३ ते अर्द्ध काल अनन्त गुणो ४ ते थकी सर्व द्रव्य विसेसाहिया ५ ते थकी सर्व प्रदेश अनन्त गुणा ६ ते थकी सर्व पज्जवा अनन्त गुणा।

२२ चरम द्वार —

चरम में जीव रा भेद १४ गुणठाणा १४ जोग १५, उपयोग १ लेश्या ६। अचरम में जीव रा भेद १४ गुणठाणो १ जोग १५, उपयोग ८ (३ अज्ञान १ केवलज्ञान ४ दर्शन), लेश्या ६।

अल्पाबहुत्व (अल्प बहुत्व)—

१ सब सु थोड़ा अचरम २ ते थकी चरम अनन्त गुणा।

सेवं भंते! सेवं भंते!!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद तीजे में जीवादि री अल्पाबहुत्व (अल्प बहुत्व) रा थोकड़ा चाले सो कहे छे —

१ अहो भगवान्! जीव पुद्गल अद्धासमय, सर्व द्रव्य सर्व प्रदेश और सर्व पज्जवा में कुण किण सु अल्प बहुत्व तुल्य और विसेसाहिया है? हे गोतम! १ सब सु थोड़ा जीव २ ते थकी पुद्गल अनन्त गुणा ३ ते थकी अद्धासमय अनन्त गुणा ४ ते थकी सर्व द्रव्य विसेसाहिया ५ ते थकी सर्व पज्जवा अनन्त गुणा ६ ते थकी सर्व प्रदेश अनन्त गुणा।

सेवं भंते! सेवं भंते!!

~ xoo ~

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद तीजे में खेताणु वाई रो थोकड़ो चाले सो कहे छै—

(१)— समुच्चय जीव, समुच्चय तिर्यंच ये दो बोल और समुच्चय एकेन्द्रिय समुच्चय पांच स्थावर ये छः बोल, इण छः रा पर्जापता और अपर्जापता ये बीस बोल सब सु थोड़ा उड्ढलोयतिरियलोए[1]। (२) ते थकी अहोलोयतिरियलोए[2] विसेसाहिया।

१—अठारह सौ १८ योजन रो तिर्यक्लोक छै। तेहना उपरला प्रदेश नो प्रतर अने ऊर्ध्वलोक ना नीचला प्रदेश नो प्रतर ए बेहु एक एक प्रदेश ना छे ए बेहु प्रतर नो नाम उड्ढलोयतिरियलोए (ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक) कहिये। ए बेहु प्रतर ने स्पर्शे ते जीव थोड़ा छे। ते किम ? तिर्यक् लोक सु ऊर्ध्वलोक उपजता अथवा ऊर्ध्वलोक सु तिर्यक्लोक में उपजता जे जीव ए प्रतर ने स्पर्शे ते गणवा अने जे ऊर्ध्वलोक थी अधोलोके उपजे ते गणवा नहीं ते माटे थोड़ा। यह सम्पूर्ण लोक १४ राजु परिमाण छै—तेहना तीन भेद—ऊर्ध्वलोक, तिर्यक्लोक, अधोलोक, ए तीन भेद मेरु पर्वत ना रुचक प्रदेश थकी जाणवा। रुचक प्रदेश हेठे ९ योजन तिर्यक्लोक अने रुचक प्रदेश ऊपर ९ योजन तिर्यक्लोक, इण तरह १८ योजन प्रमाण तिर्यक्लोक छ। ते हेठे ७ राजु झाझेरा प्रमाण अधोलोक छे। तिर्यक्लोक रे ऊपर ७ राजु न्यूनेरा प्रमाणे ऊर्ध्वलोक छे। रुचक प्रदेश समतल भूमिभाग रे ऊपर ९ योजन माहीं ज्योतिषी चक्र छे। ते ज्योतिषी चक्र रे ऊपर तिर्यक् लोक सम्बन्धी एक प्रदेशी आकाश प्रतर तिर्यक् लोक ना छम ए ऊपरे ऊर्ध्वलोक ना हेठलो एक प्रदेशी आकाश प्रतर ए बेहु प्रतर ना नाम उड्ढलोयतिरियलोए (ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोक) कहिये।

२—अधोलोक ना ऊपरलो एक आकाश प्रदेश ना प्रतर अने तिर्यक् लोक नो नीचलो एक आकाश प्रदेश नो प्रतर ए बेहु प्रतर नो नाम अहोलोयतिरिय लोए (अधोलोक तिर्यक्लोक) कहिये। जिहां जे जीव विग्रह गति मा वरते छे

(३) ते थकी तिरियलोए[१] असंख्यात गुणा।

(४) ते थकी तिलोए[२] (तीन लोकां) असंख्यात गुणा।

(५) ते थकी उड्ढलोए[३] असंख्यात गुणा।

(६) ते थकी अहोलोए[४] विसेसाहिया।

२— (१) समुच्चय नारकी रा अल्पा सब सु थोड़ा तीन लोकां[५],

(२) ते थकी अहोलोयतिरियलोए[६] असंख्यात गुणा।

(३) ते थकी अहोलोए[७] असंख्यात गुणा।

ते विशेष अधिक। ते किम? तिर्यग्लोक थी नीचे लोक में उपजता जीवे लोक ने तिर्यग् लोक में उपजता दोनुं प्रतर स्पर्शे (इहां ऊर्ध्वलोक उपजता न लीजीए) ते माटे विशेषाधिक छे तथा ऊर्ध्वलोक तिर्यक् लोक थी अधोलोक तिर्यग्लोक नो क्षेत्र पण विशेषाधिक छे ते माटे ए पण विशेषाधिक छे।

१— असंख्यात योजन नो तिर्छो लोक छे ते माटे।

२— विग्रहगति मां वर्तता के जीव ऊर्ध्वलोक तिर्यक् लोक स्पर्शे ते न लीजीए किन्तु जे विग्रहगति मां पहुंच्या विना निगोदिया आदि तीनों लोक स्पर्शे ते लीजीए तथा मरणान्तिक समुद्घात करता तीन लोक स्पर्शे।

३— ऊर्ध्वलोक नो क्षेत्र मोटो छे ते माटे।

४— ऊर्ध्वलोक ना क्षेत्र थी अधोलोक नो क्षेत्र विशेषाधिक छ ते माटे।

५— मेरु पर्वत ऊपर वावड़ी छे तथा अञ्जनगिरि पर्वत ऊपर वावड़ी छे तेहना मच्छ इत्यादि नारकी नो आयुष्य बांधी नारकी मांही जातां तीन लोक स्पर्शे ते माटे तीन लोकां में नारकी थोड़ा।

६— तिर्यक् लोक ना तीर समुद्र ना जीव नारकी मांही जातां वेहु लोक स्पर्शे ते माटे अहोलोयतिरियलोए असंख्यात गुणा।

७— अधोलोक नारकी नो क्षेत्र छे ते माटे तिहां घणाई छे।

१— (१) समुच्चय तिर्यञ्चणी, इयता, देवाङ्गना सब सु थोड़ा ऊर्ध्वलोक[1]। (२) ते थकी ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोक[2] असंख्यात गुणा। (३) ते थकी तीन लोकमां[3] संख्यात गुणा, (४) ते थकी अधोलोकतिर्यक्लोक संख्यात गुणा, (५) ते थकी अधोलोक[5] संख्यात गुणा, (६) ते थकी तिर्यक्लोक[6] संख्यात गुणा।

१— मेरु पर्वत नी तथा अंजनादिक पर्वत नी वावडी मां तिर्यंचणी थोडी छे। ऊर्ध्वलोक मा विमानवासी देवता, देवांगना थोडा छे।

२— देवलोक ना देवता, देवी तथा एकेन्द्रियादिक तिर्यच तिर्च्छा लोक में आवता तथा ऊँचा लोक मा मच्छ कच्छादि तिर्यक्लोक ना ज्योतिषी थाय अन्तर मां आवता दोनु लोक स्पर्शे छे माटे।

३— भवनपति आदि वैक्रिय समय मरणान्तिक समुद्घात करता तीन लोक स्पर्शे तथा नीचा लोक ना मनुष्य तिर्यंच ऊंचा देवलोक मां जाता थका तथा ऊंचा लोक ना मच्छ कच्छादि भवनपति में जाता तीन लोक स्पर्शे छे माटे।

४— मरती भवनपति तथा एकेन्द्रियादि तिर्यक्लोक मां उपजतां दोनु लोक स्पर्शे। तिर्यक्लोक ना मनुष्य तिर्यच मरी ने भवनपति मां जातां दोनु लोक स्पर्शे छे माटे।

५— अधोलोक मां गाम छे तथा लवण समुद्र १००० योजन ना ऊंडा छे तिहां मां ९०० योजन तिर्यक्लोक छे बाकी १०० योजन अधोलोक छे तिहां तिर्यच छे तथा [illegible] योजन ना ऊंडा छे तिहां तिर्यच छे। नीचे लोक मां भवनपति घणा छे ते माटे।

६— तिर्यक्लोके असंख्याता द्वीप समुद्र छे तिहां तिर्यच छे तथा तिर्यक्लोक मां [illegible] छे ते माटे।

४— मनुष्य मनुष्यणी सव थी थोड़ा तीनलोकमां[1], (२) ते थकी ऊर्ध्वलोक तिरियलोए मनुष्यणी संख्यात गुणी, मनुष्य असंख्यात गुणा, (३) ते थकी अधोलोयतिरियलोए[2] संख्यात गुणा, (४) ते थकी ऊर्ध्वलोए संख्यात गुणा, (५) ते थकी अधोलोए संख्यात गुणा (६) ते थकी तिरियलोए[3] संख्यात गुणा।

५— (१) भवनपति देवता देवांगना सव थी थोड़ा ऊर्ध्वलोए।

१— ज्यारे मरता मरणान्तिक समुद्घात करीने तीन लोक स्पर्शे तथा वैक्रिय समुद्घात करता अने केवली समुद्घात करता तीन लोक स्पर्शे ते माटे सव थी थोड़ा।

२— विद्याधर देवता तथा पञ्चेन्द्रियादिक मनुष्य ने आवता जाता लोक स्पर्शे ते माटे।

३— नारकी, भवनपति तथा पंचेन्द्रियादिक मनुष्य ने आवता अधोलोक अने तिर्यग्लोक बंनु लोक स्पर्शे ते माटे।

४— मेरु पर्वत ऊपर विद्याधर क्रीडा करवा ने माटे जावे अने चारणमुनि नो गमनागमन समने छे तेने वडीनीतादिक पुद्गलना संबंधी सम्मूर्छिम मनुष्य नो संभव छे।

५— पश्चिम दिशा नी सलिलावती विजय १ योजन ऊंडी छे ते माटे।

६— अढाईद्वीप मांही मनुष्य मनुष्यणी ना रहवाना ठिकाणा छे ते माटे।

७— सुधर्मादिक देवलोक ने पूर्वनी मित्रताने लीधे अथवा मेरु पर्वत ऊपर तीर्थंकर भगवान् ना जन्म महोत्सव टाणे तथा समय भवनपति देवता देवांगना लिया जावे वली भी पण्डुक वन गिरि पर्वत आदि ए क्रीडास्थानक छे तिम तमने क्रीडा करे ता भी थोड़ा छे।

(२) ते थकी उड्ढलोयतिरियलोए' असंख्यात गुणा (३) ते थकी तीन-लोकां' संख्यात गुणा (४) ते थकी अहोलोयतिरियलोए' असंख्यात गुणा, (५) ते थकी तिरियलोए असंख्यात गुणा, (६) ते थकी अहोलोए' असंख्यात गुणा।

६— वाणव्यन्तर देवता देवांगणा (१) सब सु थोड़ा उड्ढलोए', ( ) ते थकी उड्ढलोयतिरियलोए असंख्यात गुणा, (३) ते थकी तीन लोका' संख्यात गुणा।

१— मरणान्तिक समुद्घात करीने ऊर्ध्वलोके बादर पृथ्वीकायादिक पणे उपजता ऊर्ध्वलोक अने तिर्यक्लोक दोनु लोक स्पर्शे ते माटे तथा तीर्थंकर भगवान् ना जन्म महोत्सव निमित्ते मेरु पर्वत ऊपर आता दोनु लोक स्पर्श ते माटे।

२— वैक्रिय समुद्घात करता तीनु लोक स्पर्शे ते माटे।

३— तिर्यक्लोके गमन आगमन करता तथा तिर्यक्लोक ना तिमिश्र अने मनुष्य मरी ने भवनपति मा जाता अधोलोक अने तिर्यक्लोक दोनु स्पर्शे ते माटे।

४— तिर्यक् लोक मा श्री देवी प्रमुख तथा सूर्यों ना वासी भवनपति तथा मागध वरदाम आदि तीर्थवासी तथा तीर्थंकर भगवान् ना दर्शन निमित्ते अने पाप कल्याणक निमित्ते तिर्यक्लोक मा आवे ते माटे।

५— अधोलोक भवनवासियों ना स्वस्थान छे तिहा ते शाश्वत छे ते माटे।

६— तीर्थङ्कर भगवान् ना जन्म महोत्सव निमित्ते मेरु पर्वत ऊपरे आवे ते माटे ऊर्ध्वलोक मे सब सु थोड़ा।

७— ऊंचा लोक ना भद्र भद्र आदि तिर्यक्लोक ना वाणव्यन्तर मे उपजता तथा तीर्थङ्कर भगवान् ना जन्म महोत्सव निमित्त मेरु पर्वत ऊपर आता जाता ऊर्ध्वलोक अने तिर्यक्लोक दोनु लोक स्पर्शे ते माटे

८— वैक्रिय समुद्घात करता तीन लोक स्पर्शे ते माटे।

(५) ते थकी तिरियलोए[1] संख्यात गुणा, (६) ते थकी उड्ढलोए[2] असंख्यात गुणा।

३—तीन विकलेन्द्रिय, तीनों रा पर्याप्ता, तीनों रा अपर्याप्ता (१) सब सु थोड़ा उड्ढलोए[1] (२) ते थकी उड्ढलोयतिरियलोए[2] असंख्यात गुणा। (३) ते थकी तीन लोकां[3] असंख्यात गुणा। (४) ते थकी अहोलोय तिरियलोए[4] असंख्यात गुणा। (५) ते थकी अहोलोए संख्यात गुणा। (६) ते थकी तिरियलोए संख्यात गुणा।

१— तिर्यक् लोक मां सलिलावती विजय ने विषे जघन्य २ उत्कृष्ट १० तीर्थङ्कर भगवान् छे तेहना पंच कल्याण निमित्ते तथा दर्शन निमित्ते तिर्यक लोक में आवे ते माटे संख्यात गुणा।

२ — ऊर्ध्वलोक विमानिक देवों नो स्वस्थान छे, ते माटे तिहां शाश्वता छे।

३ — मेरु पर्वत नी बावड़ी में तिर्यक्लेन्द्रिय छे ते माटे तिहां सब सु थोड़ा।

४— ऊर्ध्व लोक ना एकेन्द्रियादि मरी ने तिर्यक्लोक मां बेन्द्रिय मां उपजता अथवा तिर्यक्लोक ना बेइन्द्रिय मरी ने ऊर्ध्व लोक मा एकेन्द्रियादि मां उपजता ऊर्ध्व लोक अने तिर्यक् लोक ए दोनु लोक स्पर्शे ते माटे।

५— विग्रह गति अने मरणान्तिक समुद्घात आश्री तीन लोकां असंख्यात गुणा छै।

६— नीचा लोक ना एकेन्द्रियादि मरी ने तिर्यक्लोके बेइन्द्रिय में उपजता अथवा तिर्यक्लोक ना बेइन्द्रिय मरी ने नीचे लोक मा एकेन्द्रियादि में उपजता अधोलोक अने तिर्यक्लोक ए दोनु लोक स्पर्शे ते माटे।

७— लव समुद्र एक हजार योजन ना ऊंडा छे। तिण में १ योजन अधोलोक में छे तिहां बेइन्द्रियादिक आवे ते माटे।

८— द्वीप समुद्र घणा छै तिहां घणा बेइन्द्रियादिक छै ते माटे।

१०—समुच्चय त्रस, त्रस ना पर्याप्ता और अपर्याप्ता, समुच्चय पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय ना अपर्याप्ता (१) सब सु थोड़ा तीन्लोकमें (२) ते थकी उड्ढलोयतिरियलोए संख्यात गुणा। (३) ते थकी अहोलोयतिरियलोए[2] संख्यात गुणा। (४) ते थकी उड्ढलोए संख्यात गुणा। (५) ते थकी अहोलोए संख्यात गुणा। (६) ते थकी तिरियलोए[3] असंख्यात गुणा

११—पंचेन्द्रिय ना पर्याप्ता (१) सब सु थोड़ा उड्ढलोए (२) ते थकी उड्ढलोयतिरियलोए असंख्यात गुणा (३) ते थकी तीन लोकमें संख्यात गुणा (४) ते थकी अहोलोयतिरियलोए संख्यात गुणा, (५) ते थकी अहोलोए संख्यात गुणा (६) ते थकी तिरियलोए असंख्यात गुणा।

१— विग्रह गति अने मारणान्तिक समुद्घात आश्री तथा वैक्रिय समुद्घात आश्री।

२— ऊर्ध्वलोक ना जीव मरी ने तिर्यक् लोक विषय मा उपजता ऊर्ध्वलोक अने तिर्यक्लोक बेनु स्पर्शे ते माटे।

३— नीचा लोक ना जीव मरी ने तिर्यक्लोक विषे मा उपजता अथवा तिर्यक्लोक ना तिर्यंच मरी ने नीचा लोक मा उपजता अधोलोक अने तिर्यक्लोक बेनु लोक स्पर्शे ते माटे।

४— मेरु पर्वत तथा भद्रशालादिक पर्वत नी वावडी मा तिर्यंच छे ते माटे।

५— अधोलोक मा ४ पाताल कलशा छे तथा सलिलावती विजय एक हजार योजन नी ऊंडी छे तथा लवण समुद्र एक हजार योजन ना ऊंडा छे तिहां तिर्यंच घणा छे।

६— तिर्यक्लोक मा तिर्यंच घणा छे।

पृष्ठ ४१ के शुरु में छूटा हुआ विषय

१२— खेत्ताणुवाएण पोग्गला (१) सब सु थोड़ा तीन लोकम, (२) त थकी उड्ढलोए तिरियलोए अनन्तगुणा, (३) ते थकी अहोलोए तिरियलोए[2] विसेसाहिया, (४) ते थकी तिरियलोए[3] असंख्यातगुणा (५) त थकी उड्ढलोए[4] असंख्यातगुणा (६) ते थकी अहोलोए[5] विसेसाहिया।

१ अचित्त महास्कंध तीन लोक व्यापी त सब सु थोड़ा।
२ दो प्रदेश स्पर्शने वाला पुद्गल थया छे।
३ क्षेत्र विशेष छे।
४ क्षेत्र असंख्यातगुणो ज्यादा छे।
५ क्षेत्र असंख्यातगुणो ज्यादा छे, सात राजु माठेरो छे।
६ क्षेत्र विशेष छे सात राजु झामेरो छे।

(३) ते थकी संख्यात प्रदेशी खंध दव्वट्ठयाए संख्यात गुणा।
(४) ते थकी असंख्यात प्रदेशी खंध दव्वट्ठयाए असंख्यात गुणा।
१) सब सु थोड़ा अनन्त प्रदेशी खंध पएसट्ठयाए।
(२) त थकी परमाणु पुद्गल अपएसट्ठयाए अनन्त गुणा।
(३) ते थकी संख्यात प्रदेशी खंध पएसट्ठयाए संख्यात गुणा।
(४) ते थकी असंख्यात प्रदेशी खंध पएसट्ठयाए असंख्यात गुणा।

दोनों री भेली अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

(१) सब सु थोड़ा अनन्त प्रदेशी खंध दव्वट्ठयाए।
(२) ते चेव (वे ही) पएसट्ठयाए अनन्त गुणा। (३) त थकी परमाणु पुद्गल दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए अनन्त गुणा। (४) ते थकी संख्यात प्रदेशी खंध दव्वट्ठयाए संख्यात गुणा। (५) ते चेव पएसट्ठयाए संख्यात गुणा।
(६) त थकी असंख्यात प्रदेशी खंध दव्वट्ठयाए असंख्यात गुणा।
(७) त चेव पएसट्ठयाए असंख्यात गुणा।

क्षेत्र री ३ अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)

(१) सब सु थोड़ा एक आकाश प्रदेश अवगाहिया पुद्गल द्रव्याट्ठयाए । (२) ते थकी संख्यात प्रदेश अवगाहिया पुद्गल द्रव्याट्ठयाए संख्यात गुणा । (३) ते थकी असंख्यात प्रदेश अवगाहिया पुद्गल द्रव्याट्ठयाए असंख्यात गुणा ।

(१) सब सु थोड़ा एक आकाश प्रदेश अवगाहिया पुद्गल पएसट्ठयाए (२) ते थकी संख्यात प्रदेश अवगाहिया पुद्गल पएसट्ठयाए संख्यात गुणा । (३) ते थकी असंख्यात आकाश प्रदेश अवगाहिया पुद्गल पएसट्ठयाए असंख्यात गुणा ।

(१) सब सु थोड़ा एक आकाश प्रदेश अवगाहिया पुद्गल द्रव्याट्ठयाए पएसट्ठयाए । (२) ते थकी संख्यात आकाश प्रदेश अवगाहिया पुद्गल द्रव्याट्ठयाए संख्यात गुणा (३) ते ज पएसट्ठयाए संख्यात गुणा (४) ते थकी असंख्यात प्रदेश अवगाहिया पुद्गल द्रव्याट्ठयाए असंख्यात गुणा (५) ते जेज पएसट्ठयाए असंख्यात गुणा ।

काल री ३ अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)

(१) सब सु थोड़ा एक समय री स्थिति रा पुद्गल द्रव्याट्ठयाए (२) ते थकी संख्यात समय री स्थिति रा पुद्गल द्रव्याट्ठयाए संख्यात गुणा । (३) ते थकी असंख्यात समय री स्थिति रा पुद्गल द्रव्याट्ठयाए असंख्यात गुणा ।

(१) सब सु थोड़ा एक समय री स्थिति रा पुद्गल पएसट्ठयाए । (२) ते थकी संख्यात समय री स्थिति रा पुद्गल पएसट्ठयाए संख्यात गुणा । (३) ते थकी असंख्यात समय री स्थिति रा पुद्गल पएसट्ठयाए असंख्यात गुणा ।

(१) सब सु थोड़ा एक समय री स्थिति रा पुद्गल द्रव्याट्ठयाए पएसट्ठयाए । (२) ते थकी संख्यात समय री स्थिति रा पुद्गल द्रव्याट्ठयाए

संख्यात गुणा । (३) ते चेव पएसट्ठयाए संख्यात गुणा । (४) ते थकी असंख्यात समय री स्थिति रा पुद्गल दव्वट्ठयाए असंख्यात गुणा । (५) ते चेव पएसट्ठयाए असंख्यात गुणा ।

मात री ६ अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)

( ) सब सु थोड़ा अनन्त गुणा काले वर्ण रा पुद्गल दव्वट्ठयाए
(२) ते थकी एक गुण काले वर्ण रा पुद्गल दव्वट्ठयाए अनन्तगुणा
(३) ते थकी संख्यात गुण काले वर्ण रा पुद्गल दव्वट्ठयाए संख्यात गुणा।
(४) ते थको असंख्यात गुण काले वर्ण रा पुद्गल दव्वट्ठयाए असंख्यात गुणा ।

(१) सब सु थोड़ा अनन्त गुण काले वर्ण रा पुद्गल पएसट्ठयाए ।
(२) ते थकी एक गुण काले वर्ण रा पुद्गल पएसट्ठयाए अनन्त गुणा ।
(३) ते थकी संख्यात गुण काले वर्ण रा पुद्गल पएसट्ठयाए संख्यात गुणा।
(४) ते थकी असंख्यात गुण काले वर्ण रा पुद्गल पएसट्ठयाए असंख्यात गुणा ।

दोनों री भेली अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

(१) सब सु थोड़ा अनन्त गुण काले वर्ण रा पुद्गल दव्वट्ठयाए । (२) ते चेव पएसट्ठयाए अनन्त गुणा । (३) ते थकी एक गुण काले वर्ण रा पुद्गल दव्वट्ठयाए अपएसट्ठयाए अनन्त गुणा । (४) ते थकी संख्यात गुण काले वर्ण रा पुद्गल दव्वट्ठयाए संख्यात गुणा । ५ ते चेव पएसट्ठयाए संख्यात गुणा । (६) ते चेव दव्वट्ठयाए असंख्यात गुणा । (७) ते चेव पएसट्ठयाए असंख्यात गुणा ।

काले वर्ण री ३ अल्पाबोध दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए री जैसी कही इस तरह ही पदादिक १५ बोल री ४५ अल्पाबोध कह देणी ।

(१) सब सु थोड़ा एक गुण करकरा पुद्गल दव्वट्ठयाए ।

(२) ते बकी संख्यात गुण करखरा पुद्गल द्रव्यट्टयाए संख्यात गुणा ।
(३) ते बकी असंख्यात गुण करखरा पुद्गल द्रव्यट्टयाए असंख्यात गुणा ।
(४) ते बकी अनन्त गुण करखरा पुद्गल द्रव्यट्टयाए अनन्त गुणा ।
(१) सब सु थोड़ा एक गुण करखरा पुद्गल पएसट्टयाए ।
(२) ते बकी संख्यात गुण करखरा पुद्गल पएसट्टयाए संख्यात गुणा ।
(३ ते बकी असंख्यात गुण करखरा पुद्गल पएसट्टयाए असंख्यात गुणा ।
४) ते बकी अनन्त गुण करखरा पुद्गल पएसट्टयाए अनन्त गुणा ।

दोनों री भेळी अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

(१) सब सु थोड़ा एक गुण करखरा पुद्गल द्रव्यट्टयाए पएसट्टयाए ।
(२) ते बकी संख्यात गुण करखरा पुद्गल द्रव्यट्टयाए संख्यात गुणा ।
(३) ते चेव पएसट्टयाए संख्यात गुणा । (४) ते बकी असंख्यात गुण करखरा पुद्गल द्रव्यट्टयाए असंख्यात गुणा । (५) ते चेव पएसट्टयाए असंख्यात गुणा । (६) ते बकी अनन्त गुण करखरा पुद्गल द्रव्यट्टयाए अनन्त गुणा । (७) ते चेव पएसट्टयाए अनन्त गुणा ।

जिस तरह १ अल्पाबोध करखरे री कही उसी तरह गुरुवा लहुवा मउवा री तीन तीन अल्पाबोध कह देणी ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद तीजे में ९८ बोल रा बासठीयो चाले सो कहे छै—

१—पहले बोले सब सु थोड़ा गर्भज मनुष्य २ दूजे बोले ते बकी मनुष्यणी संख्यात गुणी जीव रा भेद २, गुणठाणा १४ जोग मनुष्य में १५ मनुष्यणी में १३ (आहारक और आहारक मिश्र टल्या) उपयोग १२ लेश्या ६ ।

३ तीजे बोले ते बकी बादर तेउकाय रा पर्याप्ता असंख्यात गुणा

(६) ते थकी पश्चिम दिशा¹ विसेसाहिया, (७) ते थकी दक्षिण दिशा विसेसाहिया, (८) ते थकी उत्तर दिशा² विसेसाहिया।

सेवं भंते! सेवं भंते!!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद तीजे में २५६ डीगला रो थोकड़ो चाले सो कहे छे —

सर्व लोक रा जीवों री असत् कल्पना (स्थापना) करी ने २५६ डीगला परूप्या।

१ डीगला आउखे रे बंधकों रो, २५५ डीगला आउखे रे अबन्धकों रा।

२ डीगला अपर्याप्ता रा (करण अपर्याप्ता यानी अपर्याप्ता ही मरे), २५४ डीगला पर्याप्ता रा।

४ डीगला सुतां रा (लब्धि और करण अपर्याप्ता यानी समुच्चय अपर्याप्ता) २५२ डीगला जागतां रा।

१—नलिनावती विजय है सामान्य ओछी होना सु सूक्ष्म पुद्गल कम पड़ता है।

२—भवनपतियों ना भवन मां घणी जाग खाली होना थी सूक्ष्म वनस्पति घणा छे ते माटे।

३—उत्तर दिशा में मान सरोवर है जिस में पानी घणा है जिस में जीव घणा है जिस के कर्म काया, योग, उपयोग और लेश्या रा पुद्गल घणा है ते माटे।

८ दीमला समोहिया रा, २४८ दीमला असमोहिया रा।
१६ दीमला सातावेदनीय रा, २४० दीमला असातावेदनीय रा।
३२ दीमला इन्द्रियवउत्ता[3] रा, २२४ दीमला नोइन्द्रियवउत्ता रा।
६४ दीमला अणागारवउत्ता[5] रा १९२ दीमला सागारवउत्ता[6] रा।

१ सब सु थोड़ा आउखे रा बंधक ते थकी अबंधका संख्यात गुणा।
२ सब सु थोड़ा अपर्याप्ता ते थकी पर्याप्ता संख्यात गुणा।
३ सब सु थोड़ा सुता ते थकी जागता संख्यात गुणा।
४ सब सु थोड़ा समोहिया ते थकी असमोहिया संख्यात गुणा।
५ सब सु थोड़ा सातावेदनीय ते थकी असातावेदनीय संख्यात गुणा।
६ सब सु थोड़ा इन्द्रियवउत्ता ते थकी नोइन्द्रियवउत्ता संख्यात गुणा।
७ सब सु थोड़ा अणागारवउत्ता, ते थकी सागारवउत्ता संख्यात गुणा।

१४ बोल री भेली अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

१ सब सु थोड़ा आउखे रा बंधक २ ते थकी अपर्याप्ता संख्यात गुणा ३ ते थकी सुता संख्यात गुणा ४ ते थकी समोहिया संख्यात गुणा ५ ते थकी साता वेदनीय संख्यात गुणा ६ ते थकी इन्द्रियवउत्ता संख्यात गुणा ७ ते थकी अणागारवउत्ता संख्यात गुणा, ८ ते थकी सागारवउत्ता संख्यात गुणा ९ ते थकी नोइन्द्रियवउत्ता विसेसाहिया।

---

१ समोहिया— समुद्घात करने वाला।
असमोहिया— समुद्घात नहीं करने वाला।
३ इन्द्रियवउत्त (इन्द्रियोपयुक्त)— जिनका इन्द्रियों में उपयोग है।
४ नोइन्द्रियवउत्त (नोइन्द्रियोपयुक्त)— जिनका इन्द्रियों में उपयोग नहीं है।
५ अणागारवउत्त (अनाकारोपयुक्त)— अनाकार यानी दर्शन में उपयोग है।
६ सागारवउत्त (साकारोपयुक्त)— जिनका ज्ञान में उपयोग है।

जीव रो भेद १, गुणठाणो १, जोग १, उपयोग ३, लेश्या ३।

४- चौथे बोले ते थकी पांच अनुत्तर विमान रा देवता असंख्यात गुणा। जीव रा भेद २, गुणठाणो १ चौथो, जोग ११, उपयोग ६, लेश्या १ शुक्ल।

५-७-पांचवें बोले ते थकी नवग्रीवेक रे ऊपरली त्रिक रा देवता संख्यात गुणा। छठे बोले ते थकी नवग्रीवेक रे बीचली त्रिक रा देवता संख्यात गुणा। सातवें बोले ते थकी नवग्रीवेक रे नीचली त्रिक रा देवता संख्यात गुणा। जीव रा भेद २-२, गुणठाणा ९-२, तथा ३-३, जोग ११-११, उपयोग ६-६, लेश्या १-१ शुक्ल।

८-११-आठवें बोले ते थकी बारहवें देवलोक रा देवता संख्यात गुणा। नवमें बोले ते थकी ग्यारहवें देवलोक रा देवता संख्यात गुणा। दसवें बोले ते थकी दसवें देवलोक रा देवता संख्यात गुणा। ग्यारहवें बोले ते थकी नवमें देवलोक रा देवता संख्यात गुणा। जीव रा भेद १-२, गुणठाणा ४-४, जोग ११-११, उपयोग ६-६, लेश्या १-१ शुक्ल।

१२-१३-बारहवें बोले ते थकी सातवीं नारकी रा नेरीया असंख्यात गुणा। तेरहवें बोले ते थकी छठी नारकी रा नेरीया असंख्यात गुणा। जीव रा भेद १-३, गुणठाणा ४-४, जोग ११-११, उपयोग ६-६, लेश्या १-१ कृष्ण।

१४-१५-चवदवें बोले ते थकी आठवें देवलोक रा देवता असंख्यात गुणा। पन्द्रहवें बोले ते थकी सातवें देवलोक रा देवता असंख्यात गुणा। जीव रा भेद २-२, गुणठाणा ४-४ जोग ११-११, उपयोग ६-६, लेश्या १-१ शुक्ल।

१६-सोलहवें बोले ते थकी पांचवीं नारकी रा नेरीया असंख्यात गुणा।

जीव रा भेद २, गुणठाणा ४, जोग ११, उपयोग ६ लेश्या २ नील और कृष्ण नील रा घणा, कृष्ण रा थोड़ा।

१७—सतरहवें बोले छठे देवलोक रा देवता असंख्यात गुणा। जी १ गु ४, जो ११, उ ६, ले. १ शुक्ल।

१८—अठारहवें बोले चौथी नारकी रा नेरीया असंख्यात गुणा। जी. १ गु ४ जो ११ उ. ६, ले १ नील।

१९—उगणीसवें बोले पांचवें देवलोक रा देवता असंख्यात गुणा। जी. २ गु ४ जो ११ उ. ६, ले १ पद्म।

२०—बीसवें बोले तीजी नारकी रा नेरीया असंख्यात गुणा। जी. २ गु ४ जो ११ उ. ६, ले. १ कापोत और नील, कापोत रा घणा नील रा थोड़ा।

२१-२२—इक्कीसवें बोले चौथे देवलोक रा देवता असंख्यात गुणा। बाईसवें बोले तीजे देवलोक रा देवता असंख्यात गुणा। जी २ २ गु ४-४, जो ११-११, उ ६-६, ले. १ १ पद्म।

२३—तेईसवें बोले दूजी नारकी रा नेरीया असंख्यात गुणा। जी २, गु ४ जो ११ उ. ६ ले १ कापोत।

२४—चोबीसवें बोले सम्मूर्छिम मनुष्य असंख्यात गुणा। जी १, गु १, जो ३ उ. ४* लेश्या ३।

२५-२८—पचीसवें बोले दूजे देवलोक रा देवता असंख्यात गुणा। छब्बीसवें बोले दूजे देवलोक री देवी संख्यात गुणी। सत्ताइसवें बोले पहले देवलोक रा देवता संख्यात गुणा। अठाइसवें बोले पहले देव लोक री देवी संख्यात गुणी। जी २-२, गु ४-४ जो ११-११ उ ६ ६ ले. १-१ तेजो।

२९-३०—गुणतीसवें बोले भवनपति देवता असंख्यात गुणा। तीसवें बोले

---

* कोई आचार्य चक्षुदर्शन नहीं गिने तिणरी अपेक्षा उ ३ उपयोग कहवे छ।

भवनपति री देवी संख्यात गुणी। जीव रा भेद देवता में २ देवी में २, गु ४-४, जो ११-११, उ. ६-६, ल ४-४ कृष्ण नील कपोत तेजो।

३१ इक्कीसवें बोल पहली नारकी रा नेरीया असंख्यात गुणा। जी ३, गु ४ जो ११, उ ६ ले १ कपोत।

३२-३७—बत्तीसवें बोल खेचर पुरुष तिरिक्ख (तिर्यंच) जोणीया असंख्यात गुणा। तेतीसवें बोल खेचरणी संख्यात गुणी। चोतीसवें बोल थलचर पुरुष तिरिक्ख जोणीया संख्यात गुणा। पैंतीसवें बोल थलचरणी संख्यात गुणी। छत्तीसवें बोल जलचर पुरुष तिरिक्ख जोणीया संख्यात गुणा। सैंतीसवें बोल जलचरणी संख्यात गुणी। जी २-२, गु ५-५ जो १३-१३, उ ६-६, ल. ६-६।

३८-३९—अड़तीसवें बोल वाणव्यन्तर देवता संख्यात गुणा। उगुणचालीसवें बोले वाणव्यन्तर री देवी संख्यात गुणी। जीव रा भेद देवता में ३, देवी में २ गु ४-४, जो ११-११ उ. ६-६, ल. ४-४।

४०-४१—चालीसवें बोल ज्योतिषी देवता संख्यात गुणा। इकतालीसवें बोले ज्योतिषियों री देवी संख्यात गुणी। जी २-२, गु ४-४ जो ११-११ उ ६-६, ल १-१ तेजो।

४२-४४—बयालीसवें बोल खेचर नपुंसक संख्यात गुणा। तयालीसवें बोल थलचर नपुंसक संख्यात गुणा। चमालीसवें बोल जलचर नपुंसक संख्यात गुणा। जी २ २ (१३-१४) तथा ४-४ (११ से १४ तक) गु ५-५, जो १३-१३, उ ६ ६, ले. ६-६।

४५ पैंतालीसवें बोले चौइन्द्रिय रा पजापता संख्यात गुणा। जी. १ गु १ जो २, उ. ४, ल ३।

४६—छयालीसवें बोल पंचेन्द्रिय रा पजापता विसेसाहिया। जी २, गु १२,

जो १४, उ. १०, ले. ६।

४७-४८-सैंतालीसवें बोले बेइन्द्रिय रा पर्याप्ता विसेसाहिया।
अड़तालीसवें बोले तेइन्द्रिय रा पर्याप्ता विसेसाहिया। जी १-१, गु १-१ जो २-२ उ. ३-३ ले. ३-३।

४९-गुणचालीसवें बोले पंचेन्द्रिय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। जी. ३ गु १ जो ४, उ. ८ तथा ६, ले. ६।

५०-५१पचासवें बोले चौइन्द्रिय रा अपर्याप्ता विसेसाहिया। इकावनवें बोले तेइन्द्रिय रा अपर्याप्ता विसेसाहिया। बावनवें बोले बेइन्द्रिय रा अपर्याप्ता विसेसाहिया। जी १-१, गु २-२, जो २-३, उपयोग बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय में ५-५, चौइन्द्रिय में ६ ले ३-३।

५३-५७-तेपनवें बोले प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय रा पर्याप्ता असंख्यात गुणा। चौपनवें बोले बादर निगोद रा पर्याप्ता असंख्यात गुणा। पचावनवें बोले बादर पृथ्वी काय रा पर्याप्ता असंख्यात गुणा। छप्पनवें बोले बादर अपकाय रा पर्याप्ता असंख्यात गुणा। सत्तावनवें बोले बादर वायुकाय रा पर्याप्ता असंख्यात गुणा। जी १-१, गु १-१, जोग चारों में १-१, वायुकाय में ४ उ. ३-३, ले. ३-३।

५८-६३-अठावनवें बोले बादर तेउकाय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। गुणसठवें बोले प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। साठवें बोले बादर निगोद रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। इकसठवें बोले बादर पृथ्वीकाय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। बासठवें बोले बादर अपकाय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। तेसठवें बोले बादर वायुकाय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। जी १-१ गु १-१, जो. ३-३, उ. ३-३, लेश्या पृथ्वी पाणी वनस्पति में ४-४, तेउ वायु निगोद में ३-३।

६४ ७३— चोसठवें बोले सूक्ष्म तेउकाय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा । पैंसठवें बोले सूक्ष्म पृथ्वीकाय रा अपर्याप्ता विसेसाहिया । छ्यासठवें बोले सूक्ष्म अपकाय रा अपर्याप्ता विसेसाहिया । सड़सठवें बोले सूक्ष्म वायुकाय रा अपर्याप्ता विसेसाहिया । अड़सठवें बोले सूक्ष्म तेउकाय रा पर्याप्ता संख्यात गुणा । गुणन्तरवें बोले सूक्ष्म पृथ्वीकाय रा पर्याप्ता विसेसाहिया । सित्तरवें बोले सूक्ष्म अपकाय रा पर्याप्ता विसेसाहिया । इकहत्तरवें बोले सूक्ष्म वायुकाय रा पर्याप्ता विसेसाहिया । बहोत्तरवें बोले सूक्ष्म निगोद रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा । तेहत्तरवें बोले सूक्ष्म निगोद रा पर्याप्ता संख्यात गुणा, जी १-१, गु १-१, जोग अपर्याप्ता में ३-३, पर्याप्ता में १-१, उ० ३-३, ले ३-३ ।

७४— चोहत्तरवें बोले अभवी जीव अनन्त गुणा । जी १४, गु. १, जो १३, उ ६, ले ६ ।

७५— पिचंतरवें बोले पड़वाई समदृष्टि जीव अनन्त गुणा। जी. १४, गु १४, जो १५, उ १२, ले ६ ।

७६— छीयंतरवें बोले सिद्ध भगवंतजी अनन्त गुणा जीव रा भेद— नहीं । गुणठाणा—नहीं । जोग—नहीं । उपयोग २ । लेश्या—नहीं ।

७७— सितन्तरवें बोले बादर वनस्पतिकाय रा पर्याप्ता अनन्त गुणा, जी १, गु १, जो १, उ ३, ले ३ ।

७८— इठन्तरवें बोले बादर रा पर्याप्ता विसेसाहिया, जी ६, गु १४, जो १५, उ. १२, ले ६ ।

७९— गुणीयासीवें बोले बादर वनस्पतिकाय रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा, जी. १, गु. १, जो ३, उ ३, ले ४ ।

८०— असीवें बोले बादर रा अपर्याप्ता विसेसाहिया, जी ६, गु ३, जो ५, उ. ८ तथा ६, ले ६ ।

८१— इक्यासीवें बोले समुच्चय बादर विसेसाहिया, जी. १२, गु १४,

जो १५ उ १२ स ६।

८२-८५— बीयासीवें बोले सूक्ष्म निगोद रा अपर्याप्ता असंख्यात गुणा। तीयासीवें बोल सूक्ष्म रा अपर्याप्ता विसेसाहिया। चौरासीवें बोल सूक्ष्म निगोद रा पर्याप्ता संख्यात गुणा। पचीयासीवें बोल सूक्ष्म रा पर्याप्ता विसेसाहिया। जी १-१ गु १-१, जोग अपर्याप्ता में ३ पर्याप्ता में १ उ ३- स ३-३।

८६— छीयासीवें बोल समुच्चय सूक्ष्म विसेसाहिया। जी ४, गु १, जो ३, उ ३, स ३।

८७— सीत्यासीवें बोल भव सिद्धिया जीव विसेसाहिया, जी १४, गु १४ जो १५, उ १२, स ६।

८८-८९ अठ्यासीवें बोल निगोदिया जीव विसेसाहिया। नव्यासीवें बोल वनस्पतिया जीव विसेसाहिया। जी ४-४ गु १-१ जो ३-३, उ ३-३ सरव वनस्पति में ४ निगोद म ३।

९०— नियाणवें बोल एकेन्द्रिय जीव विसेसाहिया जी ४, गु १ जो ५, उ ३, ल ४।

९१— इकाणवें बोल तिर्यञ्च जीव विसेसाहिया। जी १४ गु ५, जो १३ उ ६ ले ६।

९२— बाणवें बोल मिथ्यात्वी जीव विसेसाहिया। जी १४ गु १, जो १३ उ ६ स ६।

९३— तराणवें बोल अव्रती जीव विसेसाहिया जी १४ गु ४, जो १३ उ ६ ले ६।

९४— चोराणवें बोल सकषायी जीव विसेसाहिया। जी १४ गु १, जो १५ उ १ स ६।

९५— पचाणवें बोल छद्मस्थ जीव विसेसाहिया। जी १४ गु १२, जो १५ उ १ ले ६।

९६— छ्याणवें बोल सजोगी जीव विसेसाहिया। जी १४, गु १३,

बो १५, च १२, ते ६।

५७-६८—सत्तावनें बोले संसारी जीव विसेसाहिया। अठावनें बोल सब जीव मिसेसाहिया। बो १४-१४ गु. १४-१४ आ १५-१५ छ० १०-१२, ते ६-६।

१ एक सब सु थोड़ा ४ चार अनन्त गुणा ३५ असंख्यात गुणा १८ संख्यात गुणा और ३० विसेसाहिया =९८। ६ अवेदी २३ पुरुषवेदी, १६ सवेदी १ अवेदी, ५१ नपुंसकवेदी=६८।
३ बोल नेमा भवी (४, ५७, ८०)। १ बोल अभवी (७४)। १ बोल नोभवी नो अभवी (७६)। ९३ बोल भवी अभवी दोनों ही=९८।
३ बोल असास्ता (२४, ६५, ९०)। ९५ बोल सास्ता=९८।

सेवं भंते। सेवं भंते ॥

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद ४ चौथे में स्थिति द्वार चाले सो कहे छै—

समुच्चय नारकी रे नरीयों री स्थिति जघन्य १०००० दस हजार वर्ष री, उत्कृष्टी ३३ सागर री। अपर्याप्तों री जघन्य उत्कृष्टी अन्तमुहूर्त री। पर्याप्तों री जघन्य १०००० दस हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त ऊणी, उत्कृष्टी ३३ सागर अन्तमुहूर्त ऊणी। पहली नारकी रे नरीये री स्थिति जघन्य १०००० दस हजार वर्ष री उत्कृष्टी १ सागर री। अपर्याप्ते री जघन्य उत्कृष्टी अन्तमुहूर्त री,पर्याप्ते री जघन्य १०००० दस हजार वर्ष अन्तमुहूर्त ऊणी, उत्कृष्टी १ सागर अन्तमुहूर्त ऊणी। दूजी नारकी रे नरीये री स्थिति ज० १ सागर री उ० ३ सागर री। तीजी नारकी रे नरीये री स्थिति ज० ३ सागर री, उ० ७ सागर री। चौथी नारकी रे नरीये री

स्थिति ज० ७ सागर री, उ० १० सागर री। पांचवीं नारकी रे नरीये री स्थिति ज० १ सागर री उ १७ सागर री। छठी नारकी रे नरीये री स्थिति ज० १७ सागर री, उत्कृष्टी २२ सागर री। सातवीं नारकी रे नेरिये री स्थिति जघन्य २२ सागर री, उत्कृष्टी ३३ सागर री। अपर्याप्तों री सब री जघन्य उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त री। पर्याप्तों री समुच्चय माफक कह देणी सवरं एतलो विशेष जघन्य उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त कम कह देणी। ८×३=२४ (अलावा)।

समुच्चय देवता री स्थिति समुच्चय नारकी री परे कह देणी। देवी री स्थिति जघन्य १ ० दस हजार वर्ष री उत्कृष्टी ५५ पल री। अपर्याप्ता देवी री स्थिति ज उ अन्तमुहूर्त री। पर्याप्ता देवी री ज १० दस हजार वष अन्तमुहूर्त ऊणी, उ ५५ पल अन्तमुहूर्त ऊणी। समुच्चय भवनपति असुरकुमार देवता री स्थिति ज १ ०० दस हजार वर्ष री उ १ सागर झाझेरी। देवी री ज० १००० वष री उ ४॥ पल्योपम री। नवनिकाय रे देवता री स्थिति ज १ ००० वष री उ० देश ऊणी २ पल्योपम री। देवी री ज १ ०० वर्ष री, उ० देश ऊणी १ पल री। अपर्याप्तों री ज उ० अन्तमुहूर्त री। पर्याप्तों री स्थिति जितनी जितनी हुवे तिण में अन्तमुहूर्त ऊणी कह देणी। (१ समुच्चय देवता १ समुच्चय भवनपति १० असुरकुमार आदि, ये १२×६ (देवता रा ३ देवी रा ३)=७२ अलावा हुवा)। समुच्चय पृथ्वीकाय री स्थिति ज अन्तमुहूर्त री उ २२ वष री। अपर्याप्तों री ज उ अन्तमुहूर्त री। पर्याप्तों री ज अन्तमुहूर्त री, उ० २२ ० वर्ष अन्तमुहूर्त ऊणी। सूक्ष्म पृथ्वीकाय री ज उ अन्तमुहूर्त री, अपर्याप्तों री ज उ अन्तमुहूर्त री पर्याप्तों री ज उ अन्तमुहूर्त री। बादर पृथ्वीकाय री समुच्चय पृथ्वीकाय माफक कह देणी।

समुच्चय अपकाय री स्थिति ज अन्तमुहूर्त री, उ० ७००० वर्ष री। समुच्चय तेउकाय री स्थिति ज अन्तमुहूर्त री, उ तीन अहोरात्रि री।

समुच्चय वायुकाय री स्थिति ज० अन्तर्मुहूर्त, उ० ३००० वर्ष री। समुच्चय वनस्पति री स्थिति ज० अन्तर्मुहूर्त री, उ० १०००० वर्ष री। बाकी सब बोल समुच्चय पृथ्वीकाय माफक कह देणा। नवरं पटलो विशेष स्थिति आप आपरी कह दणी। ५×९=४५।

बेइन्द्रिय री स्थिति ज० अन्तर्मुहूर्त री, उ० १२ वर्ष री। तेइन्द्रिय री स्थिति ज० अन्तर्मुहूर्त री उ० ४९ दिन री। चौइन्द्रिय री स्थिति ज० अन्तर्मुहूर्त री उ० ६ महीनों री। अपर्जापतों री तीनों विकलेन्द्रिय में ज० उ० अन्तर्मुहूर्त री। पर्जापतों री समुच्चय विकलेन्द्रिय माफक कह देणी, नवरं पटलो विशेष अन्तर्मुहूर्त कम कहणी। ३×३=९।

समुच्चय तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय री स्थिति ज० अन्तर्मुहूर्त, उ० ३ पल्योपम री। अपर्जापतों री ज० उ० अन्तर्मुहूर्त री, पर्जापतों री ज० अन्तर्मुहूर्त री, उ० ३ पल्योपम अन्तर्मुहूर्त ऊणी। सम्मूर्च्छिम तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय री स्थिति ज० अन्तर्मुहूर्त री उ० क्रोड पूर्व री। अपर्जापतों री ज० उ० अन्तर्मुहूर्त री। पर्जापतों री ज० अन्तर्मुहूर्त री उ० क्रोड पूर्व अन्तर्मुहूर्त ऊणी। गर्भज तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय समुच्चय तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय माफक कह देणा। जलचर तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय री स्थिति ज० अन्तर्मुहूर्त री, उ० क्रोड पूर्व री, अपर्जापतों री ज० उ० अन्तर्मुहूर्त री, पर्जापतों री ज० अन्तर्मुहूर्त री, उ० क्रोड पूर्व अन्तर्मुहूर्त ऊणी। सम्मूर्च्छिम जलचर तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय और गर्भज जलचर तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय री स्थिति जलचर तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय माफक कह देणी।

स्थलचर चौपद री स्थिति ज० अन्तर्मुहूर्त री, उ० ३ पल्योपम री। अपर्जापतों री ज० उ० अन्तर्मुहूर्त री। पर्जापतों री ज० अन्तर्मुहूर्त री, उ० ३ पल्योपम अन्तर्मुहूर्त ऊणी। सम्मूर्च्छिम स्थलचर चौपद री स्थिति ज० अन्तर्मुहूर्त री उ० ८४००० चौरासी हजार वर्ष री। अपर्जापतों री ज० उ० अन्तर्मुहूर्त री, पर्जापतों री ज० अन्तर्मुहूर्त री, उ० ८४०००

चौरासी हजार वर्ष अन्तमुहूर्त ऊणी। गर्भज स्थलचर चौपद री स्थिति ज० अन्तमुहूर्त री, उ० ३ पल्योपम री, अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तमुहूर्त री, पर्याप्तों री ज० अन्तमुहूर्त री, उ० ३ पल्योपम अन्तमुहूर्त ऊणी।

स्थलचर उरपुर री स्थिति जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय माफक कह देणी नवरं एटलो विशेष सम्मूर्छिम उरपर में उ० स्थिति ५३००० वर्ष री कह देणी।

स्थलचर भुजपर री स्थिति जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय माफक कह देणी। नवर एटलो विशेष सम्मूर्छिम भुजपर में उ० स्थिति ४२० वर्ष री कह देणी। खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय री स्थिति ज० अन्तमुहूर्त री उ० पल्योपम रे असंख्यातवें भाग री। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तमुहूर्त री, पर्याप्तों री ज० अन्तमुहूर्त री उ० पल्योपम रे असंख्यातवें भाग में अन्तमुहूर्त ऊणी। सम्मूर्छिम खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय री स्थिति ज० अन्तर्मुहूर्त री, उत्कृष्ट ७२ बहत्तर हजार वर्ष री। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तर्मुहूर्त री, पर्याप्त री ज० अन्तमुहूर्त री उ० ७२ ० वर्ष में अन्तर्मुहूर्त ऊणी। गर्भज खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय री स्थिति ज० अन्तर्मुहूर्त री उ० पल्योपम रे असंख्यातवें भाग। अपर्याप्ता पर्याप्तों री स्थिति समुच्चय खेचर नी परे कह देणी। ६×६=५४।

मनुष्य री स्थिति ज० अन्तमुहूर्त री उ० तीन पल्योपम री। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तर्मुहूर्त री। पर्याप्तों री ज० अन्तमुहूर्त री उ० ३ पल्योपम अन्तमुहूर्त ऊणी। सम्मूर्छिम मनुष्य रे अपर्याप्तों री स्थिति ज० उ० अन्तमुहूर्त री। गर्भज मनुष्य री स्थिति ज० अन्तर्मुहूर्त री, उ० तीन पल्योपम में अन्तमुहूर्त ऊणी। अपर्याप्ता तथा पर्याप्ता समुच्चय गर्भज मनुष्य री परे कह देणा = ७।

वाणव्यन्तर देवता री स्थिति ज० १ दस हजार वर्ष री, उ० १ पल्योपम री। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तर्मुहूर्त री। पर्याप्तों री ज०

१०००० वर्ष अन्तमु हुर्त ऊणी, उ० १ पल्योपम अन्तमु हूर्त ऊणी। वाण व्यन्तर री देवी री ज० १०००० वर्ष री, उ० आधा पल्योपम री। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तर्मुहूर्त री। पर्याप्तों री ज० १०००० वर्ष अन्तमु हुर्त ऊणी, उ० आधा पल्योपम में अन्तमु हुर्त ऊणी = २ × ३ = ६।

समुच्चय ज्योतिषी देवता री स्थिति ज० पल्योपम रे आठवें भाग, उ० १ पल्योपम और १ लाख वर्ष री। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तर्मुहूर्त री। पर्याप्तों री ज० पल्योपम रे आठवें भाग अन्तमु हुर्त ऊणी, उ० १ पल्योपम और १ लाख वर्ष में अन्तमु हूर्त ऊणी। ज्योतिषी री देवी री ज० पल्योपम रे आठवें भाग, उ० आधा पल्योपम और पचास हजार वर्ष री। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तमु हूर्त री। पर्याप्तों री ज० पल्योपम रे आठवें भाग अन्तमु हुर्त ऊणी उ० आधा पल्योपम और पचास हजार वर्ष में अन्तमु हूर्त ऊणी। चन्द्रमा री स्थिति ज्योतिषी देवता माफक कह देणी, नवर पटलो विशेष ज० पल्योपम रे आठवें भाग री जगह पाव पल्योपम री कह देणी।

सूर्य री स्थिति चन्द्रमा माफक कह देणी नवरं पटलो विशेष उ० स्थिति में देवता में एक पल्योपम और १००० वर्ष कह देणी। देवी में उ० आधो पल्योपम और ५०० वर्ष री कह देणी।

ग्रह री स्थिति चन्द्रमा माफक कह देणो नवरं पटलो विशेष उ० स्थिति देवता में सिर्फ एक पल्योपम री कहणी और देवी में उ० स्थिति सिर्फ आधा पल्योपम री कहणी।

नक्षत्र री स्थिति ज० पाव पल्योपम री उ० आधा पल्योपम री। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तमु हूर्त री पर्याप्तों री ज० पाव पल्योपम में अन्तमु हूर्त ऊणी, उ० आधा पल्योपम में अन्तमु हूर्त ऊणी। देवी री स्थिति ज० पाव पल्योपम री, उ० पाव पल्योपम भाभेरी। अपर्याप्तों री

ज० द० अन्तमुहूर्त री। पर्याप्तों री ज० पाव पल्योपम अन्तमुहूर्त ऊणी, उ० पाव पल्योपम झाझेरी में अन्तमुहूर्त ऊणी।

तारा री स्थिति ज० पल्योपम रे आठवें भाग उ० पाव पल्योपम री। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तमुहूर्त री। पर्याप्तों री ज० पल्योपम रे आठवें भाग में अन्तमुहूर्त ऊणी उ० पाव पल्योपम में अन्तमुहूर्त ऊणी। देवी री स्थिति ज० पल्योपम रे आठवें भाग उ० पल्योपम रे आठवें भाग झाझेरी। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तमुहूर्त री। पर्याप्तों री ज० पल्योपम रे आठवें भाग में अन्तमुहूर्त ऊणी, उ० पल्योपम रे आठवें भाग झाझेरी में अन्तमुहूर्त ऊणी ६×६=३६।

विमानिक देवता री स्थिति ज० १ पल्योपम री उ० ३३ सागरोपम री। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तमुहूर्त री। पर्याप्तों री ज० १ पल्योपम अन्तमुहूर्त ऊणी उ० ३३ सागरोपम अन्तमुहूर्त ऊणी। देवी री स्थिति ज० १ पल्योपम री उ० ५५ पल्योपम री। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तमुहूर्त री। पर्याप्तों री ज० १ पल्योपम में अन्तमुहूर्त ऊणी, उ० ५५ पल्योपम में अन्तमुहूर्त ऊणी = ६।

पहला देवलोक रे देवता री स्थिति ज० १ पल्योपम री उ० २ सागर री। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तमुहूर्त री। पर्याप्तों री ज० १ पल्योपम में अन्तमुहूर्त ऊणी उ० २ सागरोपम में अन्तमुहूर्त ऊणी।

समुच्चय देवी री स्थिति ज० १ पल्योपम री उ० ५० पल्योपम री। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तमुहूर्त री। पर्याप्तों री ज० १ पल्योपम में अन्तमुहूर्त ऊणी उत्कृष्टी ५० पल्योपम में अन्तमुहूर्त ऊणी। परिग्रही देवी री ज० १ पल्योपम री उ० ७ पल्योपम री। अपर्याप्तों री ज० उ० अन्तमुहूर्त री। पर्याप्तों री ज० १ पल्योपम अन्तमुहूर्त ऊणी उ० ७ पल्योपम अन्तमुहूर्त ऊणी। अपरिग्रही देवी री स्थिति समुच्चय पहला देवलोक री देवी माफक सह देवी = १२।

अपर्याप्ताओं री सगळां री ज० उ० अन्तमुहूर्त री। पर्याप्ताओं री सगळां री आप आप री स्थिति में अन्तमुहूर्त ऊणो कह देणो १८×३=५४।

सर्वार्थसिद्ध रे देवता री स्थिति जघन्य उत्कृष्ट ३३ सागरोपम री। अपर्याप्ताओं री ज० उ० अन्तमुहूर्त री। पर्याप्ता री ३३ सागरोपम में अन्तमुहूर्त ऊणी = ३।

सब मिल कर ३४६।

सेवं भंते! सेवं भंते!!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद पांचवें में जीव परजवा द्वार चाले सो कहे है—

अहो भगवान्! परजवा कितना प्रकार रा? हे गौतम! परजवा २ प्रकार रा— जीव परजवा अजीव परजवा।

१— अहो भगवान्! जीव परजवा किं संख्याता असंख्याता अनन्ता? हे गौतम! नो संख्याता नो असंख्याता अनन्ता। अहो भगवान्! कुण कारण? हे गौतम! २३ दण्डक रा जीव असंख्याता वनस्पति और सिद्ध भगवान् अनन्ता। इण कारण जीव परजवा नो संख्याता नो असंख्याता अनन्ता। अहो भगवान्! नारकी रे नेरीयों रा परजवा कितना? संख्याता असंख्याता, अनन्ता? हे गौतम! अनन्ता परजवा। अहो भगवान्! क्यूं कारण से अनन्ता परजवा? हे गौतम! नारकी रो एक नेरीयो नारकी रे दूसरा नेरीयों रे साथ में द्रव्य अपेक्षा तुल्य प्रदेश अपेक्षा तुल्य अवगाहना अपेक्षा चौठाणवडीया। स्थिति अपेक्षा चौठाणवडीया वर्णादिक १ भाव ६ उपयोग आसरी छठाणवडीया। नारकी कही जिस तरह ही ११ दण्डक देवता रा और १ दण्डक तिर्यञ्च

पंचेन्द्रिय रो ये १४ दण्डक कह देणा नवरं पहलो विशेष ज्योतिषी विमानिक में स्थिति तिठाण कहीया कह देणी।

५ स्थावर द्रव्य थकी तुल्ला, प्रदेश थकी तुल्ला, ओघेणा थकी चौठाण वड या, स्थिति तिठाण वडीया, पर्यायिक ? बोल, ३ उपयोग आसरी छठाण वडया। तीन विकलेन्द्रिय द्रव्य थकी तुल्ला; प्रदेश थकी तुल्ला अ घेणा थकी चौठाण वडीया, स्थिति तिठाण वडीया पर्यायिक २० बोल बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय में ५ उपयोग आसरी चौरिन्द्रिय में ६ उपयोग आसरी छठाण वडीया। मनुष्य द्रव्य थकी तुल्ला, ओघेणा थकी चौठाण वडीया, स्थिति चौठाण वडीया, पर्यायिक २० बोल, १ उपयोग आसरी छठाण वडीया, केवल ज्ञान केवल दर्शन आसरी तुल्ला।

२— नारकी रा ६६ सूत्र—

जघन्य ओघेणा रा नारकी रा नरीया, जघन्य ओघेणा रा नारकी रा नरीया द्रव्य थकी तुल्ला, प्रदेश थका तुल्ला ओघेणा थकी तुल्ला, स्थिति थकी चौठाण वडीया, (चौठाण वडीया ते किम ? ज १०००० वष उ ३३ सागरोपम से माटे)। वर्ण्य दिक २० बोल ६ उपयोग आसरी छठाण वडीया। इणी तरह उत्कृष्टी ओघेणा कह देणी, नवरं पल्का विशेष स्थिति दुठाण वडीया कह देणी। मझिम ओघेणा रा नारकी रा नेरीया, मझिम ओघेणा रा नारकी रा नरीया द्रव्य थकी तुल्ला, प्रदेश थकी तुल्ला, ओघेणा थकी चौठाण वडीया, स्थिति थकी चौठाण वडीया, पर्यायिक २ बोल, ६ उपयोग आसरी छठाण वडीया।

जघन्य स्थिति रा नारकी रा नरीया, जघन्य स्थिति रा नारकी रा नरीया द्रव्य थकी तुल्ला, प्रदेश थकी तुल्ला, ओघेणा थकी चौठाण वडीया, स्थित थकी तुल्ला, पर्या दक २ बोल ६ उपयोग आसरी छठाण वडीया इणी तरह ही उत्कृष्टी स्थिति बोल देणी, जघन्य स्थिति रे बदल उत्कृष्टी स्थिति बोल देणी। इणा तरह ही मझम स्थिति कह देणी,

स्थिति आसरी चौठाण वडीया कह देणा।

जघन्य गुण कालो वर्ण रा नारकी रा नेरीया जघन्य गुण कालो वण रा नेरीयों रे साथ द्रव्य करी तुल्या, प्रदेश करी तुल्या ओपेक्षा करी चौठाण वडीया। स्थिति करी चौठाण वडीया, वर्णादिक १६ बोल ६ उपयोग आसरी छठाण वडीया जघन्य गुण काला वण आसरी तुल्या। इसी तरह उत्कृष्टो कालो वर्ण कह देणो। मध्यम गुण काला वर्ण रा नारकी रा नेरीया इसी तरह हो कह देणा नवरं वर्णादिक २ बोल आसरी छठाण वडीया कहणा। कालो वर्ण कह्यो जिस तरह ही १६ वर्णादिक कह देणा।

जघन्य मतिज्ञान रा नारकी रा नेरीया जघन्य मतिज्ञान रा नारकी रा नेरीयों रे साथ द्रव्य करी तुल्या, प्रदेश करी तुल्या ओपेक्षा करी चौठाण वडीया स्थिति चौठाण वडीया वर्णादिक २० बोल ५ उपयोग आसरी छठाण वडीया जघन्य मतिज्ञान आसरी तुल्या। इसी तरह ही उत्कृष्ट मतिज्ञान में कह देणा। इसी तरह हो मध्यम मतिज्ञान में कह देणा नवरं ६ उपयोग आसरी छठाण वडीया कहणा। मतिज्ञान कह्या जिस तरह ही श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और तीन अज्ञान कह देणा।

जघन्य चक्षुदर्शन रा नारकी रा नेरीया जघन्य चक्षुदर्शन रा नारकी रा नेरीयों रे साथे द्रव्य करी तुल्या, प्रदेश करी तुल्या ओपेक्षा करी चौठाण वडीया स्थिति चौठाण वडीया वर्णादिक २० बोल ८ उपयोग आसरी छठाण वडीया जघन्य चक्षुदर्शन आसरी तुल्या। इसी तरह ही उत्कृष्ट चक्षुदर्शन कह देणो। इसी तरह मध्यम चक्षुदर्शन कह देणो नवरं पहलो विशेष उपयोग ६ कहणा। चक्षुदर्शन कह्यो जिस तरह ही अचक्षुदर्शन और अवधिदर्शन कह देणा =३३।

नारकी री तरह हो १ भवनपति कह देणा नवरं पहलो विशेष असुरकुमारां में स्थिति चौठाण वडीया कह देणी =३३×१ =३३ ।

(जघन्य ओगेणा रा पृथ्वीकाय जघन्य ओगेणा रा पृथ्वीकाय रे साथे द्रव्य थकी तुल्ला, प्रदेश थकी तुल्ला, ओगेणा थकी तुल्ला स्थिति तिठाण वडीया, वर्णादिक २० बोल, ३ उपयोग आसरी छठाण, वडीया । इणी तरह उत्कृष्टी ओगेणा में कह देणी । इणी तरह मज्झिम ओगेणा में कह देणी नवरं पटलो विशेष मज्झिम में ओगेणा चौठाणवडीया कह देणी ।

जघन्य स्थिति रा पृथ्वीकाय, जघन्य स्थिति रा पृथ्वीकाय रे साथे द्रव्य थकी तुल्ला, प्रदेश थकी तुल्ला ओगेणा थकी चौठाण वडीया, स्थिति आसरी तुल्ला । वर्णादिक २० बोल, ३ उपयोग आसरी छठाण वडीया । इणी तरह ही उत्कृष्टी स्थिति कह देणी । इणी तरह ही मज्झिम स्थिति कह देणी, नवरं पटलो विशेष मज्झिम स्थिति में स्थिति तिठाण वडीया कहणी ।

जघन्य गुण काले वर्ण रा पृथ्वीकाय जघन्य गुण काले वर्ण रा पृथ्वीकाय रे साथे द्रव्य थकी तुल्ला, प्रदेश थकी तुल्ला ओगेणा थकी चौठाण वडीया स्थिति आसरी तिठाण वडीया, वर्णादिक १६ बोल ३ उपयोग आसरी छठाण वडीया, जघन्य गुण काले वर्ण आसरी तुल्ला । इणी तरह ही उत्कृष्टो गुण कालो वर्ण कह देणो । इण तरह ही मज्झिम गुण काले वर्ण रो कह देणो, नवर पटलो विशेष वर्णादिक २० बोल कहणा । कालो कयो जिस तरह ही १६ वर्णादिक और कह देणा ।

जघन्य मति अज्ञान रा पृथ्वीकाय, जघन्य मति अज्ञान रा पृथ्वीकाय रे साथे द्रव्य थकी तुल्ला, प्रदेश थकी तुल्ला, ओगेणा आसरी चौठाण वडीया स्थिति थकी तिठाण वडीया वर्णादिक २० बोल २ उपयोग आसरी छठाण वडीया । इण तरह ही उत्कृष्टो मति अज्ञान कह देणो । इण तरह ही मज्झिम मति अज्ञान कह देणो नवरं पटलो विशेष उपयोग ३ कहणा । मति अज्ञान कयो जिस तरह ही श्रुत अज्ञान कह देणो । पृथ्वीकाय कही इसी तरह ही ४ स्थावर कह देणा =५×७२=३७२ ।

जघन्य आपणा रा बेइन्द्रिय जघन्य ओपणा रा बेइन्द्रियां र साथ द्रव्य थकी तुल्य, प्रदेश थकी तुल्य, आपणा थकी तुल्य स्थिति आसरी तिठाण वडीया, वर्णादिक २० बोल, ५ उपयोग आसरी छठाण वडीया। जघन्य आपेणा कही जिस तरह ही उत्कृष्टी पण कहणा, नवरं एतला विशेष उपयोग ६ कहणा। मध्यम ओपणा रा बेइन्द्रिय, मध्यम आपणा रा बेइन्द्रिय द्रव्य थकी तुल्य, प्रदेश थकी तुल्य आपणा थकी चौठाण वडीया स्थिति आसरी तिठाण वडीया, वर्णादिक २० बोल ५ उपयोग आसरी छठाण वडीया।

जघन्य स्थिति रा बेइन्द्रिय, जघन्य स्थिति रा बेइन्द्रियों रे साथ द्रव्य थकी तुल्य प्रदेश थकी तुल्य आपणा थकी चौठाण वडीया, स्थिति आसरी तुल्य। वर्णादिक २० बोल, ६ उपयोग आसरी छठाण वडीया इण तरह ही उत्कृष्ट स्थिति रा पण कहणा नवरं एतला विशेष उपयोग ५ कहणा।

मध्यम स्थिति रा बेइन्द्रिय मध्यम स्थिति रा बेइन्द्रियों रे साथे द्रव्य थकी तुल्य प्रदेश थकी तुल्य, ओपेणा थकी चौठाण वडीया स्थिति आसरी तिठाण वडीया वर्णादिक २ बोल, ५ उपयोग आसरी छठाण वडीया।

जघन्य गुण काला वर्ण रा बेइन्द्रिय जघन्य गुण काले वर्ण रा बेइन्द्रियों रे साथे द्रव्य थकी तुल्य प्रदेश थकी तुल्य ओपेणा थकी चौठाण वडीया स्थिति आसरी तिठाण वडीया वर्णादिक १९ बोल ५ उपयोग आसरी छठाण वडीया। इण तरह ही उत्कृष्टो गुण काले वर्ण रा केणो। इण तरह ही मध्यम गुण काले वर्ण रा केणो नवरं एतलो विशेष मध्यम स वर्णादिक २० बोल कहणा। काले वर्ण कह्या जिस तरह ही नीला वर्ण आदि १९ वर्णादिक रा बोल कह देणा।

जघन्य मतिज्ञान रा बेइन्द्रिय जघन्य मतिज्ञान रा बेइन्द्रियों

पचेन्द्रियों रे साथे द्रव्य थकी तुल्ला, प्रदेश थकी तुल्ला, ओगेणा थकी चौठाण वडीया, स्थिति आसरी तुल्ला वर्णादिक २० बोल, ४ उपयोग (२ अज्ञान, २ दर्शन) आसरी छठाण वडीया। इण तरह ही उत्कृष्टी स्थिति कह देणो नवरं उपयोग ४ कहणा। इण तरह की मध्यम स्थिति कह दणी नवरं स्थिति चौठाण वडीया और उपयोग ४ कहणा।

जघन्य गुण काले वर्ण रा तिर्यंच पचेन्द्रिय, जघन्य गुण काले वर्ण रा तिर्यंच पंचेन्द्रियों रे साथे द्रव्य थकी तुल्ला प्रदेश थकी तुल्ला ओगेणा थकी चौठाण वडीया, स्थिति आसरी चौठाण वडीया वर्णादिक १६ बोल, ६ उपयोग आसरी छठाण वडीया जघन्य गुण काले वर्ण आसरी तुल्ला। इण तरह ही उत्कृष्टो गुण कालो वर्ण कह देणो नवरं उत्कृष्टे में उत्कृष्ट काले वर्ण आसरी तुल्ला कह देणा। मध्यिम में इण तरह ही कह देणा नवरं वर्णादिक २० बोल आसरी छठाण वडीया कह देणा। कालो कयो जिस तरह ही १६ वर्णादिक और कह देणा।

जघन्य मतिज्ञान रा तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य मतिज्ञान रा तिर्यंच पचेन्द्रीयों रे साथे द्रव्य थकी तुल्ला, प्रदेश थकी तुल्ला, ओगेणा थकी चौठाण वडीया, स्थिति आसरी चौठाण वडीया वर्णादिक २० बोल ४ उपयोग (मतिज्ञान और २ दर्शन) आसरी छठाण वडीया, जघन्य मतिज्ञान आसरी तुल्ला। इण तरह ही उत्कृष्टो मतिज्ञान कह देणो नवरं फरको विशेष स्थिति तिठाण वडीया कहणो। ५ उपयोग (२ ज्ञान–श्रुत ज्ञान अवधिज्ञान और ३ दर्शन) आसरी छठाण वडीया, उत्कृष्ट मतिज्ञान आसरी तुल्ला। जघन्य कयो जिस तरह ही मध्यिम रा कह देणा, नवरं उपयोग ६ आसरी छठाण वडीया कहणा। मतिज्ञान कयो जिस तरह ही श्रुतज्ञान कह देणो।

जघन्य अवधिज्ञान रा तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य अवधिज्ञान रा तिर्यंच पंचेन्द्रियों रे साथे द्रव्य थकी तुल्ला प्रदेश थकी तुल्ला ओगेणा

थकी चौठाण वडीया स्थिति आसरी तिठाण वडीया, वर्णादिक २० बोल, ५ उपयोग (२ ज्ञान—मतिज्ञान श्रुतज्ञान और ३ दर्शन) आसरी छठाण वडीया, जघन्य अवधिज्ञान आसरी तुल्ला । इण तरह ही उत्कृष्ट अवधिज्ञान में कह देणा । मज्झिम अवधिज्ञान भी इणी तरह कह देणो, नवरं उपयोग ६ आसरी छठाण वडीया कहणा । तीन ज्ञान कया जिस तरह ही तीन अज्ञान कह देणा ।

जघन्य चक्षुदर्शन रा तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय जघन्य चक्षुदर्शन रा तिर्यञ्च पंचेन्द्रियों रे साथे द्रव्य थकी तुल्ला, प्रदेश थकी तुल्ला, ओघेणा थकी चौठाण वडीया, स्थिति आसरी चौठाण वडीया, वर्णादिक २० बोल ५ उपयोग (२ ज्ञान, २ अज्ञान और १ दर्शन) आसरी छठाण वडीया । जघन्य चक्षुदर्शन कयो जिस तरह ही उत्कृष्ट चक्षुदर्शन कह देणो नवरं फटक्रो विशेष स्थिति तिठाण वडीया कहणी, उपयोग ८ आसरी छठाण वडीया कहणा ।

मज्झिम चक्षुदर्शन रा तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय मज्झिम चक्षुदर्शन रा तिर्यञ्च पंचेन्द्रियों रे साथ द्रव्य थकी तुल्ला, प्रदेश थकी तुल्ला, ओघेणा थकी चौठाण वडीया, स्थिति आसरी चौठाण वडीया, वर्णादिक २० बोल ६ उपयोग आसरी छठाण वडीया । चक्षुदर्शन कयो जिस तरह ही अचक्षुदर्शन कह देणो ।

जघन्य अवधिदर्शन रा तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय जघन्य अवधिदर्शन रा तिर्यञ्च पंचेन्द्रियों रे साथे द्रव्य थकी तुल्ला, प्रदेश थकी तुल्ला, ओघेणा थकी चौठाण वडीया, स्थिति आसरी तिठाण वडीया, वर्णादिक २० बोल, ८ उपयोग आसरी छठाण वडीया । इण तरह ही उत्कृष्ट अवधिदर्शन कह देणो । इण तरह ही मज्झिम अवधिदर्शन कह देणो, नवरं फटक्रो विशेष उपयोग ६ कहणा=६६ ।

जघन्य आयणा रा मनुष्य, जघन्य ओघणा रा मनुष्यों रे साथे द्रव्य थकी तुल्ला, प्रदेश थकी तुल्ला, ओघेणा थकी तुल्ला, स्थिति

आसरी तिठाण वडीया, पर्यायादिक २० बोल ८ उपयोग (३ ज्ञान, २ अज्ञान ३ दर्शन) आसरी छठाण वडीया । उत्कृष्ट अवगाहना रा मनुष्य इणा तरह कह देणा नवरं स्थिति एक ठाण वडीया और उपयोग ६ (२ ज्ञान, २ अज्ञान, २ दर्शन) पल्लसा ।

मध्यम अवगाहना रा मनुष्य, मध्यम अवगाहना रा मनुष्यों रे साथे द्रव्य थकी तुल्ला प्रदेश थकी तुल्ला, अवगाहना थकी चौठाण वडीया स्थिति आसरी चौठाण वडीया पर्यायादिक २० बोल १ उपयोग आसरी छठाण वडीया केवल ज्ञान केवल दर्शन आसरी तुल्ला ।

जघन्य स्थिति रा मनुष्य जघन्य स्थिति रा मनुष्यों रे साथे द्रव्य थकी तुल्ला प्रदेश थकी तुल्ला अवगाहना थकी चौठाण वडीया स्थिति आसरी तुल्ला पर्यायादिक २० बोल ४ उपयोग (२ अज्ञान, २ दर्शन) आसरी छठाण वडीया । इण तरह ही उत्कृष्ट स्थिति रा बोल देणा नवरं उपयोग ६ कहणा । इण तरह ही मध्यम स्थिति रा बोल देणा, नवरं पल्ला विशेष स्थिति चौठाण वडीया पर्याय तथा उपयोग १० आसरी छठाण वडीया केवलज्ञान केवलदर्शन आसरी तुल्ला कहणा ।

जघन्य गुण काला वर्ण रा मनुष्य जघन्य गुण काले वर्ण रा मनुष्यों रे साथ द्रव्य थकी तुल्ला प्रदेश थकी तुल्ला अवगाहना थकी चौठाण वडीया स्थिति आसरी चौठाण वडीया पर्यायादिक १६ बोल १ उपयोग आसरी छठाण वडीया जघन्य गुण काले वर्ण आसरी और केवल ज्ञान केवल दर्शन आसरी तुल्ला । जघन्य गुण काले वर्ण कह्यो जिस तरह ही उत्कृष्ट गुण काला वर्ण कह देणा उत्कृष्ट में उत्कृष्ट गुण काल वर्ण आसरी तुल्ला कह देणा । इसी तरह ही मध्यम गुण काल वर्ण रा कह देणा नवरं पर्यायादिक २ बोल कहणा । काले वर्ण कह्यो जिस तरह ही १६ पर्यायादिक कह देणा ।

जघन्य मति ज्ञान रा मनुष्य जघन्य मतिज्ञान रा मनुष्यों रे साथे द्रव्य थकी तुल्ला प्रदेश थकी तुल्ला अवगाहना थकी चौठाण वडीया,

स्थिति आसरी चौठाण वडीया, पर्यायिक २० बोल ३ उपयोग (१ श्रुतज्ञा २ दर्शन) आसरी छठाण वडीया, जघन्य मतिज्ञान आसरी तुल्य जघन्य मतिज्ञान कयो इस तरह ही उत्कृष्ट मतिज्ञान कह देणे नवरं पटलो विशेष स्थिति तिठाण वडीया कहणी उपयोग ६ (४ ज्ञा २ दरशन) आसरी छठाण वडीया कहणा । इस तरह ही मध्यम मतिज्ञा कहणो, नवरं पटलो विशेष स्थिति चौठाण वडीया कहणी, उपयोग कहणा । मतिज्ञान कयो जिस तरह ही श्रुतज्ञान कह देणो ।

जघन्य अवधि ज्ञान रा मनुष्य जघन्य अवधि ज्ञान रा मनुष्यों साथे द्रव्य थकी तुल्ला प्रदेश थकी तुल्ला ओघेणा थकी तिठाण वडी स्थिति आसरी तिठाण वडीया, पर्यायिक २० बोल ६ उपयोग आस छठाण वडीया । इस तरह ही उत्कृष्ट अवधिज्ञान कह देणो । इस तरह मध्यम अवधिज्ञान कह देणो यावत पटलो विशेष ओघेणा चौठ वडीया और उपयोग ७ कहणा । अवधिज्ञान रा कया जिस तरह ही बोल मनपर्यव ज्ञान रा कह देणा नवरं एतला विशेष मध्यम मनप ज्ञान में भी ओघेणा तिठाण वडीया कहणी ।

केवल ज्ञान रा मनुष्य, केवल ज्ञान रा मनुष्यों रे साथे द्रव्य थ तुल्ला प्रदेश थकी तुल्ला ओघेणा थकी चौठाण वडीया स्थि आसरी तिठाण वडीया पर्यायिक ५ बोल आसरी छठाण वडी केवल ज्ञान केवल दर्शन आसरी तुल्ला ।

तीन ज्ञान पहलडा कया जिस तरह ही तीन अज्ञान कह देणा जघन्य चक्षु दर्शन रा मनुष्य जघन्य चक्षुदर्शन रा मनुष्यों रे साथे द्र थकी तुल्ला प्रदेश थकी तुल्ला ओघेणा थकी चौठाण वडीया, स्थि आसरी चौठाण वडीया, पर्यायिक २० बोल ४ उपयोग (२ ज्ञा २ अज्ञान १ दर्शन) आसरी छठाण वडीया, जघन्य चक्षु दर्शन आस तुल्ला । इस तरह ही उत्कृष्ट चक्षुदर्शन रा कह देणा, नवरं स्थिति तिठा वडीया कहणी । उपयोग ६ (४ ज्ञान ३ अज्ञान १ दर्शन) कहणा.

मज्झिम चक्षु दर्शन इण तरह ही कह देणो, नवरं स्थिति चौठाण वडीय कहणी उपयोग १ (४ ज्ञान ३ अज्ञान, ३ दर्शन) कहणा। इण तरह ही अचक्षु दर्शन कह देणो।

जघन्य अवधिदर्शन रा मनुष्य जघन्य अवधि दर्शन रा मनुष्य रे साथे जघन्य थको तुल्य, परस्पर थकी तुल्य आपणा थकी विठाण वडीय स्थिति आसरी विठाण वडीया, क्योंकि २० बोल ९ उपयोग (४ ज्ञान ३ अज्ञान, २ दर्शन) आसरी छठाण वडीया। जघन्य अवधिदर्शन आसरी तुल्य। इस तरह ही उत्कृष्ट अवधि दर्शन रा कह देणा। मज्झिम उत्कृष्ट दर्शन आसरी तुल्य कहणा। इस तरह ही मज्झिम अवधिदर्शन रा कह देणा नवरं आपणा चौठाण वडीया कहणी। उपयोग १०(४ ज्ञान, ३ अज्ञान ३ दर्शन) आसरी छठाण वडीया कहणा।

केवल दर्शन केवल ज्ञान की तरह कह देणे =८। वाणव्यन्तर भवनपति री तरह कह देणा =९१। ज्योतिषी वैमानिक भवनपति माफक कह देणा, नवरं स्थिति विठाण वडीय कहणी =९१+९२= १८६। समुच्चय रा=२४। नारकी रा=९१। ११ दंडक देवता रा=९२×११=१२०२। तिर्यंच पंचेन्द्रिय रा=९१। ५ स्थावर रा=३०५। ३ विकलेन्द्रिय रा=२४६। मनुष्य रा=१८। सब मिला कर=२११८ अलावा।

ये ४ बोल स्थिति आसरी

१— कोई युगलिया री स्थिति तो ३ पल्य री और कोई री ३ पल्य में असंख्यातवाँ भाग ऊणी हुवे तिके ने असंख्यात भाग हीन असंख्यात भाग अधिक कहणे ये दुठाण वडीया।

२—सातवीं नरकी रा नेरीयों में उत्कृष्ट आपेक्षा जो स्थिति चुठाण वडीया है—असंख्यातवें भाग हीन संख्यातवें भाग हीन, असंख्यातवें भाग अधिक, संख्यातवें भाग अधिक। कोई नेरीये री स्थिति ३३ सागर री

ार कोई नेरीये री ३३ सागर में अन्तरमुहूर्त ऊणी तिकी तो असंख्यात
ाग हीण असंख्यात भाग अधिक हुई। कोई नेरीये री स्थिति ३३ सागर
और कोई नेरीये री स्थिति ३३ सागर में १ पल ऊणी तिके न
ंख्यात भाग हीण, संख्यात भाग अधिक कहणो ये दुठाण बडीया।

३—असंख्यात भाग हीण, सख्यात भाग हीण, संख्यात गुण
ण तीय ठिकाणों में आवे, ओघणा में और स्थिति में आवे। अंगुल
असंख्यातवें भाग हीण, अंगुल रे संख्यातवें भाग हीण, संख्यात गुण
ण, जैसे कोई री १००० योजन री ओघणा है और कोई री १ एक अंगुल
ओघेणा है तो संख्यात गुण हीण संख्यात गुण अधिक हुआ।

पृथ्वी री स्थिति मु मुहूर्त रे असंख्यातवें भाग हीणी— जैसे
थ्वीकाय री २२००० वर्ष री स्थिति है और दूसरे पृथ्वीकाय जीव री
हूर्त रे असंख्यातवें भाग ऊणी २२००० वर्ष री है तिको न असंख्यात
ाग हीण असंख्यात भाग अधिक कहीजे।

कोई पृथ्वीकाय रे जीव री स्थिति २२००० वर्ष री हुवे और कोई
थ्वीकाय रे जीव री स्थिति २२००० वर्ष में एक मुहूर्त ऊणी हुवे तिकन
ंख्यात भाग हीण संख्यात भाग अधिक कहीजे। कोई पृथ्वीकाय रे
ीव री स्थिति २२००० वर्ष री हुवे और कोई री स्थिति एक खुल्लाग
भव री (२५६ आवलिका रु थोड़ो घणा) तिके न संख्यात गुण हीण
संख्यात गुण अधिक कहणो। इयों तिठाण बडीया।

४—ऊपर लिख्या हुया ३ बोल तिठाण पडीया माफक और १
बोल असंख्यात गुण हीण, असंख्यात गुण अधिक रो घणा देणा। कोई
री ओघेणा एक अंगुल री और कोई री ओघेणा अंगुल रे असंख्यातवें
भाग हुवे तिके ने असंख्यात गुण हीण, असंख्यात गुण अधिक कहणो।
स्थिति में जिके रो आयुष्य असंख्याता वर्षों रो हुवे तिके में चौठाण
पडीया हुवे जैसे कोई री स्थिति तो ३ पल री हुवे और कोई री स्थिति
१००० वर्ष री हुवे तो असंख्यात गुण हीण असंख्यात गुण अधिक हुवे।

मभिम्म चक्षु दर्शन इण तरह ही कह देणा, मगरं स्थिति चौठाण वडीया कहणी उपयोग १ (४ भान ३ अज्ञान, ३ दर्शन) कहणा। इण तरह ही चक्षु दर्शन कह देणो।

जघन्य अवधिदर्शन रा मनुष्य जघन्य अवधि दर्शन रा मनुष्यों रे साथ इस्य भवी हुआ, मरेया भवी हुआ आपणा भवी तिठाण वडीया स्थिति आसरी तिठाण वडीया पर्यायिक १० बोल ६ उपयोग (४ ज्ञान, ३ अज्ञान, २ दर्शन) आसरी छठाण वडीया। जघन्य अवधिदर्शन आसरी हुआ। इस तरह ही उत्कृष्ट अवधि दर्शन रा कह देणा। उत्कृष्ट म उत्कृष्ट दर्शन आसरी हुआ कहणा। इस तरह ही मध्यम अवधिदर्शन रा कह देणा मगरं आ पणा चौठाण वडीया कहणी। उपयोग १ (४ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन) आसरी छठाण वडीया कहणा।

केवल दर्शन केवल ज्ञान की तरह कह देणो =१८। वाणव्यन्तर भवनपति री तरह कह देणा =११। ज्योतिषी और विमानिक भवनपति माफक कह देणा मगरं स्थिति तिठाण वडीया कहणी =११+११= १६६। समुच्चय रा=१४। नारकी रा=११। ११ दंडक देवता रा=११ × ११=१२११। तिर्यंच पंचेन्द्रिय रा=११। ५ स्थावर रा=१७२। ३ विकलेन्द्रिय रा=१४१। मनुष्य रा=१८। सब मिला कर=२११८ अलावा।

ये ४ बोल स्थिति आसरी

१— कोई युगलिया री स्थिति तो ३ पल री और कोई री ३ पल में अन्तमु हूर्त ऊणी हुवे तिके ने असंख्यात भाग हीणा असंख्यात भाग अधिक कहणो ये दुठाण वडीया।

२—सातवीं नारकी रा नरीयों में उत्कृष्ट आपेक्षा में स्थिति दुठाण वडीया है—असंख्यातवें भाग हीणा, संख्यातवें भाग हीणा असंख्यातवें भाग अधिक, संख्यातवें भाग अधिक। कोई नेरीये री स्थिति ३३ सागर री

भीर कोई नेरीये री ३३ सागर में अन्तरमुहूर्त ऊणी तिकी तो असंख्यात माग हीण असंख्यात भाग अधिक हुई। कोई नरीये री स्थिति ३३ सागर री और कोई नेरीये री स्थिति ३३ सागर में १ पल ऊणी तिके न संख्यात भाग हीण, संख्यात भाग अधिक कहणो ये बुठाण वडीया।

३—असंख्यात भाग हीण, संख्यात भाग हीण, संख्यात गुण हीण तीन ठिकाणों में आवे, ओघेणा में और स्थिति में आवे। अंगुल रे असंख्यातवें भाग हीण, अंगुल रे संख्यातवें भाग हीण, संख्यात गुण हीण, जैसे कोई री १ ०० योजन री ओघेणा है और कोई री १ एक अंगुल री ओघेणा है तो संख्यात गुण हीण संख्यात गुण अधिक हुयो।

उत्कृष्टी स्थिति मु मुहूर्त रे असंख्यातवें भाग हीणी— जैसे पृथ्वीकाय री २२ ०० वर्ष री स्थिति है और दूसरे पृथ्वीकाय जीव री मुहूर्त रे असंख्यातवें भाग ऊणी २२ ०० वर्ष री है तिकी न असंख्यात माग हीण असंख्यात भाग अधिक कहीजे।

कोई पृथ्वीकाय रे जीव री स्थिति २२००० वर्ष री हुवे और कोई पृथ्वीकाय रे जीव री स्थिति २२००० वर्ष में एक मुहूर्त ऊणी हुवे तिकेने संख्यात भाग हीण संख्यात भाग अधिक कहीज। कोई पृथ्वीकाय रे जीव री स्थिति २२००० वर्ष री हुवे और कोई री स्थिति एक खुल्लाग भव री (२५६ आवलिका मु थोड़ो बड़ो) तिके न संख्यात गुण हीण, संख्यात गुण अधिक कहणो। इयो तिठाण वडीया।

४—ऊपर लिख्या हुवा ३ बोल तिठाण वडीया माफक और १ बोल असंख्यात गुण हीण, असंख्यात गुण अधिक रो बडा दणो। कोई री ओघेणा एक अंगुल री और कोई री ओघेणा अंगुल रे असंख्यातवें भाग हुवे तिके ने असंख्यात गुण हीण, असंख्यात गुण अधिक कहणो। स्थिति में तिके रो आयुष्य असंख्याता वर्षों रो हुवे तिके में चौठाण वडीया हुवे जैसे कोई री स्थिति तो १ पल री हुवे और कोई री स्थिति १००० वर्ष री हुवे तो असंख्यात गुण हीण असंख्यात गुण अधिक हुवे।

हुओ चौठाण पड़ीया।

४—छठाण पडीया में अनन्त भाग हीण, असंख्यात भाग हीण, संख्यात भाग हीण संख्यात गुण अधिक असंख्यात गुण अधिक अनन्त गुण अधिक। जैसे १ पुद्गल तो अनन्त गुण काला है, १ पुद्गल अनन्त गुण काले में एक गुण कम है जिके ने अनन्त भाग हीण अनन्त गुण अधिक कहणो। जैसे असत्य कल्प स्थापना रा दृष्टान्त सु १०० एक लाख ने अनन्त गिनना, १० दस हजार ने असंख्यात और १००० एक हजार ने संख्यात गिनना और १ ने अनन्त भाग हीण १ दस ने असंख्यात भाग हीण १०० एक सौ ने संख्यात भाग हीण गिनना। जैसे एक तरफ १ एक लाख और एक तरफ १ लाख में १ कम जिके ने अनन्त भाग हीण कहणो। एक तरफ तो एक लाख और एक तरफ ६६ हजार, अणने असंख्यात भाग हीण कहणो। एक तरफ तो एक लाख और एक तरफ ६ हजार अणने संख्यात भाग हीण कहणो। एक तरफ तो एक लाख और एक तरफ दस हजार अणने संख्यात गुण हीण कहणो। एक तरफ तो एक लाख और एक तरफ एक हजार अणने असंख्यात गुण हीण कहणो। एक तरफ तो एक लाख और एक तरफ एक अणने अनन्त गुण हीण कहणो।

सेवं भंते! सेवं भंते!!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद पांचवें में अजीव परजवा रो थोकड़ो चाले सो कहे है—

१—अहो भगवान्! अजीव परजवा कित्ता प्रकार रा? हे गौतम! दो प्रकार रा—रूपी अजीव परजवा अने अरूपी अजीव परजवा।

२—अहो भगवान्! अरूपी अजीव परजवा कित्ता प्रकार रा? हे

गौतम ! १० प्रकार रा—धर्मास्तिकाय धर्मास्तिकाय रा देश, धर्मास्तिकाय रा प्रदेश अधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय रा देश, अधर्मास्तिकाय रा प्रदेश आकाशास्तिकाय, आकाशास्तिकाय रा देश, आकाशास्तिकाय रा प्रदेश, श्रद्धा समय-काल।

३—अहो भगवान् ! रूपी अजीव परजवा कितरा प्रकार रा ? हे गौतम ! ४ प्रकार रा—खंध, खंध रा देश, खंध रा प्रदेश और परमाणु पुद्गल। अहो भगवान् ! रूपी अजीव परजवा किम् संख्याता, असंख्याता, अनन्ता ? हे गौतम ! नोसंख्याता नोअसंख्याता अनन्ता। अहो भगवान् ! कांई कारण ? हे गौतम ! अनन्ता परमाणु पुद्गल, अनन्ता दो पपसी खंधा जाव अनन्ता दस पपसी खंधा अनन्ता संख्यात पपसी खंधा, अनन्ता असंख्यात पपसी खंधा, अनन्ता अनन्त पपसी खंधा है तिण कारण नासंख्याता, नोअसंख्याता, अनन्ता है।

४—अहो भगवान् ! परमाणु पुद्गल रे कितनी परजवा है ? हे गौतम ! अनन्ती परजवा (पर्याय) है। अहो भगवान् ! कांई कारण ? हे गौतम ! परमाणु पोग्गला परमाणु पोग्गला दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएस ट्ठयाए तुल्ला ओगेणा अरी तुल्ला स्थिति आसरी चौठाण वडीया, वर्णादिक १६ बोल (५ वर्ण, २ गंध ५ रस ४ स्पर्श शीत उष्ण स्निग्ध लुक्ख) आसरी छठाण वडीया। दो प्रदेशी खंधा दो प्रदेशी खंधा दव्वट्ठयाए तुल्ला पएसट्ठयाए तुल्ला ओगेणा आसरी सिय हीणा सिय तुल्ला सिय मब्भहिया (अधिक)। हीण तो एक प्रदेश हीण, तुल्ला ते तुल्ला मब्भहिया (मब्भहिया—अधिक) ते एक प्रदेश अधिक। स्थिति आसरी चौठाण वडीया वर्णादिक १६ बोल आसरी छट्ठाण वडीया। दो प्रदेशी में हीणा तो १ प्रदेश हीणा, कारण एक बैठे एक आकाश प्रदेश ऊपर एक बैठे २ आकाश प्रदेश ऊपर ऊपरी अपेक्षा १ आकाश प्रदेश अधिक। इसी तरह ३ प्रदेशी जाव १० प्रदेशी तक

द्रव्यट्ठयाए तुल्ला पएसट्ठयाए तुल्ला, अवगाहणा आसरी किंचित हीणा किंचित तुल्ला किंचित अब्भहीया (अब्भहिया—अधिक) । इसी तरह ९ प्रदेशी ? आकाश प्रदेश हीणा अधिक, १० प्रदेशी ९ आकाश प्रदेश हीणा अधिक। स्थिति आसरी चौठाण वडीया यथादिक १६ बोल आसरी छट्ठाण वडीया।

संख्यात प्रदेशी खंध संख्यात प्रदेशी खंधस्स द्रव्यट्ठयाए तुल्ला पएसट्ठयाए दुट्ठाण वडीया, अवगाहणा आसरी दुट्ठाण वडीया, स्थिति आसरी चौठाण वडीया, यथादिक १६ बोल आसरी छट्ठाण वडीया।

असंख्यात प्रदेशी खंध असंख्यात प्रदेशी खंधस्स द्रव्यट्ठयाए तुल्ला पएसट्ठयाए चौठाण वडीया ओगाहणा आसरी चौठाण वडीया, स्थिति आसरी चौठाण वडीया, यथादिक १६ बोल आसरी छट्ठाण वडीया।

अनन्त प्रदेशी खंध अनन्त प्रदेशी खंधस्स द्रव्यट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडीया अवगाहणा आसरी चौठाण वडीया स्थिति आसरी चौठाण वडीया यथादिक २ बोल आसरी छट्ठाण वडीया=११।

१—अहो भगवान् ! एक आकाश प्रदेश ओगाह्या पुद्गल री कितनी पर्याय है ? हे गौतम ! अनन्त पर्याय है। अहो भगवान् ! एक आकाश प्रदेश ओगाह्या पुद्गल री अनन्त पर्याय किस कारण सूं कही है ? हे गौतम ! एक आकाश प्रदेश ओगाह्या पोग्गल एक आकाश प्रदेश ओगाह्या पोग्गलस्स द्रव्यट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडीया, ओगाहणा पणी तुल्ला स्थिति आसरी चौठाण वडीया यथादिक १६ बोल आसरी छट्ठाण वडीया। एक आकाश प्रदेश ओगाह्या पुद्गल कह्या जिस तरह ही दो आकाश प्रदेश ओगाह्या यावत् दस आकाश प्रदेश ओगाह्या ताई कह देणा=१ ।

संख्यात आकाश प्रदेश ओगाह्या पोग्गला संख्यात आकाश प्रदेश ओगाह्या पोग्गलस्स द्रव्यट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए छट्ठाण वडीया,

ओघेया आसरी दुट्ठाण वडीया, स्थिति आसरी चौट्ठाण वडीया, वर्णादिक १६ बोल आसरी छट्ठाण वडीया ।

असंख्यात आकाश प्रदेश ओगाया पोग्गला असंख्यात आकाश प्रदेश ओगाया पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए छठाण वडीया ओघेया आसरी चौठाण वडीया स्थिति आसरी चौठाण वडीया वर्णादिक २० बोल आसरी छठाण वडीया ।

३—अहो भगवान् ! एक समय री स्थिति वाले पुद्‌गल री कितनी पर्याय है ? हे गौतम ! अनन्त पर्याय है । अहो भगवान् ! किस कारण से ? हे गौतम ! एक समय री स्थिति वाला पोग्गला, एक समय री स्थिति वाला पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला पएसट्ठयाए छठाण वडीया, ओघेया आसरी चौठाण वडीया, स्थिति आसरी तुल्ला, वर्णादिक २० बोल आसरी छठाण वडीया ।

एक समय री स्थिति वाला पुद्‌गल री पर्याय कही उण तरह ही जाव १० समय तक री स्थिति वाला पुद्‌गल रो कह देणी ।

संख्यात समय री स्थिति वाला पोग्गला संख्यात समय री स्थिति वाला पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला पएसट्ठयाए छठाण वडीया ओघेया आसरी चौठाण वडीया, स्थिति आसरी दुट्ठाण वडीया, वर्णादिक २० बोल आसरी छठाण वडीया ।

असंख्यात समय री स्थिति वाला पोग्गला असंख्यात समय री स्थिति वाला पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए छठाण वडीया, ओघेया आसरी चौठाण वडीया स्थिति आसरी चौठाण वडीया, वर्णादिक २० बोल आसरी छठाण वडीया=१२ ।

४—अहो भगवान् ! एक गुण काले वर्ण रे पुद्‌गल री कितनी पर्याय है ? हे गौतम ! अनन्त पर्याय है । अहो भगवान् किस कारण से ? हे गौतम ! एक गुण काला वर्ण रा पोग्गला, एक गुण काले वर्ण रा पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए छठाण वडीया, ओघेया आसरी

चौठाण वडीया, स्थिति आसरी चौठाण वडीया वर्णादिक १६ बोल आसरी छठाण वडीया। एक गुण काले वर्ण आसरी तुल्ला। एक गुण काल वर्ण री वही इण तरह ही बात १० गुण काल वर्ण तक री कह देणी।

संख्यात गुण काल वर्ण रा पामाणु संख्यात गुण काल वर्ण रा पोगालस दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए छठाण वडीया ओगेणा आसरी चौठाण वडीया स्थिति आसरी चौठाण वडीया, वर्णादिक १६ बोल आसरी छठाण वडीया संख्यात गुण काल वर्ण आसरी दुठाण वडीया। इस तरह ही असंख्यात गुण काले वर्ण री कह देणी, नवर असंख्यात गुण काले वर्ण आसरी चौठाण वडीया कहणो। इसी तरह ही अनन्त गुण काल वर्ण री कह देणी,नवर मज्झिम में वर्णादिक २ बोल आसरी छठाण वडीया कह देणी। जघन्य और उत्कृष्ट में १६ वर्णादिक १६ बोल आसरी कह देणी।

अवशेष वर्ण री वही इसी तरह वर्णादिक १६ बोल री कह देणी—६ ।

५—अहो भगवान्! जघन्य ओघेणा रा दो पएसी खंधों री पर्याय कितनी? हे गौतम! अनन्त पर्याय है। अहो भगवान्! किण कारण से? हे गोतम! जघन्य ओघेणा रा दो पएसी खंधा जघन्य ओघेणा रा दो पएसी खंधा दव्वट्ठयाए तुल्ला पएसट्ठयाए तुल्ला ओगेणा सरीं तुल्ला स्थिति आसरी चौठाण वडीया वर्णादिक १६ बोल आसरी छठाण वडीया। इसी तरह उत्कृष्टी ओघेणा रा दो पएसी खंधा कह देणा। इसी तरह तीन पएसी खंध रा ३ बोल जघन्य उत्कृष्ट मज्झिम ओघेणा रा कह देणा। तीन पएसी खंध जैसा इसी तरह यावत १० पएसी खंध तक कह देणा। नवरं मज्झिम ओघेणा में ४ पएसी सू लगा कर १० पएसी तक सात आकाश प्रदेश दीया सात आकाश प्रदेश अधिका कह देणा।

जघन्य ओघेणा रा संख्यात पएसी खंधा जघन्य ओघेणा रा

संठाण पएसी खंधा दव्वट्ठयाए तुल्ला पएसट्ठयाए छठाण वडीया, ओगाहणा थकी तुल्ला, स्थिति आसरी चौठाण वडीया, वर्णादिक १६ बोल आसरी छठाण वडीया। जघन्य ओगाहणा कही इसी तरह उत्कृष्टी ओगाहणा कह देणी, नवरं उत्कृष्ट ओगाहणा थकी तुल्ला कहणा। इसी तरह मज्झिम ओगाहणा कह देणी, नवरं ओगाहणा थकी छठाण वडीया कहणा।

जघन्य ओगाहणा रा असंख्यात पएसी खंधा जघन्य ओगाहणा रा असंख्यात पएसी खंधा दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए चौठाण वडीया, ओगाहणा थकी तुल्ला, स्थिति आसरी चौठाण वडीया, वर्णादिक १६ बोल आसरी छठाण वडीया। इसी तरह उत्कृष्ट ओगाहणा कह देणी। नवरं उत्कृष्ट ओगाहणा आसरी तुल्ला कह देणा। इसी तरह मज्झिम ओगाहणा कह देणी, नवरं मज्झिम ओगाहणा आसरी चौठाण वडीया कह देणा।

जघन्य ओगाहणा रा अनन्त पएसी खंधा, जघन्य ओगाहणा रा अनन्त पएसी खंधा दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए छठाण वडीया ओगाहणा थकी तुल्ला, स्थिति आसरी चौठाण वडीया, वर्णादिक १६ बोल आसरी छठाण वडीया। इसी तरह उत्कृष्ट ओगाहणा कह देणी नवरं ओगाहणा तथा स्थिति तुल्ला कहणी। इसी तरह मज्झिम ओगाहणा कह देणी, नवरं ओगाहणा और स्थिति आसरी चौठाण वडीया, वर्णादिक २० बोल आसरी छठाण वडीया कहणा—१५।

१—अहो भगवान्! जघन्य स्थिति रा परमाणु पुद्गल री कितनी पर्याय है? हे गौतम! अनन्त पर्याय है। अहो भगवान्! किस कारण से? हे गौतम! जघन्य स्थिति रा परमाणु पोग्गल जघन्य स्थिति रा परमाणु पोग्गल से दव्वट्ठयाए तुल्ला पएसट्ठयाए तुल्ला ओगाहणा थकी तुल्ला स्थिति आसरी तुल्ला वर्णादिक १६ बोल आसरी छठाण वडीया। इसी तरह उत्कृष्टी स्थिति रा कह देणा। इसी तरह मज्झिम स्थिति रा कह देणा नवरं स्थिति आसरी चौठाण वडीया कह देणा।

जघन्य स्थिति रा दो पएसी खंधा जघन्य स्थिति रा दो पएसी

संघा दसउद्वयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए तुल्ला आगाहणा नहीं लिय हीणा सिय तुल्ला, सिय अब्भहिया हीणा तो पक प्रदेश हीणा, तुल्ला तो बराबर अब्भहिया तो पक आकाश प्रदेश अधिक, स्थिति आसरी तुल्ला बयोंकि १६ बोल आसरी छठाण बड़ीया। इसी तरह उत्कृष्ट स्थिति कह देणी। उत्कृष्ट में उत्कृष्ट स्थिति आसरी तुल्ला कहणा। इसी तरह मज्झिम स्थिति कह देणी मगर स्थिति आसरी चौठाण वड़ीया कहणा। जिम तरह दा परसी संघा कह्या उसी तरह जाव १ पएसी संघों तक कह देणा। मगर आ पेणा में १ आकाश प्रदेश तक हीणा अधिक कह देणा।

जघन्य स्थिति रा संख्यात पएसी संधा जघन्य स्थिति रा संख्यात पएसी संधा दव्वठ्ठयाए तुल्ला पएसठ्ठयाए दुट्ठाए बड़ीया ओगेवणा नहीं दुट्ठाण बड़ीया स्थिति आसरी तुल्ला क्योंकि १६ बोल आसरी छठाण बड़ीया। इसी तरह उत्कृष्ट स्थिति कह देणी। इसी तरह मज्झिम स्थिति कह देणी मगर स्थिति आसरी चौठाण बड़ीया कह देणा।

जघन्य स्थिति रा असंख्यात पएसी संधा जघन्य स्थिति रा असंख्यात पएसी संधरस दव्वठ्ठयाए तुल्ला पएसठ्ठयाए चौठाण बड़ीया ओगेवणा नहीं चौठाण बड़ीया स्थिति आसरी तुल्ला क्योंकि १६ बोल आसरी छठाण बड़ीया। इसी तरह उत्कृष्ट स्थिति कह देणी। इसी तरह मज्झिम स्थिति कह देणी मगर स्थिति आसरी चौठाण बड़ीया कह देणा।

जघन्य स्थिति रा अनन्त पएसी संधा जघन्य स्थिति रा अनन्त पएसी संधरस दव्वठ्ठयाए तुल्ला पएसठ्ठयाए छठाण बड़ीया ओगाहणा नहीं चौठाण बड़ीया स्थिति आसरी तुल्ला क्योंकि २ बोल आसरी छठाण बड़ीया इसी तरह उत्कृष्ट स्थिति कह देणी। इसी तरह मज्झिम स्थिति कह देणी मगर स्थिति आसरी चौठाण बड़ीया कहणा =३६।

६—अहो भगवान्! जघन्य गुण काला वर्ण रे परमाणुपुद्गल री कितनी पर्याय है? हे गौतम! अनन्त पर्याय है। अहो भगवान्!

किण कारण से। हे गौतम! जघन्य गुण काले वर्ण रा परमाणु पोग्गला जघन्य गुण काले वर्ण रा परमाणु पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए तुल्ला, ओगाहणा थकी तुल्ला। स्थिति आसरी चौठाण वडीया, वर्णादिक ९ बोल अथवा ११ बोल (२ गंध, ५ रस, ४ स्पर्श) आसरी छठाण वडीया। जघन्य गुण काले वर्ण आसरी तुल्ला। इसी तरह उत्कृष्ट गुण काले का कह देणो। इसी तरह मज्झिम गुण काले का कह देणो मगर वर्णादिक १२ बोल आसरी छठाण वडीया कहणा। जिस तरह काले वर्ण का उसी तरह ४ वर्ण और ५ रस का कह देणा।

जघन्य गुण सुगन्ध रा परमाणु पोग्गला जघन्य गुण सुगन्ध रा परमाणु पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए तुल्ला, ओगाहणा थकी तुल्ला स्थिति आसरी चौठाण वडीया, वर्णादिक १२ बोल तथा १४ बोल आसरी छठाण वडीया, जघन्य गुण सुगन्ध आसरी तुल्ला। इसी तरह उत्कृष्ट गुण सुगन्ध रा कह देणा। इसी तरह मज्झिम गुण सुगन्ध रा कह देणा। मगर वर्णादिक १५ बोल (दुर्गन्ध छोड कर) आसरी छठाण वडीया कहणा। इसी तरह दुर्गन्ध रा कह देणा। इसी तरह ४ स्पर्श कह देणा।

जघन्य गुण काले वर्ण रा दो पएसी खंध, जघन्य गुण काले वर्ण रा दो पएसी खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए तुल्ला, ओगाहणा थकी सिय हीणा सिय तुल्ला सिय अब्भहिया, स्थिति आसरी चौठाण वडीया वर्णादिक १५ बोल आसरी छठाण वडीया, जघन्य गुण काले वर्ण आसरी तुल्ला। इसी तरह उत्कृष्ट गुण काले वर्ण रा कह देणा। इसी तरह मज्झिम गुण काले वर्ण रा कह देणा, मगर वर्णादिक १९ बोल आसरी छठाण वडीया कहणा। जिस तरह दो पएसी खंध कह्या उसी तरह जाव १० पएसी तक कह देणा, ओगाहणा आसरी जाव ९ प्रदेश हीणा ९ प्रदेश अधिका कह देणा।

जघन्य गुण काले वर्ण रा संख्यात पएसी खंध, जघन्य गुण

काल वर्ण रा संख्यात पदसी खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए दुठाण वडीया ओगाहणा थकी दुठाण वडीया स्थिति आसरी चोठाण वडीया वर्णादिक १५ बोल आसरी छठाण वडीया, जघन्य गुण काल वर्ण आसरी तुल्ला । इसी तरह उत्कृष्ट गुण काल वर्ण रा कह देणा । इसी तरह मध्यिम गुण काल वर्ण रा कह देणा नवरं वर्णादिक १६ बोल आसरी छठाण वडीया कहणा । इसी तरह असंख्यात पदसी खंध रा ३ बोल जघन्य मध्यिम उत्कृष्ट रा कह देणा, मगर ओगाहणा थकी चोठाण वडीया और प्रदेश थकी भी चोठाण वडीया कहणा ।

जघन्य गुण काल वर्ण रा अनन्त पदसी खंध जघन्य गुण काल वर्ण रा अनन्त पदसी खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए छठाण वडीया ओगाहणा थकी चोठाण वडीया स्थिति आसरी चोठाण वडीया वर्णादिक १६ बोल आसरी छठाण वडीया जघन्य गुण काले वर्ण आसरी तुल्ला । इसी तरह उत्कृष्ट गुण काल वर्ण रा कह देणा । इसी तरह मध्यिम गुण काल वर्ण रा कह देणा नवरं वर्णादिक २० बोल आसरी छठाण वडीया कहणा । जिण तरह कालो कह्यो उसी तरह वर्णादिक १५ बोल कह देणा ।

जघन्य गुण खड़खड़ा (करकश) अनन्त पदसी खंध, जघन्य गुण खड़खड़ा अनन्त पदसी खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला पएसट्ठयाए छठाण वडीया ओगाहणा थकी चोठाण वडीया स्थिति आसरी चोठाण वडीया वर्णादिक १६ बोल आसरी छठाण वडीया जघन्य गुण खड़खड़े स्पर्श आसरी तुल्ला । इसी तरह उत्कृष्ट गुण खड़खड़ो स्पर्श कह देणो । उत्कृष्ट मे उत्कृष्ट गुण आसरी तुल्ला कहणा । इसी तरह मध्यिम गुण खड़खड़ा स्पर्श कह देणो नवरं वर्णादिक २ बोल आसरी छठाण वडीया कहणा । जिण तरह खड़खड़ा कह्यो उसी तरह गुरुआ लहुआ सखा कह देणा=१६ बोल मे ३९ करके ६२४ रूपरसा ४ स्पर्शो मे ३ करके १२ कुल्ल=६३६ ।

८—अहो भगवान ! जघन्य पएसी खंध री कितनी पर्याय है ? हे गौतम ! अनन्त पर्याय है। अहो भगवान् ! किण कारण से ? हे गौतम ! जघन्य पएसी (दो पएसी) खंधा जघन्य पएसी (दो पएसी) खंधारस दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए तुल्ला, ओगेणा थकी सिय हीणा सिय तुल्ला सिय अब्भहिया, स्थिति आसरी चौठाण वडीया, पर्यायिक १६ बोल आसरी छठाण वडीया। इसी तरह उत्कृष्ट प्रदेशी कह देणा नवर ओगेणा थकी चौठाण वडीया कहणा। पर्यायिक २० बोल आसरी छठाण वडीया कहणा। जिम तरह उत्कृष्ट कह्यो उसी तरह मज्झिम पएसी कह देणा, नवरं प्रदेश आसरी छठाण वडीया कहणा=३

६—अहो भगवान् ! जघन्य ओगेणा रा पोग्गलां री कितनी पर्याय है ? हे गौतम ! अनन्त पर्याय है। अहो भगवान् ! किण कारण से ? हे गौतम ! जघन्य ओगेणा रा पोग्गला जघन्य ओगेणा रा पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए छठाण वडीया, ओगेणा थकी तुल्ला स्थिति आसरी चौठाण वडीया, पर्यायिक १६ बोल आसरी छठाण वडीया।

उत्कृष्ट ओगेणा रा पोग्गला, उत्कृष्ट ओगेणा रा पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला पएसट्ठयाए छठाण वडीया, ओगेणा थकी तुल्ला, स्थिति आसरी चौठाण वडीया, पर्यायिक १६ बोल आसरी छठाण वडीया।

मज्झिम ओगेणा रा पोग्गला मज्झिम ओगेणा रा पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला पएसट्ठयाए छठाण वडीया, ओगेणा थकी चौठाण वडीया, स्थिति आसरी चौठाण वडीया, पर्यायिक २० बोल आसरी छठाण वडीया=३।

१०—अहो भगवान् ! जघन्य स्थिति रा पोग्गलों री कितनी पर्याय है ? हे गौतम ! अनन्त पर्याय है। अहो भगवान् ! किण कारण से ? हे गौतम ! जघन्य स्थिति रा पोग्गला जघन्य स्थिति रा पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला पएसट्ठयाए छठाण वडीया ओगेणा थकी चौठाण वडीया, स्थिति आसरी तुल्ला, पर्यायिक २० बोल आसरी छठाण वडीया। इसी तरह

उत्कृष्ट स्थिति रा पोमला कह दिया । इसी तरह मज्झिम स्थिति रा पोमला कह देणा नवरं स्थिति आसरी चौठाण वडीया कहणा=३ ।

११—अहो भगवान् ! जघन्य गुण काला वर्ण रा पोमलां री कितनी पर्याय है ? हे गौतम ! अनन्त पर्याय है । अहो भगवान् ! किस कारण से ? हे गौतम ! जघन्य गुण काले वर्ण रा पोमला जघन्य गुण काले वर्ण रा पोमलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ला, पएसट्ठयाए छठाण वडीया ओगेया थको चौठाण वडीया स्थिति आसरी चौठाण वडीया वर्णादिक १६ बोल आसरी छठाण वडीया जघन्य गुण काले वर्ण आसरी तुल्ला । इसी तरह उत्कृष्ट गुण काला वर्ण कह देणो । इसी तरह मज्झिम गुण काला वर्ण कह देणो नवरं वर्णादिक २० बोल आसरी छठाण वडीया कहणा । जिस तरह काला वर्ण कह्यो उसी तरह १६ वर्णादिक रा बोल कह देणा=६० । कुल १०६ ।

द्रव्य रा ११ क्षेत्र रा १२, काल रा १२, भाव रा २६ ओगेया रा ३५ स्थिति रा ३६, भाव रा ६१६ द्रव्य रा १ क्षेत्र रा २ काल रा ३, भाव रा ६ । कुल १००६ ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद ६ में वक्कंति (व्युत्क्रांति) पद रो थोकड़ो चाले सो कहे छे—

गाथा—बारस चउवीसाइं, सअंतरं एग समय कत्तो य।

उव्वट्टण परभवियाउयं च, अट्ठेव आगरिसा ॥

१—पहलो भणावो—अहो भगवान् ! चार ही गति रो उपजणे रो विरह कितनो है ? हे गौतम ! चार ही गति में उपजणे रो विरह पड़े तो जघन्य १ समय रो उत्कृष्ट १२ मुहूर्त रो। पहली नारकी, भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी, पहलो दूजो देवलोक और सम्मूर्छिम मनुष्य रो उपजणे रो विरह पड़े तो जघन्य १ समय रो, उत्कृष्ट २४ मुहूर्त रो। दूजी नारकी सुं सातवीं नारकी तक उपजणे रो विरह पड़े तो जघन्य १ समय रो उत्कृष्ट दूजी नारकी रो ७ राइंदियों रो (७ रात दिनों रो)। तीजी नारकी रो १५ राइंदियों रो। चौथी नारकी रो १ महीने रो। पांचवीं नारकी रो २ महीनों रो छठी नारकी रो ४ महीनों रो। सातवीं नारकी रो ६ महीनों रो। तीजे देवलोक सुं जाव सर्वार्थसिद्ध तक जघन्य एक समय रो, उत्कृष्ट तीजे देवलोक रो ९ राइंदिया २० मुहूर्त रो। चौथे देवलोक रो १२ राइंदिया १० मुहूर्त रो। पांचवें देवलोक रो २२॥ राइंदियों रो। छठ देवलोक रो ४५ राइंदियों रो। सातवें देवलोक रो ८० राइंदियों रो। आठवें देवलोक रो १०० राइंदियों रो। नवमें दसवें देवलोक रो संख्यात महीनों रो (१२ महीनों रे भीतर भीतर)। इग्यारवें बारहवें देवलोक रो संख्यात वर्षों रो (१०० वर्षों रे भीतर भीतर)। नवग्रैवेक री नीचली त्रिक रा देवों रो संख्यात सैकड़ों वर्षों रो। नवग्रैवेक री बीचली त्रिक रा देवों रो संख्यात हजार वर्षों रो। नवग्रैवेक री ऊपरली त्रिक रा देवों रा संख्यात लाख वर्षों रो। चार अनुत्तर विमान रा देवों रो पल रे असंख्यातवें भाग। सर्वार्थसिद्ध रा देवों रो पल रे संख्यातवें भाग। सिद्ध भगवान् रो और १४ इन्द्रों रो

जघन्य एक समय रो उत्कृष्ट ६ महीनों रो विरह पड़े। चन्द्रमा सूर्य रो महल आसरी विरह पड़े तो जघन्य ६ महीनों रो, उत्कृष्ट चन्द्रमा रो ४२ महीनों रो और सूर्य रो ४८ वर्षों रो। पांच स्थावर अनुसमय अविरह। तीन विकलेन्द्रिय असन्नी तिर्यञ्च में जघन्य १ समय उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त रो। सन्नी तिर्यञ्च और सन्नी मनुष्य में जघन्य १ समय, उत्कृष्ट १२ मुहूर्त रो। समदृष्टि रो विरह ७ दिन रो श्रावक रो विरह १२ दिनों रो और साधु रो विरह १५ दिनों रो पड़े=८८।

जिस तरह उपजणे रो कह्यो उसी तरह चवणरो (निकलन) रो कह देणा नवरं एटलो विशेष ज्योतिषी विमानिक में चवणो कहणो। सिद्ध भगवान् चवे नहीं =५५।

सेवं भंते। सेवं भंते।।

सांतर निरंतर रो थोकड़ो—

अहो भगवान्! नारकी रा नेरीया सांतर उववज्जंति (उपजे) कि निरंतर उववज्जंति (उपजे)? हे गौतम! नारकी रा नेरीया सांतर वि उववज्जंति (उपजे) और निरंतर वि उववज्जंति (उपजे)। आव सिद्ध भगवान् तक इसी तरह ऊपर मुजब कह देणो, नवरं पांच स्थावर निरंतर उववज्जंति (उपजे)=२४।

अहो भगवान्! नारकी रा नेरीया सांतर चवंति कि निरंतर चवंति? हे गौतम! सांतर वि चवंति निरंतर वि चवंति (निकले)। ५ स्थावर और सिद्ध भगवान्जी ने बर्जी ने आव शुप ४८ बोल ऊपर मुजब कह देणा, नवर ज्योतिषी वैमानिक में चवणो कहणो। सिद्ध भगवान्जी चवे नहीं। पांच स्थावर निरन्तर चवंति (निकले)=२३।

सेवं भंते। सेवं भंते।।

उपजण चवण रो थोकड़ो —

अहो भगवान् ! नरक गति में एक समय में कितना उपजे कितना चवे ? हे गौतम ! जघन्य १-२-३ उत्कृष्टा जाव संख्याता असंख्याता उपजे । जिस तरह नरक गति कही उसी तरह ७ नारकी, १० भवनपति, ३ विकलेन्द्रिय, ? तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय, १ सम्मूर्छिम मनुष्य, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और ८ देवलोक ये ३३ बोल कह देणा । ४ थावर समय समय असंख्याता उपजे । वनस्पति सठाण आसरी समय समय अनन्ता उपजे परठाण आसरी समय समय असंख्याता उपजे । गर्भज मनुष्य, उपरला ४ देवलोक (९ से १२ तक), नवग्रीवेक री ३ त्रिक, ५ अनुत्तर विमान, ये १६ बोल एक समय में १-२-३ जाव संख्याता उपजे। सिद्ध भगवान् एक समय में १-२-३ जाव १०८ उपजे=५३ ।

जिस तरह ये ५३ बोल उपजणे रा कया उसी तरह ५२ बोल चवण रा कह देणा नवरं इतरो विशेष, ज्योतिषी वैमानिक में चवणो कहणो । सिद्ध भगवान्‌जी चवे नहीं=५२ ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

छोटी गतागत रो थोकड़ो—

अहो भगवान् ! पहली नारकी रा नेरीया कठ सु आय कर उत्पन्न होवे और नारकी सु निकल कर कठे जावे ? हे गौतम ! पहली नारकी रा नेरीयों री ११ री आगत— पांच असन्नी तिर्यंच, ५ सन्नी तिर्यंच १ संख्याता वर्षों रा कर्मभूमि मनुष्य) । ६ री गत (गति)— (पांच सन्नी तिर्यंच १ संख्याता वर्षों रा कर्मभूमि मनुष्य) ।

दूजी नारकी री आगत ६ री—(पांच सन्नी तिर्यंच १ संख्याता वर्षों रो कर्मभूमि मनुष्य) । तीजी नारकी री आगति ५ री— (ऊपर ६ कही जिके में भुजपर टलया) । चौथी नारकी री आगत ४ री—(ऊपर

५ बोली लिखे म खेचर टल्यो)। पांचवीं नारकी री आगत ३ री—(ऊपर ४ बोली लिखे में थलचर टल्यो)। छठी नारकी री आगत २ री—(ऊपर ३ बोली लिखे में उरपर टल्यो)। दूजी नारकी सु छठी नारकी तक ६ री गत। सातवीं नारकी री आगत २ री—(जलचर और कर्मभूमि पुरुष और नपुंसक)। गत ५ सन्नी तिर्यंच री।

भवनपति वाणव्यन्तर में १६ री आगत—(पांच असन्नी तिर्यंच, पांच सन्नी तिर्यंच संख्याता वर्षों रा कर्मभूमि मनुष्य, असंख्याता वर्षों रा कर्मभूमि मनुष्य, अकर्मभूमि मनुष्य छप्पन अंतरद्वीपों रा मनुष्य, थलचर युगलियो और खेचर युगलियो)। गत ९ री (पांच सन्नी तिर्यंच, पृथ्वी पाणी, वनस्पति, संख्याता वर्षों रा कर्मभूमि मनुष्य)। ज्योतिषी में और पहला दूजे देवलोक में ९ री आगत (पांच सन्नी तिर्यंच, संख्याता वर्षों रा कर्मभूमि मनुष्य असंख्याता वर्षों रा कर्मभूमि मनुष्य, अकर्मभूमि मनुष्य, थलचर युगलियो)। गत ९ री (भवनपति मुजब)। तीजे देवलोक सु आठवें देवलोक तक ६ री आगत ६ री गत (पांच सन्नी तिर्यंच संख्याता वर्षों रा कर्मभूमि मनुष्य)। नवमें देवलोक सु बारवें देवलोक तक आगत ४ री (मिथ्यात्वी अव्रती समदृष्टि, देशव्रती समदृष्टि सर्वव्रती समदृष्टि)। गत १ री (संख्याता वर्षों रा कर्मभूमि मनुष्य)। नव ग्रैवेयक री आगत २ री स्वलिंगी समदृष्टि और स्वलिंगी मिथ्यादृष्टि (मिथ्यात्वी लिंग साधु रो समदृष्टि लिंग साधु रो)। गत १ संख्याता वर्षों रे कर्मभूमि मनुष्य री। पांच अनुत्तर विमाणां री आगत १ री (ऋद्धि पत्ता अप्रमादी अनऋद्धिपत्ता अप्रमादी)। गत १ संख्याता वर्षों रे कर्मभूमि मनुष्य री।

पृथ्वी पाणी वनस्पति री आगत ७४ री (४९ री सही—४६ तिर्यंच रा, ३ मनुष्य रा—(अपर्याप्ता पर्याप्ता सम्मूर्छिम), २५ देवता रा (१० भवनपति ८ वाणव्यन्तर, ५ ज्योतिषी और पहलो दूजो देवलोक)। गत ४९ री सही री। तेउ, वायु री आगत ४९ री सही री।

गत ४६ री तिर्यंच री (तीन मनुष्य टल्या)। तीन विकलेन्द्रिय री आगत ४९ री ज्यांरी री। गत ४९ री ज्यांरी री। तिर्यंच पंचेन्द्रिय री आगत ८७ री (४९ री ज्यांरी ३१ भेद देवता रा भवनपति सुं आठवें देवलोक तक और ७ नारकी)। गत ९० री (८७ ऊपर कह्या जिण मुजब, असंख्याता वर्षों रो कर्मभूमि मनुष्य, असंख्याता वर्षों रो अकर्मभूमि मनुष्य अन्तरद्वीपा, थलचर युगलियो, खेचर युगलियो। मनुष्य री आगत ९६ री (४९ री ज्यांरी में सुं तेउ वायु रा ८ टाल कर बाकी ४१, ४९ देवता, ६ नारकी)। गत १११ री (९६ ऊपर कह्या जिण मुजब ८ तेउ वायु रा सातवीं नरक, असंख्याता वर्षों रो कर्मभूमि मनुष्य, असंख्याता वर्षों रो अकर्मभूमि मनुष्य, अन्तरद्वीपा थलचर युगलियो, खेचर युगलियो और मोक्ष)। सेवं भंते। सेवं भंते॥

आयुष्य बन्ध रो थोकड़ो

५—पांचवों अबाधो परभव आयुष्य बंध द्वार—

अहो भगवान्! नारकी रा नेरीया कितनो भाग आयुष्य बाकी रहे जद आगे रे भव रो आयुष्य बांधे? हे गौतम! नारकी रो नेरीयो नेमा ही ६ महीनां बाकतां (आयुष्य बाकी रहतां) आयुष्य बांधे। भवनपति, वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक ये देवता रा १३ दंडक भी ६ महीना बाकी रहतां आयुष्य बांधे। पृथ्वीकाय रा दो भेद सोपक्रमी और निरुपक्रमी। निरुपक्रमी नेमा ही अपणा आयुष्य रे तीजे भाग में आयुष्य बांधे। सोपक्रमी तीजे भाग में अथवा तीजे भाग रे तीजे भाग में अथवा फिर तीजे भाग रे तीजे भाग म बाद तीजे भाग रे तीजे भाग बन्द देयो। जैसे तीजे भाग में नवमें भाग में सत्तावीसवें भाग में इक्यासीवें भाग में, २४३ वें भाग में, ७२९ वें भाग में बाद अन्तमुहूर्त बाकी रहे तब तक बन्द देणो। अपकाय तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और तीन विकलेन्द्रिय पृथ्वीकाय माफिक बन्द देणी।

तिर्यंच रा २ भेद—संख्यात वर्षों रा और असंख्यात वर्षों रा । असंख्यात वर्षों रा तिर्यंच नियमा ही ६ महीना आयुष्य बाकी रह्यां आयुष्य बांधे । संख्यात वर्षों रा तिर्यंच रा २ भेद— सोपक्रमी और निरुपक्रमी । ५ होनु पृथ्वीकाय माफिक कह देणा । मनुष्य तिर्यंच रे माफिक कह देणा=२४ ।

अहो भगवान् ! जीव आयुष्य कितना प्रकार सु बांधे ? हे गौतम ! ६ प्रकार सु बांधे—१ जाति नाम निहत्ताउय (निधत्तायु) २ गति नाम निहत्ताउय, ३ स्थिति नाम निहत्ताउय, ४ ओगाहणा नाम निहत्ताउय, ५ प्रदेश नाम निहत्ताउय और ६ अनुभाग नाम निहत्ताउय । जिस तरह समुच्चय जीव में ६ बोल कह्या उसी तरह २४ दण्डक में कह देणा=०५+६=१५ ।

अहो भगवान् ! समुच्चय जीव जाति नाम गति नाम स्थिति नाम ओगाहणा नाम प्रदेश नाम अनुभाग नाम निहत्ताउय बांधे तो कितना आकर्षों सु बांधे ? हे गौतम ! समुच्चय जीव जाति नाम गति नाम, स्थिति नाम ओगाहणा नाम, प्रदेश नाम और अनुभाग नाम निहत्ताउय बांधतो १ २-३ जाव ८ आकर्षों सु बांधे । जिस तरह समुच्चय जीव कह्यो उसी तरह २४ दण्डक कह देणा=६×८=४८×२५=१२०० ।

अहो भगवान् ! समुच्चय जीव जाति नाम सु लगा कर जाव अनुभाग नाम निहत्ताउय हुई ने १-२-३ जाव ८ आकर्षों सु आयु बांधे तो किण रा थोड़ा किण रा घणा ? हे गौतम ! समुच्चय जीव जाति नाम सु लगा कर जाव अनुभाग नाम निहत्ताउय हुई ने १-२ ३ जाव ८ आकर्षों सु आयु बांधे जिके में ८ आकर्षों सु आयु बांधण वाला सब सु थोड़ा ते थकी ७ आकर्षों सु बांधण वाला संख्यात गुणा ते थकी ६ आकर्षों सु बांधण वाला संख्यात गुणा जाव १ आकर्षों सु बांधण वाला संख्यात गुणा । जिस तरह समुच्चय जीव रो कह्यो उसी तरह २४ दण्डक कह देणा=२५×४८=१२०० । सब मिल कर २५७४ ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

अथ श्री पन्नवणाजी रे पद सातवें में श्वासोश्वास रो थोकड़ो चाले सो कहे छै—

अहो भगवान् ! नारकी रा नेरीया श्वासोश्वास लेवे आणमंति वा (आभ्यन्तर ऊंचो श्वास लेवे), पाणमंति वा (आभ्यन्तर नीचो श्वास लेवे), ऊससंति वा (बाह्य ऊंचो श्वास लेवे), निससंति वा (बाह्य नीचो श्वास लेवे) ? हे गौतम ! नारकी रा नेरीया श्वासोश्वास लेवे आणमंति वा पाणमंति वा ऊससंति वा निससंति वा निरन्तर लुहार री धमण री परे ।

असुरकुमार रा देवता श्वासोश्वास लेवे जघन्य ७ थोव (स्तोक) सु उत्कृष्ट एक पख झाझेरे सु । ९ निकाय रा देवता तथा वाणव्यन्तर देवता श्वासोश्वास लेवे जघन्य ७ थोव सु उत्कृष्ट प्रत्येक मुहूर्त सु । ज्योतिषी देवता श्वासोश्वास लेवे जघन्य उत्कृष्ट प्रत्येक मुहूर्त सु । पहला देवलोक रा देवता श्वासोश्वास लेवे जघन्य प्रत्येक मुहूर्त सु, उत्कृष्ट २ पख सु । दूजे देवलोक रा देवता श्वासोश्वास लेवे जघन्य प्रत्येक मुहूर्त झाझेरे सु उत्कृष्ट २ पख झाझेरे सु । तीजे देवलोक रा देवता श्वासोश्वास लेवे जघन्य २ पख सु, उत्कृष्ट ७ पख सु । चौथे देवलोक रा देवता श्वासोश्वास लेवे जघन्य २ पख झाझेरे सु, उत्कृष्ट ७ पख झाझेरे सु । पांचवें देवलोक रा देवता श्वासोश्वास लेवे जघन्य ७ पख सु उत्कृष्ट १० पख सु । छठे रा जघन्य १० पख सु उत्कृष्ट १४ पख सु । सातवें रा ज० १४ पख सु उ० १७ पख सु । आठवें रा ज० १७ पख सु उ० १८ पख सु । नवमें रा ज० १८ पख सु उ० १९ पख सु । दसवें रा ज० १९ पख सु उ० [illegible] पख सु । ग्यारवें रा ज० २० पख सु, उ० २१ पख सु । बारवें रा ज० २१ पख सु, उ० २२ पख सु । पहले ग्रीवेक रा ज० २२ पख सु, उ० २३ पख सु । दूजे ग्रीवेक रा ज० २३ पख सु, उ० २४ पख सु । इसी तरह नवमें ग्रीवेक रा ज० ३ पख

मु, ब० ३१ पत्त मु । चार अनुत्तर विमान रा ब० ३१ पत्त मु, ब० ३१ पत्त मु । सर्वार्थ सिद्ध रा देवता श्वासोश्वास लेवे ३३ पत्त मु ।

पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पञ्चेन्द्रिय और मनुष्य पञ्चेन्द्रिय श्वासोश्वास लेवे वेमात्रा (विषम पणा) सु, ज्यां रे श्वासोश्वास लेवण रो समय अनियत छै ।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी र पद आठवें में सन्ना रो थोकड़ो चाले सो कहे छै—

अहो भगवान् ! संज्ञा कितनी प्रकार री है ? हे गौतम ! संज्ञा १ प्रकार री—क्रोध सज्ञा मान सज्ञा, माया संज्ञा लोभ सज्ञा, आहार संज्ञा भय संज्ञा मैथुन सज्ञा, परिग्रह संज्ञा ओघ संज्ञा लोक सज्ञा । समुच्चय जीव २४ दंडक में संज्ञा पावे १ ही।

मा भा पी पंचामी मथापी भमम संखेज्ज गुणा अधिका मिर्पाति (इणां न संखेज्ज गुणा करीजे)

नारकी में मा भा पी अल्पो सब सु थोड़ा मैथुन संज्ञा रा धणी, ते थकी आहार संज्ञा रा धणी संख्यात गुणा ते थकी परिग्रह संज्ञा रा धणी संख्यात गुणा ते थकी भय सज्ञा रा धणी संख्यात गुणा ।

तिर्यंच में पे मा भी अल्पो सब सु थोड़ा परिग्रह संज्ञा रा धणी,

---

नोट—देवों में जिणरी आयु जितनी अधिक होवे वह उतना ही अधिक समय सु श्वासोश्वास लेवे । जिण देव री आयु जितने पल्योपम री होवे वह उतना ही प्रत्येक मुहूर्त सु श्वासोश्वास लेवे । जिण देव री आयु दस हजार वर्षों री होवे वह ७ थोव सु श्वासोश्वास लेवे । जिण देव री आयु जितना सागरोपम री होवे वह उतना ही पक्ष (पखवाड़ा) सु श्वासोश्वास लेवे ।

थकी मैथुन संज्ञा रा धणी संख्यात गुणा, ते थकी भय संज्ञा रा धणी संख्यात गुणा, ते थकी आहार संज्ञा रा धणी संख्यात गुणा।

मनुष्य में म भा पी कहता सब सु थोड़ा भय संज्ञा रा धणी, ते थकी आहार संज्ञा रा धणी संख्यात गुणा, ते थकी परिग्रह संज्ञा रा धणी संख्यात गुणा, ते थकी मैथुन संज्ञा रा धणी संख्यात गुणा।

देवता में अभम कहतां सब सु थोड़ा आहार संज्ञा रा धणी, ते थकी भय संज्ञा रा धणी संख्यात गुणा, ते थकी मैथुन संज्ञा रा धणी संख्यात गुणा, ते थकी परिग्रह संज्ञा रा धणी संख्यात गुणा।

आहार संज्ञा रा ४ कारण–१ कोठे रीतो (खाली) हुवां सु आहार संज्ञा उत्पन्न होवे २ क्षुधावेदनीय कर्म रे उदय सु आहार संज्ञा उत्पन्न होवे। ३ आहार री चितवणा कियां सु आहार संज्ञा उत्पन्न होवे। ४ आहार री बात सुनने सु आहार संज्ञा उत्पन्न होवे।

भय संज्ञा रा ४ कारण—१ अधीरजपणे भय संज्ञा उत्पन्न होवे। २ भय मोहनीय कर्म रे उदय सु भय संज्ञा उत्पन्न होवे। ३ भय री बात सुनने सुं भय संज्ञा उत्पन्न होवे। ४ भय री चितवणा कियां सु भय संज्ञा उत्पन्न होवे।

मैथुन संज्ञा रा ४ कारण—१ लोही मांस री बधोतरी हुवां सु मैथुन संज्ञा उत्पन्न होवे। २ वेद मोहनीय कर्म रे उदय सु मैथुन संज्ञा उत्पन्न होवे। ३ मैथुन री बात सुनने सु मैथुन संज्ञा उत्पन्न होवे। ४ मैथुन री चितवणा कियां सु मैथुन संज्ञा उत्पन्न होवे।

परिग्रह संज्ञा रा ४ कारण—१ अतिमूर्च्छा (इच्छा) हुवा सु परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होवे। २ लोभ मोहनीय कर्म रे उदय सु परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होवे। ३ परिग्रह री बात सुनने सु परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होवे। ४ परिग्रह री चितवणा कियां सु परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होवे।

नारकी सु आयोधा में भय संज्ञा घणी। तिर्यंच सु आयोधा में

आहार संज्ञा घणी। मनुष्य सु आयोड़ा में मैथुन संज्ञा घणी। देवता सु आयोड़ा म लोभ संज्ञा घणी।

नारकी सु आयोड़ा में क्रोध घणो। तिर्यंच सु आयोड़ा में माया घणी। मनुष्य सु आयोड़ा में मान घणो। देवता सु आयोड़ा मं लोभ घणो।

आहार संज्ञा वेदनीय कर्म रे उदय ७ संज्ञा मोहनीय कर्म रे उदय। ओघ संज्ञा और लोक संज्ञा ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय रे क्षयोपशम भाव में है।

सेवं भंते। सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रे पद नवमें में योनि रो थोकड़ो चाले सो कहे छे—

अहो भगवान् ! योनि कितना प्रकार री ? हे गौतम ! योनि ३ प्रकार री शीत योनि उष्ण योनि, मिश्र योनि। पहली नारकी सु तीजी नारकी में शीत योनिया नेरिया उष्ण री वेदना। चौथी नारकी में नेरीया २ प्रकार रा-शीत योनिया घणा उष्ण योनिया थोड़ा शीत योनियों ने उष्ण री वेदना उष्ण योनिया ने शीत री वेदना। पांचवी नारकी में योनि पावे २ शीत उष्ण। शीत रा थोड़ा उष्ण रा घणा। शीत ने उष्ण री वेदना उष्ण ने शीत री वेदना। छठी नारकी में उष्ण योनिया नेरीया, शीत री वेदना। सातवीं नारकी में उष्ण योनिया नेरीया महाशीत री वेदना।

१३ दंडक देवतां, तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य में योनि पावे १ मिश्र। ४ स्थावर (तेउकाय ने) तीन विकलेन्द्रिय असन्नी तिर्यंच असन्नी मनुष्य में योनि पावे तीनू ही। तेउकाय में योनि पावे १ उष्ण।

अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—

सब सु थोड़ा मिश्र योनिया ते थकी उष्ण योनिया असंख्यात

गुणा ते थकी अयोनिया अनन्त गुणा, ते थकी शीत योनिया अनन्त गुणा।

अहो भगवान् ! योनि कितना प्रकार री ? हे गौतम ! ३ प्रकार री। सचित्त, अचित्त, मिश्र। नारकी देवता १८ दण्डक में योनि पावे १ अचित्त। पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय असन्नी तिर्यंच, असन्नी मनुष्य में योनि पावे तीनु ही। सन्नी तिर्यंच, सन्नी मनुष्य में योनि पावे १ मिश्र। अल्पाबहुत्व (अल्प बहुत्व)—

सब सु थोड़ा मिश्र योनिया, ते थकी अचित्त योनिया असंख्यात गुणा ते थकी अयोनिया अनन्त गुणा, ते थकी सचित्त योनिया अनन्त गुणा।

अहो भगवान ! योनि कितना प्रकार री ? हे गौतम ! योनि ३ प्रकार री—संवुडा (ढकी) योनि, वियडा (खुली) योनि, संवुडा वियडा (कुछ ढकी कुछ खुली) योनि। नारकी देवता १४ दण्डक, और ५ स्थावर ये १६ दण्डक में योनि पावे १ संवुडा। तीन विकलेन्द्रिय, असन्नी तिर्यंच, असन्नी मनुष्य में योनि पावे १ वियडा। सन्नी तिर्यंच, सन्नी मनुष्य में योनि पावे १ संवुडा वियडा। अल्पाबोध (अल्प बहुत्व)—सब सु थोड़ा संवुडा वियडा योनिया ते थकी वियडा योनिया असंख्यात गुणा, ते थकी अयोनिया अनन्त गुणा ते थकी संवुडा योनिया अनन्त गुणा।

अहो भगवान ! योनि कितना प्रकार री ? हे गौतम ! ३ प्रकार री—कूर्मक योनि (कछुआ योनि) शंखावर्त योनि, वंशीपत्ता योनि। कूर्मक योनि—आ काछवे की पीठ जैसी ऊंची होवे ५४ उत्तम पुरुषों री माता रे होव। शंखावर्त योनि—शंख जैसी आवर्त वाली योनि, चक्रवर्ती री स्त्री रे होव जीव उपजे पण निपजे नहीं। वंशीपत्ता योनि—बांस के पत्र के समान संयुक्त मिल हुवे होय, सर्व संसारी जीवां री माता रे होवे जीव उत्पन्न हुवे और नहीं भी हुवे।

सेवं भंते ! सेवं भंते !!

सूत्र श्री पन्नवणाजी रा पद १० वां में चरम पद रा थोकड़ो चाले सो कहे छ—

अहो भगवान्! पृथ्वियाँ कितनी कही हैं? हे गौतम! पृथ्वियाँ ८ कही हैं— रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा, पंकप्रभा धूमप्रभा, तमप्रभा, तमतमाप्रभा, ईसिपब्भारा (सिद्ध शिला)

अहो भगवान्! यह रत्नप्रभा पृथ्वी किम् चरमा, अचरमा चरमाइं, अचरमाइं, चरमन्तपएसा, अचरमन्तपएसा? हे गौतम! * नो चरमा, नोअचरमा, नोचरमाइं, नोअचरमाइं नोचरमन्तपएसा नोअचरमन्तपएसा नियमा अचरमं, चरमाणि चरमन्तपएसा अचरमन्तपएसा। एवं जाव इसी तरह तमतमा तक कह देणी। इसी तरह ईसिपब्भारा पृथ्वी कह देणी। इस तरह ७ नारकी १२ देवलोक, ९ ग्रैवेयक, ५ अनुत्तर

---

* चरम री अपेक्षा अचरम है और अचरम री अपेक्षा चरम है। इण में क्रम सूं क्रम दो पदार्थ होणा चाहिए। अठे रत्नप्रभा आदि में एकान्त रूप से एक एक बोल री पृच्छा की गई है। जिण रो उत्तर "नहीं" कह्यो है और चारों ही बोलाँ री अपेक्षा सूं "है" कह्यो है। रत्नप्रभा पृथ्वी द्रव्य अपेक्षा एक है। इण वास्ते एकान्त रूप सूं अलग अलग १ बोल पावे नहीं। दूसरी अपेक्षा सू रत्नप्रभा रे मध्य भाग और अन्त भाग करके उत्तर दियो गयो है। जैसे— (१) रत्नप्रभा पृथ्वी द्रव्य अपेक्षा चरम है कारण कि मध्य भाग री अपेक्षा अन्तिम भाग चरम है। (२) रत्नप्रभा पृथ्वी अचरम है कारण कि अन्त भाग री अपेक्षा मध्य भाग अचरम है। (३) क्षेत्र री अपेक्षा चरम प्रदेश है कारण कि मध्य प्रदेश री अपेक्षा अन्त प्रदेश चरम है और (४) अचरम प्रदेश है कारण कि अन्त प्रदेश री अपेक्षा मध्य रो प्रदेश अचरम है। रत्नप्रभा रे समान ही ३६ बोलों में चार चार बोलों री पृच्छा हो सके है— ७ नारकी १२ देवलोक, ९ नवग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान १ सिद्ध शिला १ लोक और १ अलोक। = ३६×४ = १४४ भांगा हुवे।

विमान, १ ईसिपब्भारा पुढवी, १ लोक, १ अलोक, ये ३६ बोल एक रा = ३६×४ = १४४।

अहो भगवान्! इण रत्नप्रभा पृथ्वी रा अचरम, चरमाइं चरमंत पएसा अचरमंत पएसा दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कौन किण सुं अल्प, बहुत, तुल्य और विशेषाधिक है? हे गौतम! इण रत्नप्रभा रा दव्वट्ठयाए सब सुं थोड़ा एक अचरम २ ते थकी चरमाइं द्रव्य असंख्यात गुणा, ३ ते थकी अचरम और चरमाणि द्रव्य दोनुं विशेषाहिया। पएसट्ठयाए सब सुं थोड़ा चरमन्त पएस, २ ते थकी अचरमन्त पएसा असंख्यात गुणा ३ ते थकी चरमन्तपएसा अचरमन्त पएसा दोनुं विशेषाहिया। दव्वट्ठपएसट्ठयाए सब सुं थोड़ा एक अचरम द्रव्य, २ ते थकी चरमाणि द्रव्य असंख्यात गुणा ३ ते थकी अचरम चरमाणि द्रव्य दोनुं विशेषाहिया। ४ ते थकी चरमंतपएसा असंख्यात गुणा, ५ ते थकी अचरमन्तपएसा असंख्यात गुणा, ६ चरमन्तपएसा अचरमन्तपएसा दोनुं विशेषाहिया। इसी तरह शर्कराप्रभा जाव तमतमा प्रभा तक कह देणी। इसी तरह १२ देवलोक, ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान, ईसिपब्भारा पुढवी (सिद्धशिला) और लोक री अल्पाबोध (अल्पबहुत्व) कह देणी।

अहो भगवान्! अलोक रा अचरम चरमाणि चरमन्तपएसा अचरमन्तपएसा दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कौन किण सु अल्प बहुत तुल्य वा विशेषाहिया है? हे गौतम! अलोक रा दव्वट्ठयाए सब सुं थोड़ा एक अचरम २ ते थकी चरमाणि असंख्यात गुणा, ३ ते थकी अचरम चरमाणि दोनु विशेषाहिया। पएसट्ठयाए सब सु थोड़ा चरमन्त पएस २ ते थकी अचरमन्तपएसा अनन्त गुणा ३ ते थकी चरमन्तपएसा अचरमन्तपएसा दोनुं विशेषाहिया। दव्वट्ठपएसट्ठयाए सब सु थोड़ा एक अचरम द्रव्य, २ ते थकी चरमाणि द्रव्य असंख्यात गुणा ३ ते थकी अचरम चरमाणि द्रव्य दोनुं विशेषाहिया, ४ ते थकी चरमन्तपएसा असंख्यात गुणा, ५ ते थकी अचरमन्तपएसा अनन्त गुणा

११ चरम एक अवक्तव्य एक　　१२ चरम एक अवक्तव्य घणा
१३ चरम घणा अवक्तव्य एक　　१४ चरम घणा अवक्तव्य घणा
१५ अचरम एक अवक्तव्य एक　　१६ अचरम एक अवक्तव्य घणा
१७ अचरम घणा अवक्तव्य एक　　१८ अचरम घणा अवक्तव्य घणा
१९ चरम एक अचरम एक अवक्तव्य एक
२० „ एक „ एक „ घणा
२१ „ एक „ घणा „ एक
२२ „ एक „ घणा „ घणा
२३ „ घणा „ एक „ एक
२४ „ घणा „ एक „ घणा
२५ „ घणा „ घणा „ एक
२६ „ घणा „ घणा „ घणा

गाथा—परमाणुम्मि य तइओ पढमो तइओ य होंति दुपएसे।
पढमो तइओ नवमो एक्कारसमो य तिपएसे ॥ १ ॥
पढमो तइओ नवमो, दसमो एक्कारसमो य बारसमो।
भंगा चउप्पएसे, तेवीसइमो य बोद्धव्वो ॥ २ ॥
पढमो तइओ सत्तम नव, दस इक्कारस बार तेरसमो।
तेवीस चउव्वीसो, पणवीसइमो य पंचमए ॥ ३ ॥
बिचउत्थ पंच छट्ठं, पन्नरस सोलं च सत्तरट्ठारं।
बीसेक्कवीस बावीसगं च वज्जेज्ज छट्ठम्मि ॥ ४ ॥
बिचउत्थ पंच छट्ठं, पण्णरस सोलं च सत्तरट्ठारं।
बावीसइम विहूणा, सत्तपएसम्मि खंधम्मि ॥ ५ ॥
बिचउत्थ पंच छट्ठं, पण्णरस सोलं च सत्तरट्ठारं।
एए वज्जिय भंगा, सेसा सेसेसु खंधेसु ॥ ६ ॥

अर्थात्—परमाणु में चरम, अचरम ये दो भांगा नहीं कहणा कारण कि परमाणु रो देश नहीं तिण सु चरम नहीं। परमाणु रो मध्य

आठ प्रदेशी स्कंध में १, ३, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६ ये १८ भांगा लाभे तदुली स्थापना

१, ३, ७, ८, ९

१०, ११, १२, १३

१४, १५, २०

२१, २२, २३

२४, २५, २६

इस प्रकार आगे संख्यातप्रदेशी स्कंध असंख्यातप्रदेशी स्कंध तथा अनन्तप्रदेशी स्कंध आठ प्रदेशी स्कंध नी परे जाणणा।

अहो भगवान्! संठाण कितना प्रकार का है? हे गौतम! पांच प्रकार का—(१) परिमंडल (२) वट्ट (३) तंस (४) चउरंस (५) आयत।

अहो भगवान्। परिमण्डल संठाण किम संख्याता असंख्याता अनन्ता? हे गौतम! नो संख्याता नो असंख्याता अनन्ता। इसी तरह पांचों ही संठाण कह देणा।

अहो भगवान्! परिमण्डल संठाण किम संख्यात प्रदेशी असं-ख्यात प्रदेशी अनन्त प्रदेशी? हे गौतम! सिय संख्यात प्रदेशी सिय

असंख्यात प्रदेशी सिय अनन्त प्रदेशी । इसी तरह पांचों ही संठाण पर देखा ।

अहो भगवान् ! संख्यात प्रदेशी परिमंडल संठाण किम् संख्यात प्रदेशावगाही, असंख्यात प्रदेशावगाही अनन्त प्रदेशावगाही ? हे गौतम ! संख्यात प्रदेशावगाही, नो असंख्यात प्रदेशावगाही, नो अनन्त प्रदेशावगाही ।

अहो भगवान् ! संख्यात प्रदेशी परिमंडल संठाण संख्यात प्रदेश ओगाहमाणे दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए भेला किम् चरमा अचरमा चरमाई अचरमाई चरमंतपएसा अचरमंत पएसा ? हे गौतम ! नो चरमा, नो अचरमा नो चरमाई, नो अचरमाई, नो चरमंतपएसा नो अचरमंतपएसा नियमा अचरम, चरमाणि चरमंतपएसा अचरमंतपएसा ।

अहो भगवान् ! संख्यात प्रदेशी खंध संख्यात प्रदेश ओगाहमाणे दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कौन किण सु थोड़ा घणा, तुल्ला विशेषाहिया ? हे गौतम ! (१) सब सु थोड़ा संख्यात प्रदेशी खंध दव्वट्ठयाए एक अचरम द्रव्य २ ते थकी चरम द्रव्य संख्यात गुणा ३ ते थकी चरम अचरम द्रव्य दोनु भेला विशेषाहिया । प्रदेश री अल्पाबोहु—(१) सब सु थोड़ा चरम प्रदेश, २ ते थकी अचरम प्रदेश संख्यात गुणा ३ ते थकी चरम प्रदेश अचरम प्रदेश विशेषाहिया । द्रव्य प्रदेश री भेली अल्पाबोध—(१) सब सु थोड़ा एक अचरम द्रव्य २ ते थकी चरम द्रव्य संख्यात गुणा ३ ते थकी चरम अचरम द्रव्य दोनु भेला विशेषाहिया ४ ते थकी चरम प्रदेश संख्यात गुणा, ५ ते थकी अचरम प्रदेश संख्यात गुणा, ६ ते थकी चरम अचरम प्रदेश दोनु भेला विशेषाहिया ।

असंख्यात प्रदेशी परिमंडल संठाण संख्यात प्रदेश ओगाहमाणे री तीनु अल्पाबोध संख्यात प्रदेशी की पर कह देणी । असंख्यात

प्रदेशी परिमंडल संठाण असंख्यात प्रदेश ओगाहमाणे रा ठीमु ही अल्पाबोध रत्नप्रभा पुढ़वी री तरह कह देणी। अनन्त प्रदेशी परिमंडल संठाण संख्यात प्रदेश ओगाहमाणे री ठीमु ही अल्पाबोध संख्यात प्रदेशी परिमंडल संठाण री परे कह देणी मधरं संक्रमण (प्रदेश आसरी) अनन्त गुणी कहणी।

अनन्त प्रदेशी परिमंडल संठाण असंख्यात प्रदेश ओगाहमाण री ठीमु ही अल्पाबोध रत्नप्रभा पुढ़वी री पर कह देणी मधरं संक्रमण (प्रदेश आसरी) अनन्त गुणी कहणी।

जिस तरह परिमंडल संठाण री अल्पाबोध कही उसी तरह चारों ही संठाण री अल्पाबोध कह देणी। संग्रहणी गाथा—

गइ ठिइ भवे य भासा आणं पाणं चरमे य बोद्धव्वा।
आहार भाव चरमे वण्णरसे गंध फासे य ॥ १ ॥

१ गति २ स्थिति ३ भव ४ भाषा ५ श्वासोश्वास ६ आहार ७ भाव, ८ वर्ण ९ गंध १० रस ११ स्पर्श।

अहो भगवान्! जीव गति पर्याय आसरी किम् चरमे अचरम? हे गौतम! सिय चरमे सिय अचरमे।

अहो भगवान्! घणा जीव गति पर्याय आसरी किम् चरमा अचरमा? हे गौतम! चरमा वि अचरमा वि। इसी तरह २४ दण्डक कह देणा। जिस तरह गति कही उसी तरह ११ बोल कह देणा नवरं भाषा में एकेन्द्रिय रा दण्डक छोड़ देणा।

सेवं भंते! सेवं भंते ॥

॥ दशवाँ चरम पद समाप्त ॥

सूचीपत्र

श्री सेठिया जैन ग्रन्थमाला से प्रकाशित ग्रन्थ

दशवैकालिक सूत्र (संशोधित मूल पाठ तथा अन्वय सहित सरल हिन्दी शब्दार्थ) २)
आचाराङ्ग सूत्र प्रथम श्रुतस्कन्ध (अन्वयार्थ भावार्थ सहित) १॥)
उत्तराध्ययन १-४ अध्य तक १)
दशवैकालिक सूत्र (श्लोक का) ≈)
उत्तराध्ययन सूत्र (श्लोक का) ॥)
सुखविपाक सूत्र (मूल और भावार्थ) ᛁ)
नन्दी सूत्र मूल ।≈)
नमि पवज्जा ।)
महावीर स्तुति –)॥।
सामायिक सूत्र मूल –)
सामायिक सूत्र अर्थ सहित ≈)
प्रतिक्रमण मूल ≡)
प्रतिक्रमण अर्थ सहित ।)
पचीस क्रियाएं)॥
पचीस बोल का थोकड़ा ≡
तेतीस बोल का थोकड़ा –)
लघुदण्डक का थोकड़ा ≈)॥
चौदह गुणस्थान का थोकड़ा –)॥
५६२ बोल का थोकड़ा ≈)॥।
ज्ञान लब्धि का थोकड़ा)॥।
प्रकरण थोकड़ा संग्रह १)
शृङ्गार रत्नावली १।≈)
रूपी अरूपी का थोकड़ा)॥
गतागत का थोकड़ा)॥
अठाणू बोल का बासठिया –)।
पन्नवणा सूत्र के थोकड़ों का प्रथम भाग ॥)
मांगलिक स्तवन भाग १ ≡)॥
मांगलिक स्तवन भाग २ ≡)
गुण विलास ।॥)
गणधरवाद भाग १ –)।
गणधरवाद भाग –)।
गणधरवाद भाग ३ –)।
हिन्दी बाल शिक्षा प्राइमर २, ≡)
हिन्दी बाल शिक्षा रीडर ३, ।)
हिन्दी बाल शिक्षा छठा भाग ।≈)
नैतिक और धार्मिक शिक्षा –)॥
शिक्षा संग्रह भाग १ ।)॥
शिष्टाचार संग्रह ।)
संक्षिप्त कानून संग्रह ।≈)
धर्म बोध संग्रह ≠)
आत्महितबोध दोहावली ।)
हितशिक्षा दोहावली ≠)
ज्ञातासूत्र की १९ कथाएं ।≈)
नन्दी सूत्र की चार बुद्धि पर कथाएं ॥)
भ० महावीर के श्रावक दस ।)

जैन दर्शन १)
मेरी भावना महावीर सन्देश)।
सामायिक नित्य नियम ।=)
चन्दन सती का रास =)
विविध रत्न स्तवन संग्रह -॥
जिनयशम-चौबीसी -)॥
सोलह सती १॥
गुरुगुणमाला -)।
आनुपूर्वी -)
शीलरत्न सार संग्रह ।)
अपरिचिता (सामाजिक कहानियाँ) १)
मुक्ति के पथ पर (धार्मिक कहानियाँ) १)
सरल बोध सार संग्रह ।-)
श्रावक के बारह व्रतों की टीप (चौदह नियम सहित) -)।
जैन सिद्धान्त कौमुदी १।)
अर्धमागधी धातु रूपावली ।=)
अर्धमागधी शब्द रूपावली -)
कल्प कौमुदी दूसरा भाग ।-)
सूक्ति संग्रह ।)
उपदेश शतक =)॥

श्रीजैनसिद्धान्त बोल संग्रह
द्वितीयावृत्ति भाग १ २
२॥) २॥)
३ ४ ५ ६ ७
३॥) ३॥) ३॥) ३॥)
पूर्ति भाग ८ १)

नीति दीपक शतक ।)
दीक्षा सम्बन्धी धर्मोपकरण भी मिलते हैं—
पूज्यश्री मू० १) से ५) तक।

श्री पन्नवणा सूत्र के बाकी का दूसरा भाग और उत्तराध्ययन सूत्र तथा प्रश्नव्याकरण सूत्र क्रम से भावार्थ सहित छप रहे हैं।

श्री श्वे० सा० जैन हितकारिणी संस्था से प्रकाशित ग्रन्थ—

रूप बोध ॥)
जैनागमतत्त्वदीपिका प्र० भा० ।॥)
श्रीलालनाममाला ।)
पूज्य श्री जवाहरलाल जी म० सा० का जीवन चरित्र भाग १ ४)
" भाग २ ३)
तन्दुल वयालीय पइण्णा १।॥)
श्री जिन जन्माभिषेक १)

हमारे यहाँ श्री जवाहर किरणावलियाँ तथा जैन हितेच्छु श्रावक मण्डल रतलाम की पुस्तकें भी मिलती हैं।

पुस्तकें मिलने का पता—

श्री अगरचन्द भैरोदान सेठिया
जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर